ओ३म्

संस्कृत-भाषा-चतुर्थं पुस्तकम्

परीक्षितगढ़ (ज़िला मेरठ) निवासि
स्वामि-तुलसीराम-शर्म्म-विरचितम्
तच्च
"वेदप्रकाश" नामक-मासिकपत्र सम्पादकेन, मनुस्मृतेरनुवादकेन, सामवेदभाष्यकारेण, निर्मात्रा स्वीये मेरठ नगरस्थे "स्वामि मेशीन यन्त्रालये" मुद्रितं प्रकाशितं च

THE

SANSKRIT-PRIMER

FOURTH PART.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED
BY

P. TULSI RAM SWAMI
Author of Sama Veda Bhashya, Translator of Manu-Smriti in Hindi
AND
Editor Veda-prakasha Monthly Paper-Meerut.

Price 6 Annas.

छठी बार २५०० मूल्य ।=)

ओ३म्

भूमिका

आज इस चतुर्थ पुस्तक का छठी वार मुद्रण प्रकाशित होकर ग्राहकवर्ग के सम्मुख है। मैं आशा करता हूं कि जिस प्रकार प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पुस्तकों की पूर्व छपी ८०००० प्रतियें रुचिपूर्वक ग्राहकों ने ग्रहण कीं और मेरे श्रम को सफल किया, इसी प्रकार इस के ग्रहण द्वारा भी मेरे श्रम का साफल्य और पाठकों का उपकार होगा। इस पुस्तक का प्रथम भाग तीसरी, द्वि० भाग चौथी, तृ० भाग पांचवीं और यह चतुर्थ भाग छठी कक्षा वर्त्तमान अङ्गरेज़ी स्कूलों में दूसरी भाषा संस्कृत लेने वालों को उपयोगी है और देवनागरी स्कूल मेरठ आदि कई स्कूलों में इस का प्रचार भी है। यही कारण है कि प्रथम पुस्तक का ४६००० मुद्रण ११ वार हुवा और यह चतुर्थ भाग भी इसी प्रकार उपयोगी समझा गया। अब चारों भागों में व्याकरणसम्बन्धी विषय थोड़े २ सब आगये हैं। इस लिये इतने ही पर इसे समाप्त किया है।

तुलसीराम स्वामी

विषयानुक्रमणिका—

ओ३म्

संस्कृत-भाषा-चतुर्थं पुस्तकम्

अव्ययानि-

सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु।
वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम् ॥

अर्थ-जो शब्द-पुरुष, स्त्री, और नपुंसक इन तीनों लिङ्गों तथा प्रथमा द्वितीयादि सप्त विभक्तियों और एक, द्वि, बहु इन तीनों वचनों में (सदृशम्) एक ही रूप से रहे, उन में कुछ दूसरा विकार न हो, वह अव्यय कहाता है। सो उदाहरण सहित कुछ अव्यय नीचे लिखे जाते हैं:-

स्वर्=स्वर्ग। प्रातर्=प्रातःकाल। पुनर्=फिर। उच्चैः। नीचैः। शनैः= धीरे। ऋते=विना। युगपत्=एक साथ। आरात्=दूर, समीप। पृथक्। ह्यस्= गत दिन। श्वस्=आगामिदिन। दिवा=दिन। रात्रौ=रात्रि। सायम्=सन्ध्या, सूर्यास्तकाल। चिरम्=विलम्ब। ईषत्=किञ्चित्। तूष्णीम्=चुप। बहिस्=बाहर। समया=साथ। स्वयम्=आप। वृथा। नक्तम्=रात्रि। न (अ)=नहीं। अद्धा= साक्षात्। तिरस्=तिरछा वा छिपा। अन्तरा, अन्तरेण=विना। सहसा=शीघ्र। विना=बिन। नाना=अनेक। स्वस्ति=शुभ। स्वधा=पितृदान। अलम्=बस, काफी, फकत। दोषा=दिन। मृषा, मिथ्या, मुधा=झूंठ। पुरा=पूर्वकाल। मिथस्, मिथो=परस्पर। प्रायस्=बहुधा, अकसर। मुहुस्=बार २। साकम्, सार्धम्, समम्=साथ। नमस्=नमस्कार। धिक्=धिक्कार। अधुना, इदानीम्=अब ॥

स्वर् से लेकर इदानीम् पर्यन्त अव्ययों के क्रम से उदाहरण लिखते हैं:- स्मरण रक्खो कि अव्यय-सब लिङ्ग, वचन और विभक्तियों में समान रहते हैं॥

ऋषयः स्वर्गताः। पपौ प्रातर्दिनः। पुनरागमिष्यामि। उच्चैः पठ। नीचैर्न पश्यति। शनैरभ्यासोभवति। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। युगपत् सर्वे आगताः। आराद्वनं वर्त्तते। पृथक् २ गङ्गा यमुना च नद्यौ गच्छतः। ह्यो वीर आगतः। श्वोगन्ताऽस्मि (कल जाऊंगा)। दिवा जागर्त्ति लोकः। रात्रौ स्वपिति च। प्रायः सायं सन्ध्योपासनं कुरु। चिरं न कर्त्तव्यम्। ईषल्लवणमस्ति। तूष्णीं तिष्ठ। ग्रामो बहिर्गतः। चन्द्रः पुष्पेण समया चलितः। स्वामी स्वयं

दूषयति । वृथा वादो न कार्यः । नक्तं जागरणं न शोभनम् । (नञ्=न)-आवयोर्नाऽस्ति भेदः । सूर्योऽह्ना प्रकाशते । तिरोगच्छति । तिरोभूतः । व्याकरणमन्तराऽन्धः । पादमन्तरेण कथं गच्छति सर्पः । सहसा पठति वेदम् । नेत्रं विना काणः । विष्णुमित्रेण नाना शास्त्राणि पठितानि । राज्ञे स्वस्ति । पितृभ्यः स्वधा । अलं महीपाल ! तव श्रमेण । दोषा व्यापारः प्रवर्त्तते । मृषा वदति । मिथ्या हठः । मुधा कथितम् । पुरा रामो राजा बभूव । मिथो युध्यन्ते श्वानः । वर्षासु प्रायो मेघो वर्षति । मुहुर्बालकः खादति । साकं, सार्धं, समं वा गुरुणाऽऽगच्छति छात्रः । गुरवे नमः । पाषण्डिनं धिक् । अद्य पञ्चमं पुस्तकं लिखामः । अधुनाऽव्ययानि पठामः । इदानीं स्वयं पठ ॥

निम्नलिखित " च " आदि अव्यय निपात भी कहाते हैं:-

च=और, भी । वा=अथवा, या । ह=प्रसिद्ध । अह=सत्कार, अहा । एव=ही, निश्चय । एवम्=ऐसे । नूनम्=निश्चय । शश्वत्=सदा । भूयस्=फिर भी । चेत्=यदि । यत्र । कच्चित्=क्या (प्रश्न) । नह=नहीं करना । हन्त=दुःख । नकिर्=उपमार्थ । यावत्=जब तक । तावत्=तब तक । स्वाहा=देवनिमित्त दान । तथा हि=ऐसे ही । खलु=निश्चय । किल=सुनते हैं कि । अथ=अब से । स्म=पूर्व समय में ॥

"प्र" आदि २२ अव्यय, उपसर्ग भी कहाते हैं । ये प्रायः क्रिया के पूर्व आते हैं और क्रिया में मिलकर ही अर्थ भी होता है ॥

प्र । परा । अप । सम् । अनु । अव । नि । निस् । निर् । दुस् । दुर् । वि । अधि । सु । उत् । परि । प्रति । अभि । अति । अपि । उप । आङ् ॥

यथाकथाच=जैसे कैसे । है, हे=सम्बोधन । भोस्=सम्बोधन । जिन के अन्त में तस् हो । जैसे-सर्वतः=सब से । उभयतः=दोनों ओर से इत्यादि ॥

तथा जिन के अन्त में शस् हो । जैसे-बहुशः=बहुतसा । प्रायशः=बहुत करके । इत्यादि ॥

जिन के अन्त में त्वा, वत् हों जैसे कृत्वा, भुक्त्वा, ब्राह्मणवत्, क्षत्रियवत् इत्यादि भी अव्यय कहलाते हैं ॥

अब क्रम से "च" आदि के उदाहरण लिखते हैं । यथा-त्वमहं च गच्छावः । अहं च पठामि । माता पिता वा पुत्रं रक्षति । वृद्धेभ्यो ह श्रूयते=वृद्धों से प्रसिद्ध सुना जाता है । अह माणवको भुङ्क्ते=अहा ! बालक खाता है । अहमेव पठामि । एवं पठ । नूनं शरदृतुः, काशाः प्रफुल्लाः । शश्वद्वदति कुशिक्षितः । भूयः पठति । शान्तिश्चेन्मृतेन किम् । यत्र धर्मस्तत्र जयः । कच्चिज्जीवति ते माता । नह पठामि । हन्त बालो भक्षितो व्याघ्रेण । सर्पो नकिर्गच्छति । यावन्न दापयति,

तावन्न गमिष्यामि । अग्नये स्वाहा । तथा हि स पठति । द्विजेशः खलु धनी । पुरा किल दशरथोराजा बभूव । अद्य चतुर्थं पुस्तकं पठामः । वसति स्म रावणोलङ्कायाम् ॥

" प्र " आदि २२ उपसर्गों के उदाहरण कुछ धातुरूप लिख कर पश्चात् लिखेंगे । क्योंकि वे धातु के प्रथम आते हैं ॥

यथाकथाच सञ्चितं धनम् । हे वरानने । हे जगदीश्वर । भो विष्णुमित्र । सर्वतोग्रामं जनाः सन्ति । उभयतोराजानौ युध्येते । बहुशः प्रमाणानि सन्ति । प्रायशोरोगिणोम्रियन्ते । भुक्त्वा पठिष्यामि । पाठं कृत्वा लिखामि । ब्राह्मणवत् पठन्ति वैश्याः । क्षत्रियवत् युध्यन्ति भटाः ॥

ये सङ्केतमात्र अव्यय तथा उन के उदाहरण लिखे हैं । यथार्थ में एक२ अव्यय के अनेक अर्थ होते हैं जो प्रकरणानुसार पढ़ने पढ़ाने वालों को ज्ञात हो जाते हैं । उक्तञ्च—

धातवश्चोपसर्गाश्च निपाताश्चेति ते त्रय: ।
अनेकार्था हि विज्ञेया: पाठस्तेषां निदर्शनम् ॥

अर्थात् धातु, उपसर्ग, निपात; इन तीनों के अनेक अर्थ हैं परन्तु जो कुछ इन के अर्थ पुस्तकों में लिखे हैं वे निदर्शनमात्र हैं ॥

अथ कुछ धातुओं के रूप लिखेंगे ।

१-भू, स्था, गम, पठ आदि धातु कहाते हैं । धातुओं के गण दश हैं । यथा-भ्वादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्वादि, तुदादि, रुधादि, तनादि, क्र्यादि और चुरादि ॥

२-इन में से भ्वादिगण के धातुरूप प्रथम लिखेंगे ॥

३-धातु में जो १८० विभक्तियां लगती हैं वे तिङ् कहाती हैं अतएव इस धातुप्रकरण को तिङन्त प्रकरण कहते हैं ॥

४-धातु के कालभेद से दश प्रकार के रूप होते हैं । उन दश के नाम ये हैं । यथा प्रथम (लट्) यह वर्त्तमान काल में होता है । द्वितीय (लिङ्) और तृतीय (लोट्) ये दोनों विधि आदि अर्थों में होते हैं । चतुर्थ (लङ्) यह समीप के भूतकाल में होता है, इसे ' अनद्यतनभूत ' कहते हैं । पञ्चम (लिट्) प्राचीनभूतकाल में होता है, इसे "परोक्षभूत" कहते हैं । षष्ठ (आशीर्लिङ्) यह आशीर्वाद का सूचक होता है । सप्तम (लुट्) यह आगे दिन से भवि-

भूतकाल में होता है । अष्टम (लृट्) यह सामान्य भविष्यत् में होता है । नवम (लृङ्) यह हेतुहेतुमद्भाव (शर्त) के भूत वा भविष्यत्काल में होता है । जैसे सुवृष्टि होती वा होगी तो सुभिक्ष होता वा होगा इत्यादि । दशम (लुङ्) यह सामान्यभूतकाल में होता है ॥

५-इन १० लकारों में तीन " पुरुष " होते हैं जिस क्रिया का वाच्य अस्मद् (मैं) हो वह "उत्तम" पुरुष जानो । जिस का वाच्य युष्मद् (तू) हो वह मध्यम पुरुष जानो । जिस का युष्मद् और अस्मद् से भिन्न अन्य कोई वाच्य समझा जावे वह " प्रथम " पुरुष होता है ॥

६-सुबन्त के समान तिङन्त में भी एकवचन, द्विवचन और बहुवचन के तीन २ रूप होते हैं । इस प्रकार तीनों पुरुष तीनों वचन से मिलकर ९ रूप हुवे । फिर एक एक (लट्) आदि १० लकारों के रूप मिलकर ९० होते हैं । फिर ९० परस्मैपद और ९० आत्मनेपद मिलकर उपर्युक्त १८० रूप एक २ धातु के होंगे । परन्तु कोई धातु केवल परस्मैपद में ही रहता है, कोई केवल आत्मनेपद में ही रहता है । उन के केवल ९०। ९० ही रूप होंगे परन्तु जो उभयपदी धातु हैं उन के १८० रूप होंगे ॥

अब नीचे लिखे क्रम से " भू " आदि धातुओं के रूप लिखते हैं यथा—

१—"भू" (धातु)="होना" के लट् लकार वर्त्तमानकाल के रूप—

प्रथमपुरुष -एकव०—भवति=है । द्वि०-भवतः-२* हैं । बहुव०-भवन्ति=३* हैं । मध्यम पु०-भवसि=तू है । भवथः=तुम २ हो । भवथ=तुम ३ हो । उत्तम पु०-भवामि=मैं हूं । भवावः=हम २ हैं । भवामः=हम ३ हैं ॥

२—लिङ् लकार विधि आदि अर्थों में जैसे:—

प्रथमपु०-भवेत्=१ होवे । भवेताम्=२ होवें । भवेयुः=३ होवें ॥
मध्यमपु०-भवेः=तू होवे । भवेतम्=तुम २ होवो । भवेत=तुम ३ होवो ॥
उत्तमपु०-भवेयम्=मैं होऊं । भवेव=हम दोनों होवें । भवेम=हम ३ होवें ॥

३—विधि आदि अर्थों में (लोट्)

प्रथमपु०—भवतु, भवतात्=१ होवे । भवताम्=२ होवें । भवन्तु=३ होवें ॥
मध्यमपु०-भव, भवतात्=तू होवे । भवतम्=तुम २ होवो । भवत=तुम ३ होवो ॥
उत्तमपु०-भवानि=मैं होऊं । भवाव=हम २ होवें । भवाम=हम ३ होवें ॥

* २ अङ्क से द्विवचन और ३ से बहुवचन पुस्तक भर में समझना चाहिये ॥

४–अनद्यतन भूतकाल में (लङ्)

प्रथमपु०–अभवत्=हुवा है । अभवताम्=२ हुवे हैं । अभवन्=३ हुवे हैं ॥
मध्यमपु०–अभवः=तू हुवा है । अभवतम्=२ हुवे हो । अभवत=३ हुवे हो ।
उत्तमपु०–अभवम्=मैं हुवा हूं । अभवाव=२ हम हुवे हैं । अभवाम=३ हम हुवे हैं ॥

५–परोक्ष भूतकाल में (लिट्)

प्रथमपु० बभूव=हुवा था । बभूवतुः=२ हुवे थे । बभूवुः=३ हुवे थे ॥
मध्यमपु० बभूविथ=तू हुवा था । बभूवथुः=२ तुम हुवे थे । बभूव=३ तुम हुवे थे ॥
उत्तमपु०–बभूव=मैं हुवा था । बभूविव=२ हम हुवे थे । बभूविम=३ हम हुवे थे ॥

६–आशीर्वाद में (आशीर्लिङ्)

इस का अर्थ भाषा में दूसरे (लिङ्) के तुल्य बोला जाता है । यथा– " स पुत्रवान् भूयात् "=वह पुत्र वाला होवे । अहं पण्डितो भूयासम्=मैं पण्डित होऊं । इत्यादि ॥ रूप–

प्रथमपु० भूयात् । भूयास्ताम् । भूयासुः ॥ मध्यमपु० भूयाः । भूयास्तम् । भूयास्त ॥ उत्तमपु०–भूयासम् । भूयास्व । भूयास्म ॥

७–आगामिदिन (कल्ह) आदि अर्थ में भविष्यत् (लुट्)

इस का अर्थ भाषा में यथा–देवदत्तः राजा भविता=देवदत्त कल्ह आदि को राजा होगा । अहं धनी भवितास्मि=मैं कल्ह आदि को धनी होऊंगा इत्यादि ॥
प्रथमपु०–भविता । भवितारौ । भवितारः ॥ मध्यमपु०–भवितासि । भवितास्थः । भवितास्थ ॥ उत्तम पु०–भवितास्मि । भवितास्वः । भवितास्मः ॥

८–सामान्य भविष्यत् काल में (लृट्)

प्रथमपु० –भविष्यति । भविष्यतः । भविष्यन्ति ॥ मध्यमपु०–भविष्यसि । भविष्यथः । भविष्यथ ॥ उत्तमपु०–भविष्यामि । भविष्यावः । भविष्यामः ॥

उदाहरण, जैसे कुरुदेवापी राजानौ भविष्यतः=कुरु और देवापि २ राजा होंगे । व्यापारेण त्वं धनाढ्यो भविष्यसि=व्यापार से तू धनाढ्य होगा । इत्यादि ॥

९–हेतुहेतुमद्भाव (शर्त) में (लृङ्)

प्रथमपु०–अभविष्यत् । अभविष्यताम् । अभविष्यन् ॥ मध्यमपु०–अभविष्यः । अभविष्यतम् । अभविष्यत ॥ उत्तमपु०–अभविष्यम् । अभविष्याव । अभविष्याम ॥

उदाहरण जैसे यदि उद्यममकरिष्यन् तर्हि लक्ष्मीवन्तोऽभविष्यन्=यदि उद्यम करेंगे तो लक्ष्मीवान् होंगे । इत्यादि ॥

१०–सामान्य भूतकाल में (लुङ्)

प्रथमपु०–अभूत् । अभूताम् । । अभूवन् ॥ मध्यमपु०–अभूः । अभूतम् । अभूत ॥ उत्तम पु०–अभूवम् । अभूव । अभूम ।

उदाहरण, जैसे–आवां दुःखितौ अभूव=हम २ दुःखी हुये । सरः शुष्कमभूत्=तालाब खुश्क हुवा । इत्यादि ॥

२–" चित् " धातु–चेतना, चीन्हना, स्मरण

१–लट् (वर्तमानकाल में)

प्रथमपु०–चेतति । चेततः । चेतन्ति ॥ मध्यमपु०–चेतसि । चेतथः । चेतथ ॥ उत्तमपु०–चेतामि । चेतावः । चेतामः ॥ त्वं मातरं चेतसि=तू माता को चीन्हता है ॥ इत्यादि ॥

२–लिङ् (विधि आदि अर्थ में)

चेतेत् । चेतेताम् । चेतेयुः ॥ चेतेः । चेतेतम् । चेतेत ॥ चेतेयम् । चेतेव । चेतेम ॥ साक्षिणश्चेतेयुः=साक्षी लोग चीन्हैं ॥ इत्यादि ॥

३–लोट् (ऊपर के ही अर्थ में)

चेततु, चेततात् । चेतताम् । चेतन्तु ॥ चेत, चेततात् । चेततम् । चेतत ॥ चेतानि । चेताव । चेताम ॥ भवान् ब्रह्म चेततु ॥

४–लङ् (अनद्यतन भूत में)

अचेतत् । अचेतताम् । अचेतन् ॥ अचेतः । अचेततम् । अचेतत ॥ अचेतम् । अचेताव । अचेताम ॥ त्वं ह्यः पाठमचेतः=तूने कल्ह पाठ याद किया ॥

५–लिट् (परोक्षभूत में)

चिचेत । चिचिततुः । चिचितुः ॥ चिचेतिथ । चिचितथुः । चिचित ॥ चिचेत । चिचितिव । चिचितिम॥सीता रामं चिचेत=सीता ने रामको स्मरा था॥

६–आशीर्लिङ्

चित्यात् । चित्यास्ताम् । चित्यासुः ॥ चित्याः । चित्यास्तम् । चित्यास्त ॥ चित्यासम् । चित्यास्व । चित्यास्म ॥ सर्वे सुखं चित्यासुः=सब सुख को चेत करें ॥

७–लुट् (अनद्यतन भविष्यत् में)

चेतिता । चेतितारौ । चेतितारः ॥ चेतितासि । चेतितास्थः । चेतितास्थ ॥

चेतितास्मि । चेतितास्वः । चेतितास्मः ॥ अद्य पठितं श्वः चेतितास्मि= आज पढ़े को कल याद करूंगा ॥ इत्यादि ॥

८–लृट् (भविष्यत् में)

चेतिष्यति । चेतिष्यतः । चेतिष्यन्ति ॥ चेतिष्यसि । चेतिष्यथः । चेतिष्यथ ॥ चेतिष्यामि । चेतिष्यावः । चेतिष्यामः ॥ वृद्धत्वे चेतिष्यसि=तू बुढ़ापे में याद करेगा ॥

९–लृङ् (हेतुहेतुमद्भाव में)

अचेतिष्यत् । अचेतिष्यताम् । अचेतिष्यन् ॥ अचेतिष्यः । अचेतिष्यतम् । अचेतिष्यत ॥ अचेतिष्यम् । अचेतिष्याव । अचेतिष्याम ॥ यदि पाठम् अचेतिष्याम तर्हि पण्डिता अभविष्याम=यदि हम पाठ याद करेंगे तो पण्डित होवेंगे ॥

१०–लुङ् (सामान्यभूत में)

अचेतीत् । अचेतिष्टाम् । अचेतिषुः ॥ अचेतीः । अचेतिष्टम् । अचेतिष्ट ॥ अचेतिषम् । अचेतिष्व । अचेतिष्म ॥

यूयं मातरं पितरं च नाऽचेतिष्ट=तुमने माता और पिता को नहीं याद किया ॥

३–" शुच् " धातु=शोक, शोच करना

१ लट्

शोचति । शोचतः । शोचन्ति ॥ शोचसि । शोचथः । शोचथ ॥ शोचामि । शोचावः । शोचामः ॥ वृद्धा मृतं पुत्रं शोचति=बुढ़िया मृत पुत्र को शोचती है ॥

२ लिङ्

शोचेत् । शोचेताम् । शोचेयुः ॥ शोचेः । शोचेतम् । शोचेत ॥ शोचेयम् । शोचेव । शोचेम ॥ गतं किं शोचेयम्=गये को क्या शोक करूं ?

३ लोट्

शोचतु, शोचतात् । शोचताम् । शोचन्तु ॥ शोच, शोचतात् । शोचतम् । शोचत ॥ शोचानि । शोचाव । शोचाम ॥

४ लङ्

अशोचत् । अशोचताम् । अशोचन् ॥ अशोचः । अशोचतम् । अशोचत ॥ अशोचम् । अशोचाव । अशोचाम ॥ स भ्रातरमशोचत्=उस ने भाई को शोक किया है । इत्यादि ॥

५ लिट्

शुशोच । शुशुचतुः । शुशुचुः ॥ शुशोचिथ । शुशुचथुः । शुशुच ॥ शुशोच । शुशुचिव । शुशुचिम ॥ शुशोच सीता लङ्कायाम् । इत्यादि ॥

६ आशीर्लिङ्

शुच्यात् । शुच्यास्ताम् । शुच्यासुः ॥ शुच्याः । शुच्यास्तम् । शुच्यास्त ॥ शुच्यासम् । शुच्यास्व । शुच्यास्म ॥ गतं न शुच्याः=तू गये को न शोचे ॥

७ लुट्

शोचिता । शोचितारौ । शोचितारः ॥ शोचितासि । शोचितास्थः । शोचितास्थ ॥ शोचितास्मि । शोचितास्वः । शोचितास्मः ॥ येऽद्य न पठन्ति ते श्वः शोचितारः । इत्यादि ॥

८ लृट्

शोचिष्यति । शोचिष्यतः । शोचिष्यन्ति ॥ शोचिष्यसि । शोचिष्यथः । शोचिष्यथ ॥ शोचिष्यामि । शोचिष्यावः । शोचिष्यामः ॥ ये बाल्ये न पठन्ति ते स्थविरत्वे शोचिष्यन्ति । यौवने धनं नाऽर्जयसि वार्द्धके शोचिष्यसि । इत्यादि ॥

९ लृङ्

अशोचिष्यत् । अशोचिष्यताम् । अशोचिष्यन् ॥ अशोचिष्यः । अशोचिष्यतम् । अशोचिष्यत ॥ अशोचिष्यम् । अशोचिष्याव । अशोचिष्याम ॥ धनमलप्स्येथाम् तर्हि नाऽशोचिष्यतम् । इत्यादि ॥

१० लुङ्

अशोचीत् । अशोचिष्टाम् । अशोचिषुः ॥ अशोचीः । अशोचिष्टम् । अशोचिष्ट ॥ अशोचिषम् । अशोचिष्व । अशोचिष्म ॥ धीरो गतं नाशोचीत्=धीर ने गये का नहीं शोच किया । इत्यादि ॥

४–" गद " धातु=बोलना, कहना

१ लट्–	२ लिङ्–	३ लोट्–	४ लङ्
प्रथमपुरुष	प्रथमपु०	प्रथमपु०	प्रथमपु०
१ गदति	गदेत्	गदतु, गदतात्	अगदत्
२ गदतः	गदेताम्	गदताम्	अगदताम्
३ गदन्ति	गदेयुः	गदन्तु	अगदन्

१ लट्–	२ लिङ्–	३ लोट्–	४ लङ्–
मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०
१ गदसि	गदेः	गद, गदतात्	अगदः
२ गदथः	गदेतम्	गदतम्	अगदतम्
३ गदथ	गदेत	गदत	अगदत
उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०
१ गदामि	गदेयम्	गदानि	अगदम्
२ गदावः	गदेव	गदाव	अगदाव
३ गदामः	गदेम	गदाम	अगदाम
५ लिट्	६ आशीर्लिङ्	७ लुट्	८ लृट्
प्रथमपु०	प्रथमपु०	प्रथमपु०	प्रथमपु०
१ जगाद	गद्यात्	गदिता	गदिष्यति
२ जगदतुः	गद्यास्ताम्	गदितारौ	गदिष्यतः
३ जगदुः	गद्यासुः	गदितारः	गदिष्यन्ति
मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०	मध्यमपु०
१ जगदिथ	गद्याः	गदितासि	गदिष्यसि
२ जगदथुः	गद्यास्तम्	गदितास्थः	गदिष्यथः
३ जगद	गद्यास्त	गदितास्थ	गदिष्यथ
उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०	उत्तमपु०
१ जगाद, जगद	गद्यासम्	गदितास्मि	गदिष्यामि
२ जगदिव	गद्यास्व	गदितास्वः	गदिष्यावः
३ जगदिम	गद्यास्म	गदितास्मः	गदिष्यामः

९ लृङ्	१० लुङ्–सामान्यभूतकाल
प्रथमपु०	
१–अगदिष्यत्	अगादीत्, अगदीत्
२ अगदिष्यताम्	अगादिष्टाम्, अगदिष्टाम्
३ अगदिष्यन्	अगादिषुः, अगदिषुः

उदाहरण–

शम्भुः सत्यं गदति। साक्षी तथ्यं गदेत्, गदतु। तौ मिथ्याऽगदताम्। जगाद वाक्यं देवर्षिः। वाक्यानि गद्यासुः पुत्राश्च।

मध्यमपु०		
१अगदिष्यः	अगादीः, अगदीः	सः पुराणं वेदं वा गदिता-
२अगादिष्यतम्	अगादिष्टम्, अगदिष्टम्	स्मि । निगदिष्यति सर्व-
३अगदिष्यत	अगादिष्ट, अगदिष्ट	मात्मनः । असत्यमगदि-
उत्तम पु०		ष्यामाऽविश्वस्ता अभवि-
१ अगदिष्यम्	अगादिष्यम्, अगदिष्यम्	ष्याम । अगदिष्ट यथेप्सितं
२ अगदिष्याव	अगादिष्व, अगदिष्व	तथा=तुम ने कहा जैसा
३ अगदिष्याम	अगादिष्म, अगदिष्म	चाहा वैसा ॥

संस्कृत बनावो

युधिष्ठिर सत्यवादी हुवा था। आत्मकृत को मत शोच करो। सत्य कहो। असत्य कहोगे तो अविश्वस्त होवोगे। सत्य कहूंगा तो विश्वासयोग्य होऊंगा। तुमने परमेश्वर को स्मरण किया इस से आस्तिक हुये। तुम पिता के साथ जाओ। पाठशाला में गुरु बैठे हैं, तुम भी वहां जाओ और पाठ पढ़ो। यदि तुम्हारा अपराध हो तो गुरु के समक्ष में सत्य कहो। अन्य सब विद्यार्थियों के साथ तुम भी पढ़ो। आज नहीं याद करोगे तो कल्ह कैसे कहोगे। अतः अपने पाठ को सम्यक् याद करो॥

५ "अर्च" धातु=पूजना, सत्कार करना

१ लट्	२ लिङ्	३ लोट्	४ लङ्
प्रथमपु०			
१ अर्चति	अर्चेत्	अर्चतु, अर्चतात्	आर्चत्
२ अर्चतः	अर्चेताम्	अर्चताम्	आर्चताम्
३ अर्चन्ति	अर्चेयुः	अर्चन्तु	आर्चन्
मध्यमपु०			
१ अर्चसि	अर्चेः	अर्च, अर्चतात्	आर्चः
२ अर्चथः	अर्चेतम्	अर्चतम्	आर्चतम्
३ अर्चथ	अर्चेत	अर्चत	आर्चत
उत्तमपु०			
१ अर्चामि	अर्चेयम्	अर्चानि	आर्चम्
२ अर्चावः	अर्चेव	अर्चाव	आर्चाव
३ अर्चामः	अर्चेम	अर्चाम	आर्चाम

५ लिट्	६ आशीर्लिङ्	७ लुट्	८ लृट्
१ आनर्च	अर्च्यात्	अर्चिता	अर्चिष्यति
२ आनर्चतुः	अर्च्यास्ताम्	अर्चितारौ	अर्चिष्यतः
३ आनर्चुः	अर्च्यासुः	अर्चितारः	अर्चिष्यन्ति
१ आनर्चिथ	अर्च्याः	अर्चितासि	अर्चिष्यसि
२ आनर्चथुः	अर्च्यास्तम्	अर्चितास्थः	अर्चिष्यथः
३ आनर्च	अर्च्यास्त	अर्चितास्थ	अर्चिष्यथ
१ आनर्च	अर्च्यासम्	अर्चितास्मि	अर्चिष्यामि
२ आनर्चिव	अर्च्यास्व	अर्चितास्वः	अर्चिष्यावः
३ आनर्चिम	अर्च्यास्म	अर्चितास्मः	अर्चिष्यामः

९ लृङ्	१० लुङ्
१ आर्चिष्यत्	आर्चीत्
२ आर्चिष्यताम्	आर्चिष्टाम्
३ आर्चिष्यन्	आर्चिषुः
१ आर्चिष्यः	आर्चीः
२ आर्चिष्यतम्	आर्चिष्टम्
३ आर्चिष्यत	आर्चिष्ट
१ आर्चिष्यम्	आर्चिषम्
२ आर्चिष्याव	आर्चिष्व
३ आर्चिष्याम	आर्चिष्म

उदाहरण—

गुरुमर्चन्ति छात्राः । ईशमर्चन्तु । मातरमानर्च पितरं च श्रवणः । सुखमर्चन्ति वैश्याः । प्रतिष्ठार्थी राजानमर्चेस्त्वम् । पितरमर्च्य तु भवान् । अहं तु पुस्तकमेवाऽऽर्चिषम् । मान्यानानर्च । अर्चन्त्यर्कमर्किणः । माऽऽर्चीः केवलं सुखम्, किन्तु धियमप्यर्चतात् ॥

६—"गुपू" (गुप्) धातु=रक्षण, रक्षा करना

१ लट्	२—लिङ्	३—लोट्
१ गोपायति	गोपायेत्	गोपायतु, गोपायतात्
२ गोपायतः	गोपायेताम्	गोपायताम्
३ गोपायन्ति	गोपायेयुः	गोपायन्तु
१ गोपायसि	गोपायेः	गोपाय, गोपायतात्
२ गोपायथः	गोपायेतम्	गोपायतम्
३ गोपायथ	गोपायेत	गोपायत
१ गोपायामि	गोपायेयम्	गोपायानि

२ गोपायावः	गोपायेव	गोपायाव
३ गोपायामः	गोपायेम	गोपायाम

४ लङ्

१ अगोपायत्
२ अगोपायताम्
३ अगोपायन्
१ अगोपायः
२ अगोपायतम्
३ अगोपायत
१ अगोपायम्
२ अगोपायाव
३ अगोपायाम

५ लिट्

१ गोपायाञ्चकार, गोपायामास, गोपायाम्बभूव, जुगोप । २ गोपायाञ्चक्रतुः, गोपायामासतुः, गोपायाम्बभूवतुः, जुगुपतुः । ३ गोपायाञ्चक्रुः, गोपायामासुः, गोपायाम्बभूवुः, जुगुपुः । मध्यमपु० १ गोपायाञ्चकर्थ, गोपायामासिथ, गोपायाम्बभूविथ, जुगोपिथ, जुगोप्थ । २ गोपायाञ्चक्रथुः, गोपायामासथुः, गोपायाम्बभूवथुः, जुगुपथुः । ३-गोपायाञ्चक्र, गोपायामास, गोपायाम्बभूव, जुगुप । उत्तमपु० १-गोपायाञ्चकार, गोपायाञ्चकर, गोपायामास, गोपायाम्बभूव, जुगोप । २-गोपायाञ्चकृव, गोपायामासिव, गोपायाम्बभूविव, जुगुपिव, जुगुप्व । ३-गोपायाञ्चकृम, गोपायामासिम, गोपायाम्बभूविम, जुगुपिम, जुगुप्म ॥

६-आशीर्लिङ् प्रथमपु १-गोपाय्यात्, गुप्यात् । २-गोपाय्यास्ताम्, गुप्यास्ताम् । ३-गोपाय्यासुः, गुप्यासुः । मध्यमपु० १-गोपाय्याः, गुप्याः । २-गोपाय्यास्तम् । गुप्यास्तम् । ३-गोपाय्यास्त, गुप्यास्त, । उत्तमपु० १-गोपाय्यासम्, गुप्यासम् । २-गोपाय्यास्व, गुप्यास्व । ३-गोपाय्यास्म, गुप्यास्म ॥

७-लुट् १-गोपायिता, गोपिता, गोप्ता । २-गोपायितारौ, गोपितारौ, गोप्तारौ । ३-गोपायितारः, गोपितारः, गोप्तारः । मध्यमपु० १-गोपायितासि, गोपितासि, गोप्तासि । २-गोपायितास्थः, गोपितास्थः, गोप्तास्थः । ३ गोपायितास्थ, गोपितास्थ, गोप्तास्थ । उत्तमपु० १-गोपायितास्मि, गोपितास्मि, गोप्तास्मि । २-गोपायितास्वः, गोपितास्वः, गोप्तास्वः । ३-गोपायितास्मः, गोपितास्मः, गोप्तास्मः ॥

८-लृट्-प्रथम पु०१-गोपायिष्यति, गोपिष्यति, गोप्स्यति । २-गोपायिष्यतः, गोपिष्यतः, गोप्स्यतः । ३-गोपायिष्यन्ति, गोपिष्यन्ति, गोप्स्यन्ति । मध्यम पु० १-गोपायिष्यसि, गोपिष्यसि, गोप्स्यसि । २-गोपायिष्यथः, गोपिष्यथः, गोप्स्यथः । ३-गोपायिष्यथ, गोपिष्यथ, गोप्स्यथ । उत्तम पु० १-गोपा-

यिष्यामि, गोपिष्यामि, गोप्स्यामि । २—गोपायिष्यावः, गोपिष्यावः, गोप्स्यावः । ३—गोपायिष्यामः, गोपिष्यामः, गोप्स्यामः ॥

९ लृङ् प्रथम०१ अगोपायिष्यत, अगोपिष्यत्, अगोप्स्यत् । २—अगोपायिष्यताम्, अगोपिष्यताम्, अगोप्स्यताम् । ३—अगोपायिष्यन्, अगोपिष्यन्, अगोप्स्यन् । मध्यमपु० १ अगोपायिष्यः, अगोपिष्यः, अगोप्स्यः । २—अगोपायिष्यतम्, अगोपिष्यतम्, अगोप्स्यतम् । ३—अगोपायिष्यत, अगोपिष्यत, अगोप्स्यत । उत्तमपु०—१ अगोपायिष्यम्, अगोपिष्यम्, अगोप्स्यम्, । २—अगोपायिष्याव, अगोपिष्याव, अगोप्स्याव । ३—अगोपायिष्याम, अगोपिष्याम, अगोप्स्याम ॥

१० लुङ्—प्रथमपु०१—अगोपायीत, अगोपीत, अगौप्सीत् । २—अगोपायिष्टाम्, अगोपिष्टाम्, अगौप्ताम् । ३—अगोपायिषुः, अगोपिषुः, अगौप्सुः । मध्यम पु०१—अगोपायीः, अगोपीः, अगौप्सीः । अगोपायिष्टम्, अगोपिष्टम्, अगौप्तम् । ३ अगोपायिष्ट, अगोपिष्ट, अगौप्त । उत्तम पु० १—अगोपायिषम्, अगोपिषम्, अगौप्सम् । २—अगोपायिष्व, अगोपिष्व, अगौप्स्व । ३—अगोपायिष्म, अगोपिष्म, अगौप्स्म ॥

इस प्रकार "गुप्" धातु के रूप लिट् लिङ् लट् लृट् लृङ् और लुङ् इन छः लकारों में एक २ प्रयोग तीन २ प्रकार के और कभी इस से अधिक प्रकार के भी होते हैं ॥

७—"क्षि" धातु=क्षय=नाश और निवास=रहना

१—लट्—क्षयति । क्षयतः । क्षयन्ति ॥ क्षयसि । क्षयथः । क्षयथ ॥ इत्यादि ॥
२—लिङ्—१ क्षयेत् २—क्षयेताम् ३ क्षयेयुः ॥ १ क्षयेः ३ क्षयेतम् इत्यादि ।
३ लोट्—१ क्षयतु, क्षयतात् २ क्षयताम् ३ क्षयन्तु इत्यादि ॥
४—लङ् १ अक्षयत् २ अक्षयताम् ३ अक्षयन् । १ अक्षयः । २ अक्षयतम् इत्यादि ॥
५—लिट् १ चिक्षाय २ चिक्षियतुः ३ चिक्षियुः । चिक्षयिथ, चिक्षेथ ।
२—चिक्षियथुः । ३ चिक्षिय । १ चिक्षाय, चिक्षय । २ चिक्षियिव । ३ चिक्षियिम ।
६—आशीर्लिङ्—१ क्षीयात् । २ क्षीयास्ताम् । ३ क्षीयासुः । १ क्षीयाः । इत्यादि ॥
७ लुट् क्षेता, क्षेतारौ, क्षेतारः । क्षेतासि, क्षेतास्थः इत्यादि ॥
८—लृट्—१ क्षेष्यति २ क्षेष्यतः ३ क्षेष्यन्ति । १ क्षेष्यसि २ क्षेष्यथः इत्यादि ।
९ लृङ्—१ अक्षेष्यत् २ अक्षेष्यताम् । ३ अक्षेष्यन् इत्यादि ॥
१०—लुङ्—१ अक्षैषीत् । २ अक्षैष्टाम् । ३ अक्षैषुः । १ अक्षैषीः । २ अक्षैष्टम् । ३ अक्षैष्ट ।
१ अक्षैषम् । २ अक्षैष्व । ३ अक्षैष्म ॥

अश्वतुदं श्यामक्षयपचन्द्रः । राजा प्रजाः गोपायेत् । युधिष्ठिरो धर्मेण प्रजाः गोपायाञ्चकार । जीयात् पापिनः सकपत् । गोपाय कुटुम्बम् । आत्मानं गोपायतु सर्वथा । युवामत्र गेहे क्षयतम् (रहो) । स्तेन आत्मानमेवाऽगोपायत् । विनाय रावणः सकुटुम्बो रामद्रोहेण । सुभगे पुत्रं गोपाय्याः गुप्याः वा । योऽद्य पापी स ध्रुवः क्षेता कालान्तरे जन्मान्तरे वा क्षेष्यति । धर्मात्मनो गोपायिष्यति, गोप्स्यति वा जगदीशः । यदि वीर्यमगोपायिष्यो बलवानऽभविष्यस्त्वम् । अक्षैषुर्धनानि बहुव्ययशीलस्य । इत्यादि ॥

८ "तप" धातु=सन्ताप, गरमी करना, गरम होना, दुखना

१ लट्—तपति इत्यादि । २ लिङ् तपेत् इत्यादि । ३ लोट्—तपतु, तपतात् इत्यादि । ४ लङ्—अतपत् इत्यादि । ५ लिट् १ तताप २ तेपतुः ३ तेपुः । १ तेपिथ, ततप्थ २ तेपथुः ३ तेप । १ तताप, ततप । २ तेपिव । ३ तेपिम ॥ ६ आशीर्लिङ्—१ तप्यात् २ तप्यास्तामित्यादि । ७ लुट्—तप्ता, तप्तारौ इत्यादि ॥ ८ लृट्—तप्स्यति इत्यादि । ९ लृङ् अतप्स्यत् इत्यादि । १० लुङ्—१ अताप्सीत् २ अताप्ताम् ३ अताप्सुः । १ अताप्सीः २ अताप्तम् ३ अताप्त । १ अताप्सम् २ अताप्स्व ३ अताप्स्म ॥

९—इसी प्रकार "पत्लृ" धातु (पतन, गिरना) के रूप हैं परन्तु ५ लिट् मध्यम पुरुष एकवचन में, "पेतिथ" एक ही रूप है । लुट् में पतिता, पतितारौ इत्यादि । ८ लृट्—पतिष्यति इत्यादि । ९ लृङ् अपतिष्यत् इत्यादि । १०—लुङ् अपप्तत्—अपप्तताम् इत्यादि जानो ॥

धावतोऽश्वादपप्तत् । पपात मूर्छया भूमौ । पापिनः पतिष्यन्ति नरके । सूर्यस्तपति इत्यादि ॥

१०—"क्रमु" धातु=पादविक्षेप, चलना, पांव रखना ।

१ लट्—१ क्राम्यति, क्रामति २ क्राम्यतः, क्रामतः ३ क्राम्यन्ति, क्रामन्ति इत्यादि दो २ रूप ॥ २—लिङ्—१ क्राम्येत्, क्रामेत् २ क्राम्येताम् क्रामेताम् इत्यादि दो दो॥३—लोट्—१ क्राम्यतु, क्राम्यतात्, क्रामतु, क्रामतात्, क्राम्यताम्, क्रामताम् ३ क्राम्यन्तु, क्रामन्तु इत्यादि दो दो॥४-लङ्-१ अक्राम्यत्, अक्रामत् २ अक्राम्यताम्, अक्रामतामित्यादि दो दो॥५ लिट् १ चक्राम २ चक्रमतुः ३ चक्रमुः । १ चक्रमिथ २ चक्रमथुः ३ चक्रम । १ चक्राम, चक्रम २ चक्रमिव ३ चक्रमिम ॥ आशीर्लिङ्-क्रम्यात् इत्यादि ॥ लुट्-क्रमिता इत्यादि ॥ ८-लृट्-क्रमिष्यति ॥ लृङ्-अक्रमिष्यत् ॥ लुङ्-अक्रमीत् इत्यादि ॥

११–" पा " धातु=पीना

लट् पिबति । पिबतः । पिबन्ति इत्यादि ॥ लिङ्–पिबेत् । पिबेताम् । पिबेयुः इत्यादि ॥ लोट् पिबतु, पिबतात् । पिबताम् । पिबन्तु इत्यादि ॥ लङ्–अपिबत् । अपिबताम् इत्यादि ॥ लिट् १ पपौ । २ पपतुः । ३ पपुः ॥ १ पपिथ, पपाथ । २ पपथुः । ३ पप । १ पपौ । २ पपिव । ३ पपिम ॥ आशीर्लिङ्–१ पेयात् । २ पेयास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्–पाता, पातारौ इत्यादि ॥ लृट् पास्यति । पास्यतः इत्यादि ॥ लृङ्–अपास्यत् इत्यादि ॥ लुङ्–अपात् । अपाताम् । अपुः ॥ अपाः । अपातम् । अपात ॥ अपाम् । अपाव । अपाम ॥

सूर्यस्तपति । वृक्षात्पत्राणि पतन्ति । अश्वः सुष्ठु क्राम्यति । दुग्धं पिबन्ति बालाः । दिवा भानुरतापसीत् । पतन्ति पापिनः नरके घोरे ॥

१२–" ग्लै धातु=हर्षक्षय, वीर्यक्षय, सुस्ती

लट् ग्लायति । ग्लायतः । लिङ् ग्लायेत् । ग्लायेताम् । लोट्–ग्लायतु, ग्लायतात् । ग्लायताम् । ग्लायन्तु । लङ् अग्लायत् । लिट्–जग्लौ । जग्लतुः । जग्लुः ॥ जग्लिथ, जग्लाथ । जग्लथुः । जग्ल ॥ जग्लौ । जग्लिव । जग्लिम ॥ आशीर्लिङ्–ग्लेयात् । ग्लेयास्ताम् । अथवा–ग्लायात् । ग्लायास्ताम् । इत्यादि ॥ लुट्–ग्लाता । ग्लातारौ ॥ लृट् ग्लास्यति ॥ लृङ् अग्लास्यत् । अग्लास्यताम् ॥ लुङ्–अग्लासीत् । अग्लासिष्टाम् । अग्लासिषुः ॥ अग्लासीः । अग्लासिष्टम् । अग्लासिष्ट ॥ अग्लासिषम् । अग्लासिष्व । अग्लासिष्म ॥ चन्द्रमाः ग्लायति ॥

१३–" श्रु " धातु=सुनना, श्रवण

लट्–शृणोति । शृणुतः । शृण्वन्ति । शृणोषि । शृणुथः । शृणुथ ॥ शृणोमि । शृणुवः, शृण्वः । शृणुमः, शृण्मः ॥ लिङ् शृणुयात् । शृणुयाताम् । शृणुयुः ॥ शृणुयाः इत्यादि ॥ लोट्–शृणोतु, शृणुतात् । शृणुताम् । शृण्वन्तु ॥ शृणु, शृणुतात् । शृणुतम् । शृणुत ॥ शृणवानि । शृणवाव । शृणवाम ॥ लङ्–अशृणोत् । अशृणुताम् । अशृण्वन् ॥ अशृणोः । अशृणुतम् । अशृणुत ॥ अशृणवम् अशृण्व, अशृणुव । अशृण्म, अशृणुम ॥ लिट्–शुश्राव । शुश्रुवतुः । शुश्रुवुः ॥ शुश्रोथ । शुश्रुवथुः । शुश्रुव ॥ शुश्राव, शुश्रव । शुश्रुव । शुश्रुम ॥ आशीर्लिङ्–श्रूयात् । श्रूयास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्–श्रोता । श्रोतारौ इत्यादि ॥ लृट्–श्रोष्यति । श्रोष्यतः ॥ लृङ्–अश्रोष्यत् ॥ लुङ् अश्रौषीत् । अश्रौष्टाम् । अश्रौषुः । अश्रौषीः । अश्रौष्टम् । अश्रौष्ट ॥ अश्रौषम् ॥ अश्रौष्व । अश्रौष्म ॥

बधिरो न शृणोति। धनिनो न शृण्वन्ति प्रायशः। अहं सिंहनादमशृणवम्। राजा वः प्रार्थनां श्रोष्यति, न चेत् ईश्वरः श्रोष्यति खलु। शृणु मम वचनं शुभम्। सावधानाः सर्वे शृण्वन्तु। शास्त्रं शृणुतात् त्वम्, गानं मा शृणु, गाने मनो विषयि भवति। अश्लीलवादिनां वचनानि साधुर्न शृणुयात्। शुश्राव रामः शास्त्राणि। इत्यादि॥

१४–"गम्लृ" धातु=चलना, जानना, प्राप्त होना

लट्–गच्छति। लिङ्–गच्छेत्। लोट्–गच्छतु। लङ्–अगच्छत्। लिट्–जगाम। जग्मतुः। जग्मुः॥ जगमिथ, जगन्थ। जग्मथुः। जग्म॥ जगाम, जगम। जग्मिव। जग्मिम॥ आशीर्लिङ्–गम्यात्। गम्यास्ताम् इत्यादि॥ लुट्–गन्ता। गन्तारौ। लृट्–गमिष्यति। लृङ्–अगमिष्यत्। लुङ्–अगमत्। अगमताम्। अगमन्॥ अगमः। अगमतम्। अगमत॥ अगमम्। अगमाव। अगमाम॥

बालो गच्छति। पण्डिताः शास्त्रस्यार्थं गच्छन्ति। वनं जगाम रामः॥

१५–"घ्रा" धातु=सूंघना

लट्–जिघ्रति। लिङ्–जिघ्रेत्। लोट्–जिघ्रतु। लङ्–अजिघ्रत्। लिट्–जघ्रौ। जघ्रतुः। जघ्रुः॥ जघ्रिथ, जघ्राथ। जघ्रथुः। जघ्र॥ जघ्रौ। जघ्रिव। जघ्रिम॥ आशीर्लिङ्–घ्रायात्, घ्रेयात्। लुट्–घ्राता। लृट्–घ्रास्यति। लृङ्–अघ्रास्यत्। लुङ्–अघ्रासीत्। अघ्रासिष्टाम्। अघ्रासिषुः॥ अघ्रासीः। अघ्रासिष्टम्। अघ्रासिष्ट॥ अघ्रासिषम्। अघ्रासिष्व। अघ्रासिष्म॥

१६–"ध्मा" धातु=धोंकना, फूंक मारना

लट्–धमति * लिङ्–धमेत् * लोट्–धमतु * लङ्–अधमत् * लिट्–दध्मौ। दध्मतुः। दध्मुः॥ दध्मिथ, दध्माथ। दध्मथुः। दध्म॥ दध्मौ। दध्मिव। दध्मिम * आशीर्लिङ्–ध्मायात्, ध्मेयात् * लुट्–ध्माता * लृट्–ध्मास्यति * लृङ्–अध्मास्यत * लुङ्–अध्मासीत्। अध्मासिष्टाम्। अध्मासिषुः॥ अध्मासीः॥ अध्मासिष्टम्। अध्मासिष्ट॥ अध्मासिषम्। अध्मासिष्व। अध्मासिष्म *

उपवनं गत्वा तत्र पुष्पाणि घ्रास्यामः। भ्रमरो जिघ्रति। स्वर्णकारो मुखेनाग्निं धमति। शङ्खं दध्मौ प्रतापवान्॥

१७ "स्था=तिष्ठ" धातु=ठहरना, रहना, बैठना

लट्-तिष्ठति * लिङ्-तिष्ठेत् * लोट्-तिष्ठतु, तिष्ठतात् * लङ्-अतिष्ठत् * लिट्-तस्थौ। तस्थतुः। तस्थुः॥ तस्थिथ। तस्थाथ। तस्थथुः। तस्थ॥ तस्थौ। तस्थिव। तस्थिम * आशीर्लिङ् स्थेयात् * लुट् स्थाता * लृट्-स्थास्यति * लृङ्-अस्थास्यत् * लुङ्-अस्थात्। अस्थाताम्। आगे "पा" धातु के समान रूप हैं॥

१८ "दाण्=यच्छ" धातु=दान, देना

लट्-यच्छति * लिङ्-यच्छेत् * लोट्-यच्छतु * लङ्-अयच्छत् * लिट्-ददौ। ददतुः। ददुः * आशीर्लिङ्-देयात् * लुट्-दाता * लृट्-दास्यति * लृङ्-अदास्यत् * लुङ्-अदात्। आगे "पा" धातु के सदृश हैं॥

१९ "दृशिर्=पश्य" धातु=देखना

लट्-पश्यति * लिङ् पश्येत् * लोट्-पश्यतु * लङ्-अपश्यत् * लिट्-ददर्श। ददृशतुः। ददृशुः॥ ददर्शिथ, दद्रष्ठ। ददृशथुः। ददृश॥ ददर्श। ददृशिव। ददृशिम * आशीर्लिङ् दृश्यात् * लुट्-द्रष्टा * लृट्-द्रक्ष्यति * लृङ्-अद्रक्ष्यत् * लुङ्-अदर्शत्। अदर्शताम्। वा अद्राक्षीत्। अद्राष्टाम्। अद्राक्षुः॥ अद्राक्षीः। अद्राष्टम्। अद्राष्ट॥ अद्राक्षम्। अद्राक्ष्व। अद्राक्ष्म॥ वृक्षस्तिष्ठति। धनं यच्छति। कुमारं ददर्श। गृहे तस्थौ। पुस्तकं ददौ। रूपं पश्यति इत्यादि॥

२० "ग्लै" "म्लै" धातु=हर्षक्षय, ग्लानि

लट्-म्लायति * लिङ् म्लायेत् * लोट्-म्लायतु, म्लायतात् * लङ्-अम्लायत् * लिट्-मम्लौ। मम्लतुः। मम्लुः॥ मम्लिथ, मम्लाथ। मम्लथुः। मम्ल॥ मम्लौ। मम्लिव। मम्लिम * आशीर्लिङ्-म्लायात्, म्लेयात्। म्लायास्ताम्, म्लेयास्ताम्। म्लायासुः, म्लेयासुः। इत्यादि दो २ रूप होंगे * लुट्-म्लाता * लृट्-म्लास्यति * लृङ्-अम्लास्यत् * लुङ्-अम्लासीत्। अम्लासिष्टाम्। अम्लासिषुः। इत्यादि "ध्मा" धातु के तुल्य जानो॥ ऐसे ही ग्ल॥

२१ "ह्वृ" धातु=कौटिल्य, कुटिलपना, वक्रता

लट् ह्वरति * लिङ्-ह्वरेत् * लोट् ह्वरतु, ह्वरतात् * लङ्-अह्वरत् * लिट्-जह्वार। जह्वरतुः। जह्वरुः॥ जह्वर्थ। जह्वरथुः। जह्वर॥ जह्वार, जह्वर। जह्वरिव। जह्वरिम * आशीर्लिङ्-ह्वर्यात् * लुट्-ह्वर्ता * लृट्-ह्वरिष्यति * लृङ्-

अहूरिष्यत् * लुङ् अहूार्षीत् । अहूार्ष्टाम् । अहूार्षुः ॥ अहूार्षीः । अहूार्ष्टम् । अहूार्ष्ट ॥ अहूार्षम् । अहूार्ष्व । अहूार्ष्म ॥

मांसं रुधिरं च दृष्ट्वा मनो ग्लायति । धूर्तो ह्वरति । वचनं शृणुयात् । धर्मेण गच्छेत् । मित्रेण न ह्वरन्तु । पापे ग्लायन्तु । सत्यं शृण्वन्तु । मार्गेण ग्रामं गच्छति । पापिना ग्लायेत् । केचिदपि न ह्वरेत् । वेदं शृणुयात् । धर्मेण गच्छन्तु । मनोऽग्लायत् । वञ्चकोऽह्वरत् । वचोऽशृणोत् । गृहमगच्छत् । श्रमणः किल्बिषे जग्लुः । शौनकादयः शुश्रुवुः । रावणो जह्वार । मृगयां जगाम । मनस्ते न ग्लायात्, ग्लेयात् । धर्मं न ह्वर्यात् । मङ्गलानि श्रूयाः । सद्गतिं गम्याः । अद्य पापी श्वो ग्लाता । श्रोतास्मि पाठम् । गन्तास्मो ग्रामम् । मलिने ग्लास्यामि । धूर्ते ह्वरिष्यामि । व्याख्यानं श्रोष्यामि । आश्रमादाश्रमं गमिष्यामि । कालोऽगमत् । उपदेशमश्रौषम् ॥

—०:*:०—

अथात्मनेपदप्रकरणम्

यहां से आत्मनेपदी धातुओं के रूप लिखते हैं–

२२ " एध " धातु=वृद्धि, बढ़ना

लट्–एधते । एधेते । एधन्ते ॥ एधसे । एधेथे । एधध्वे ॥ एधे । एधावहे । एधामहे * लिङ्–एधेत । एधेयाताम् । एधेरन् ॥ एधेथाः । एधेयाथाम् । एधेध्वम् ॥ एधेय । एधेवहि । एधेमहि * लोट्–एधताम् । एधेताम् । एधन्ताम् ॥ एधस्व । एधेथाम् । एधध्वम् ॥ एधै । एधावहै । एधामहै * लङ्–ऐधत । ऐधेताम् । ऐधन्त ॥ ऐधथाः । ऐधेथाम् । ऐधध्वम् ॥ ऐधे । ऐधावहि । ऐधामहि * लिट्–एधाञ्चक्रे । एधाञ्चक्राते । एधाञ्चक्रिरे ॥ एधाञ्चकृषे । एधाञ्चक्राथे । एधाञ्चकृढ्वे ॥ एधाञ्चक्रे । एधाञ्चकृवहे । एधाञ्चकृमहे * एधामास इत्यादि । एधाम्बभूव इत्यादि * आशीर्लिङ्–एधिषीष्ट ॥ एधिषीयास्ताम् । एधिषीरन् ॥ एधिषीष्ठाः । एधिषीयास्थाम् । एधिषीध्वम् ॥ एधिषीय । एधिषीवहि । एधिषीमहि * लुट्–एधिता । एधितारौ । एधितारः ॥ एधितासे । एधितासाथे । एधिताध्वे ॥ एधिताहे । एधितास्वहे । एधितास्महे * लृट्–एधिष्यते । एधिष्येते । एधिष्यन्ते ॥ एधिष्यसे । एधिष्येथे । एधिष्यध्वे ॥ एधिष्ये । एधिष्यावहे । एधिष्यामहे * लृङ्–ऐधिष्यत । ऐधिष्येताम् । ऐधिष्यन्त ॥ ऐधिष्यथाः । ऐधिष्येथाम् । ऐधिष्यध्वम् ॥ ऐधिष्ये । ऐधिष्यावहि । ऐधिष्यामहि *

लुङ्—ऐधिष्ट । ऐधिषाताम् । ऐधिषत ॥ ऐधिष्ठाः । ऐधिषाथाम् । ऐधिढ्वम्, ऐधिध्वम् ॥ ऐधिषि । ऐधिष्वहि । ऐधिष्महि ॥

२३—" कम " धातु=कान्ति, इच्छा

लट्-कामयते । कामयेते । कामयन्ते ॥ कामयसे । कामयेथे । कामयध्वे ॥ कामये । कामयावहे । कामयामहे * लिङ्--कामयेत । कामयेयाताम् । कामयेरन् ॥ कामयेथाः । कामयेयाथाम् । कामयेध्वम् ॥ कामयेय । कामयेवहि । कामयेमहि * लोट्-कामयताम् । कामयेताम् । कामयन्ताम् ॥ कामयस्व । कामयेथाम् । कामयध्वम् ॥ कामयै । कामयावहै । कामयामहै * लिट्-चकमे । चकमाते । चकमिरे ॥ चकमिषे । चकमाथे । चकमिध्वे ॥ चकमे । चकमिवहे । चकमिमहे ॥ वा—कामयाञ्चक्रे । कामयाञ्चक्राते इत्यादि ॥ कामयामास । कामयामासतुः इत्यादि ॥ कामयाम्बभूव । कामयाम्बभूवतुः इत्यादि एध धातु के समान जानो * आशीर्लिङ् कामयिषीष्ट । कामयिषीयास्ताम् । कामयिषीरन् ॥ कामयिषीष्ठाः । कामयिषीयास्थाम् । कामयिषीध्वम्, कामयिषीढ्वम् ॥ कामयिषीय । कामयिषीवहि । कामयिषीमहि ॥ अथवा-कमिषीष्ट इत्यादि * लुट्—कामयिता । कामयितारौ । कामयितारः ॥ कामयितासे । कामयितासाथे । कामयिताध्वे । कामयिताहे । कामयितास्वहे । कामयितास्महे ॥ वा—कमिता । कमितारौ । कमितारः ॥ कमितासे । कमितासाथे । कमिताध्वे ॥ कमिताहे । कमितास्वहे । कमितास्महे * लृट्—कामयिष्यते । कामयिष्येते । कामयिष्यन्ते ॥ कामयिष्यसे ॥ कामयिष्येथे । कामयिष्यध्वे ॥ कामयिष्ये । कामयिष्यावहे । कामयिष्यामहे ॥ वा—कमिष्यते ॥ कमिष्येते । कमिष्यन्ते ॥ कमिष्यसे । कमिष्येथे । कमिष्यध्वे ॥ कमिष्ये । कमिष्यावहे । कमिष्यामहे * लृङ् अकामयिष्यत । अकामयिष्येताम् । अकामयिष्यन्त ॥ अकामयिष्यथाः । अकामयिष्येथाम् । अकामयिष्यध्वम् ॥ अकामयिष्ये । अकामयिष्यावहि । अकामयिष्यामहि । अथवा-अकमिष्यत । अकमिष्येताम् । अकमिष्यन्त ॥ अकमिष्यथाः । अकमिष्येथाम् । अकमिष्यध्वम् ॥ अकमिष्ये । अकमिष्यावहि । अकमिष्यामहि * लुङ्-अचीकमत । अचीकमेताम् । अचीकमन्त । अचीकमथाः । अचीकमेथाम् । अचीकमध्वम् ॥ अचीकमे । अचीकमावहि । अचीकमामहि । अथवा-अचकमत । अचकमेताम् । अचकमन्त ॥ अचकमथाः । अचकमेथाम् इत्यादि ॥

२४—" अय " धातु=गति=ज्ञान, गमन, प्राप्ति

उपसर्ग के रेफ को ल होता है अय धातु परे हो तो ॥ लट्-अयते । अयेते । अयन्ते ॥ अयसे । अयेथे अयध्वे ॥ अये । अयावहे । अयामहे * परा+अयते=पलायते । प्र+अयते=प्लायते इत्यादि * लिङ्-अयेत । अयेयाताम् । अयेरन् ॥ अयेथाः । अयेयाथाम् । अयेध्वम् ॥ अयेय । अयेवहि ॥ अयेमहि * लोट्-अयताम् । अयेताम् । अयन्ताम् ॥ अयस्व । अयेथाम् । अयध्वम् ॥ अयै । अयावहै । अयामहै * लङ्-आयत । आयेताम् । आयन्त ॥ आयथाः । आयेथाम् । आयध्वम् ॥ आये । आयावहि । आयामहि * लिट्-अयाञ्चक्रे । अयाञ्चक्राते । अयाञ्चक्रिरे ॥ अयाञ्चकृषे । अयाञ्चक्राथे । अयाञ्चकृढ्वे ॥ अयाञ्चक्रे । अयाञ्चकृवहे । अयाञ्चकृमहे । अथवा-अयामास । अयामासतुः । तथा--अयाम्बभूव । अयाम्बभूवतुः इत्यादि * आशीर्लिङ्—अयिषीष्ट । अयिषीयास्ताम् । अयिषीरन् ॥ अयिषीष्ठाः । अयिषीयास्थाम् । अयिषीढ्वम्, अयिषीध्वम् ॥ अयिषीय । अयिषीवहि । अयिषीमहि * लुट्-अयिता । अयितारौ । अयितारः ॥ अयितासे । अयितासाथे । अयिताध्वे ॥ अयिताहे । अयितास्वहे । अयितास्महे * लृट्-अयिष्यते । अयिष्येते । अयिष्यन्ते, अयिष्यसे । अयिष्येथे । अयिष्यध्वे ॥ अयिष्ये । अयिष्यावहे । अयिष्यामहे * लृङ्-आयिष्यत । आयिष्येताम् । आयिष्यन्त ॥ आयिष्यथाः । आयिष्येथाम् । आयिष्यध्वम् ॥ आयिष्ये । आयिष्यावहि । आयिष्यामहि ॥ लुङ्-आयिष्ट । आयिषाताम् । आयिषत ॥ आयिष्ठाः । आयिषाथाम् । आयिढ्वम्, आयिध्वम् ॥ आयिषि । आयिष्वहि । आयिष्महि ॥

२५-" द्युत " धातु=दीप्ति, प्रकाश

लट्-द्योतते । द्योतेते । द्योतन्ते ॥ द्योतसे । द्योतेथे । द्योतध्वे ॥ द्योते । द्योतावहे । द्योतामहे * लिङ् द्योतेत । द्योतेयाताम् । द्योतेरन् ॥ द्योतेथाः । द्योतेयाथाम् । द्योतेध्वम् ॥ द्योतेय । द्योतेवहि । द्योतेमहि * लोट्-द्योतताम् । द्योतेताम् । द्योतन्ताम् ॥ द्योतस्व । द्योतेथाम् । द्योतध्वम् ॥ द्योतै । द्योतावहै । द्योतामहै * लङ् अद्योतत । अद्योतेताम् । अद्योतन्त ॥ अद्योतथाः । अद्योतेथाम् । अद्योतध्वम् ॥ अद्योते । अद्योतावहि । अद्योतामहि * लिट्--दिद्युते । दिद्युताते । दिद्युतिरे ॥ दिद्युतिषे । दिद्युताथे । दिद्युतिध्वे ॥ दिद्युते । दिद्युतिवहे । दिद्युतिमहे * आशीर्लिङ्-द्योतिषीष्ट । द्योतिषीया-

स्याताम् । द्योतिषीरन् ॥ द्योतिषीष्ठाः । द्योतिषीयास्थाम् । द्योतिषीध्वम् ॥ द्योतिषीय । द्योतिषीवहि । द्योतिषीमहि * लुट्-द्योतिता । द्योतितारौ । द्योतितारः ॥ द्योतितासे । द्योतितासाथे । द्योतिताध्वे ॥ द्योतिताहे । द्योतितास्वहे । द्योतितास्महे * लृट्-द्योतिष्यते । द्योतिष्येते । द्योतिष्यन्ते ॥ द्योतिष्यसे । द्योतिष्येथे । द्योतिष्यध्वे ॥ द्योतिष्ये । द्योतिष्यावहे । द्योतिष्यामहे * लृङ्-अद्योतिष्यत । अद्योतिष्येताम् । अद्योतिष्यन्त ॥ अद्योतिष्यथाः । अद्योतिष्येथाम् । अद्योतिष्यध्वम् ॥ अद्योतिष्ये । अद्योतिष्यावहि । अद्योतिष्यामहि * लुङ्-अद्युतत् । अद्युतताम् । अद्युतन् ॥ अद्युतः । अद्युततम् । अद्युतत ॥ अद्युतम् । अद्युताव । अद्युताम ॥ अथवा—अद्योतिष्ट अद्योतिषाताम् । अद्योतिषत ॥ अद्योतिष्ठाः । अद्योतिषाथाम् । अद्योतिध्वम् ॥ अद्योतिषि । अद्योतिष्वहि । अद्योतिष्महि * इसी प्रकार:—

२६—"श्वित" धातु=वर्ण, रङ्गना

लट् श्वेतते * लिङ् श्वेतेत * लोट् श्वेतताम् * लङ्-अश्वेतत * लिट्-शिश्विते * आशीर्लिङ्-श्वेतिषीष्ट * लुट्-श्वेतिता * लृट्-श्वेतिष्यते * लृङ्-अश्वेतिष्यत * लुङ्-अश्वितत्, अश्वेतिष्ट इत्यादि ।

२७—(ञि) "मिद" धातु=मित्रता, मिलना ॥ २८ (ञि) ष्विद धातु=स्नेह=चिकनाना और छुड़ाना तथा मोहित करना ॥ २९ (ञि) क्ष्विद धातु भी उक्त अर्थ में ही ॥ ३० रुच धातु=प्रकाशन और प्रीति ॥ ३१ घुट धातु=घोटना ॥ ३२ शुभ धातु=शोभा ॥ ३३ क्षुभ धातु=क्षोभ, गुस्सा ॥ ३४ । ३५ नभ, तुभ धातु=हिंसा ॥ ३६ स्रंस ३७ भ्रंस धातु=रपटना ॥ ३८ ध्वंस धातु=रपटना और गिरना तथा चलना ॥ ३९—स्रम्भ धातु=भरोसा, विश्वास । इन सब के प्रयोग भी "श्वित" धातु के तुल्य जानो ॥

उदाहरणानि—यः सम्प्रति अधर्मेण एधते सः पश्चात् महद् दुःखं प्राप्स्यति। धनं कामयते जनः। उदयते निशि चन्द्रमण्डलम् । दिवि वि-द्योतते विद्युत् । रजकः श्वेतते वस्त्रम् । मेदन्ते मिथो माणवकाः । मासे ज्येष्ठे स्वेदते सर्व

गात्रम् । क्ष्वेदन्ते ललना बहून् । वसन्ते रोचते दधि । मध्याह्ने रोचते रविः । विजयां घोटते मल्लः । शुशुभे सरसीव चन्द्रमाः । शोभन्ते दिवि देवतागणाः । चुक्षुभे हृदयं तस्य । लुलुभे मृगयागतान्मृगान् । नभते वन्यपशूंश्च केसरी । स्रंसते वर्षासु पादः । गर्वेण भ्रंसते मानम् । सुखात् ध्वंसते नारी।सस्रम्भेऽह-मतस्त्वयि प्रभो। वंशस्ते पृथिवीष्ट। धर्मेण धनानि कामयध्वम् । युवतिं चमके युवा । अयेत दूरं पापात् । द्योतन्ते नक्षत्राणि आकाशे । रजको न सुखु वस्त्राणि अश्वितत् । मेदिषीष्ट जनः परस्परम् । क्ष्वेदते हृदयेन सहृदयः । कामिनीषु न मनः क्ष्वेदेत । तन्न न रोचतेऽस्मभ्यम् । जुघटेऽपूर्वमिवौषधम् । शोभिषीष्ट तव पुत्रमण्डलम् । सत्येनाऽक्षुभद्हृदयं धूर्तस्य । नभिषीष्टाऽरि-कुलानि भूमिपः । लोभिषीष्ट रिपुमण्डलं नृपः । स्रंसिता अविनयात् खलः खलु । ध्वंसिष्ये रिपुवाहिनीम् । वेदिष्वस्रम्भिष्यामहि, दुःखं नाप्स्याम ॥

४०–वृतु धातु=वर्त्तमान, होना

लट्–वर्त्तते । वर्त्तेते । वर्त्तन्ते ॥ वर्त्तसे । वर्त्तेथे । वर्त्तध्वे ॥ वर्त्ते । वर्त्तावहे। वर्त्तामहे ॥ लिङ्–वर्त्तेत । वर्त्तेयाताम् । वर्त्तेरन् ॥ वर्त्तेथाः । वर्त्तेयाथाम् । वर्त्तेध्वम्॥ वर्त्तेय वर्त्तेवहि वर्त्तेमहि ॥ लोट्–वर्त्तताम् । वर्त्तेताम् । वर्त्तन्ताम् ॥ वर्त्तस्व । वर्त्तेथाम् । वर्त्तध्वम् ॥ वर्त्तै । वर्त्तावहै । वर्त्तामहै ॥ लङ्–अवर्त्तत । अवर्त्तेताम् । अवर्त्तन्त ॥ अवर्त्तथाः । अवर्त्तेथाम् । अवर्त्तध्वम् ॥ अवर्त्ते । अवर्त्तावहि । अवर्त्तामहि ॥ लिट्–ववृते । ववृताते । ववृतिरे ॥ ववृतिषे । ववृताथे । ववृतिध्वे ॥ ववृते । ववृतिवहे । ववृतिमहे ॥ आशीर्लिङ्–वर्त्तिषीष्ट । वर्त्तिषीयास्ताम् । वर्त्तिषीरन् ॥ वर्त्तिषीष्ठाः । वर्त्तिषीयास्थाम् । वर्त्तिषीध्वम्॥ वर्त्तिषीय । वर्त्तिषीवहि । वर्त्तिषीमहि ॥ लुट्–वर्त्तिता । वर्त्तितारौ । वर्त्ति-तारः ॥ वर्त्तितासे । वर्त्तितासाथे । वर्त्तिताध्वे ॥ वर्त्तिताहे । वर्त्तितास्वहे । वर्त्तितास्महे ॥ (वृतु, वृधु, स्रृधु और स्यन्दू इन ४ धातुओं के लृट् लङ् और लुङ् में परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों रूप होते हैं । यथा लृट्–वर्त्स्यति । वर्त्स्यतः । वर्त्स्यन्ति ॥ वर्त्स्यसि । वर्त्स्यथः । वर्त्स्यथ ॥ वर्त्स्यामि । वर्त्स्यावः । वर्त्स्यामः ॥ वर्त्तिष्यते । वर्त्तिष्येते । वर्त्तिष्यन्ते ॥ वर्त्तिष्यसे । वर्त्तिष्येथे । वर्त्तिष्यध्वे ॥ वर्त्तिष्ये । वर्त्तिष्यावहे । वर्त्तिष्यामहे ॥ लृङ्–अव-र्त्स्यत् । अवर्त्स्यताम् । अवर्त्स्यन् ॥ अवर्त्स्यः । अवर्त्स्यतम् । अवर्त्स्यत ॥ अव-

ल्स्यंम् । अवत्स्यांव । अवत्स्याम * अवर्त्तिष्यत । अवर्त्तिष्येताम् । अवर्त्तिष्यन्त ॥ अवर्त्तिष्यथाः । अवर्त्तिष्येथाम् । अवर्त्तिष्यध्वम् । अवर्त्तिष्ये । अवर्त्तिष्यावहि । अवर्त्तिष्यामहि * लुङ्-अवृतत् । अवृतताम् । अवृतन् ॥ अवृतः । अवृततम् । अवृतत ॥ अवृतम् । अवृताव । अवृताम ॥ अवर्त्तिष्ट । अवर्त्तिषाताम् । अवर्त्तिषत ॥ अवर्त्तिष्ठाः । अवर्त्तिषाथाम् । अवर्त्तिध्वम् ॥ अवर्त्तिषि अवर्त्तिष्वहि । अवर्त्तिष्महि ॥

४१-वृधु=बढ़ना, वृद्धि ।

लट्-वर्धते इत्यादि * लिङ्-वर्धेत इत्यादि * लोट्-वर्धताम् इत्यादि * लङ्-अवर्धत इत्यादि * लिट्-ववृधे इत्यादि * आशीर्लिङ्-वर्धिषीष्ट इत्यादि * लुट्-वर्धिता इत्यादि * लृट्-वर्त्स्यति, वर्धिष्यते इत्यादि * लृङ्-अवर्त्स्यत् । अवर्धिष्यत इत्यादि * लुङ्-अवृधत् अवर्धिष्ट इत्यादि । इसी प्रकारः-

४२-शृधु=शब्दनिन्दा और ४३-स्यन्दू=टपकना, चूना

यथा-शृधु-लट्-शर्धते * लिङ्-शर्धेत * लोट्-शर्धताम् * लङ्-अशर्धत * लिट्-शशृधे * आशीर्लिङ्-शर्धिषीष्ट * लुट् शर्धिता * लृट् शर्त्स्यति । शर्धिष्यते * लृङ्=अशर्त्स्यत् । अशर्धिष्यत * लुङ्-अशृधत् । अशर्धिष्ट * स्यन्दू-लट्-स्यन्दते * लिङ्-स्यन्देत * लोट्-स्यन्दताम् * लङ्-अस्यन्दत * लिट्-सस्यन्दे * आशीर्लिङ्-स्यन्दिषीष्ट, स्यन्त्सीष्ट । लुट्-स्यन्दिता, स्यन्ता * लृट्-स्यन्त्स्यति । स्यन्दिष्यते, स्यन्त्स्यते । लृङ्-अस्यन्त्स्यत् । अस्यन्दिष्यत, अस्यन्त्स्यत * लुङ्-अस्यदत् । अस्यन्दिष्ट, अस्यन्त * दिनं वर्त्तते । वक्तारं शर्धन्ते श्रोतारः । दातारो वर्धन्ताम् । स्यन्दते घृतं खण्डितपात्रात् इत्यादि ॥

४४-दद-दान, देना ।

ददते । ददेत । ददताम् । अददत । ददद । ददिषीष्ट । ददिता । ददिष्यते । अददिष्यत । अददिष्ट ॥

४५-त्रपूष्=लज्जा, शर्म ।

त्रपते । त्रपेत । त्रपताम् । अत्रपत । त्रेपे, त्रेपाते, त्रेपिरे इत्यादि । त्रपिषीष्ट वा-त्रप्सीष्ट । त्रपिता वा-त्रप्ता । त्रपिष्यते वा-त्रप्स्यते । अत्रपिष्यत वा-अत्रप्स्यत । अत्रपिष्ट वा-अत्रप्त * ददद दानसतीव यज्ञकृत् । न त्रपन्ते निर्लज्जाः कुलटाः इत्यादि ॥ इत्यात्मनेपदिनः ॥

अथोभयपदप्रकरणम्

४६—श्रिञ्=सेवा, सहारा लेना, अनुकूलता

लट्-श्रयति । श्रयते * लिङ्-श्रयेत् । श्रयेत * लोट् । श्रयतु । श्रयताम् * लङ्-अश्रयत् । अश्रयत * लिट्-शिश्राय । शिश्रियतुः इत्यादि । शिश्रिये शिश्रियाते इत्यादि * आशीर्लिङ्-श्रीयात् । श्रयिषीष्ट * लुट्-श्रयिता । श्रयिता * लृट्-श्रयिष्यति । श्रयिष्यते * लृङ्-अश्रयिष्यत् । अश्रयिष्यत * लुङ्-अशिश्रियत् ॥ अशिश्रियत । अशिश्रियेताम् । अशिश्रियन्त इत्यादि ॥

४७—भृञ्=पालन, भरण, पोषण ।

भरति । भरते * भरेत् । भरेत * भरतु । भरताम् * अभरत् । अभरत * बभार । बभ्रतुः । बभ्रुः ॥ बभर्थ । बभ्रथुः । बभ्र ॥ बभार, बभर । बभृव । बभृम ॥ बभ्रे । बभ्राते । बभ्रिरे ॥ बभृषे । बभ्राथे । बभृढ्वे ॥ बभ्रे । बभृवहे । बभृमहे * भ्रियात् । भृषीष्ट * भर्त्ता । भर्त्ता * भरिष्यति । भरिष्यते * अभरिष्यत् । अभरिष्यत * अभार्षीत् । अभार्ष्टाम् । अभार्षुः ॥ अभार्षीः । अभार्ष्टम् । अभार्ष्ट ॥ अभार्षम् । अभार्ष्व । अभार्ष्म * अभृत । अभृषाताम् । अभृषत । अभृथाः ॥ अभृषाथाम् । अभृढ्वम् ॥ अभृषि । अभृष्वहि । अभृष्महि ॥

४८—हृञ्=हरण, चुराना

लिट्=जहार । जह्रतुः । जह्रुः इत्यादि ॥ जह्रे । जह्राते । जह्रिरे ॥ इत्यादि ॥ शेषरूप " भृञ् " के समान हैं ॥

४९—धृञ्=धारण, रखना ।

लिट्=दधार । दध्रतुः इत्यादि ॥ दध्रे दध्राते इत्यादि ॥ शेषरूप भृञ् के तुल्य हैं ॥

५०—णीञ्=पहुंचाना, लेजाना, प्रापण

नयति । नयते * नयेत् । नयेत * नयतु । नयताम् * अनयत् । अनयत * निनाय । निन्यतुः इत्यादि ॥ निन्ये । निन्याते इत्यादि * नीयात् । नेषीष्ट * नेता । नेता * नेष्यति । नेष्यते * अनेष्यत् । अनेष्यत * अनैषीत् । अनैष्टाम् । अनैषुः ॥ अनैषीः । अनैष्टम् । अनैष्ट ॥ अनैषम् । अनैष्व । अनैष्म * अनेष्ट । अनेषाताम् । अनेषत ॥ अनेष्ठाः । अनेषाथाम् । अनेढ्वम् ॥ अनेषि । अनेष्वहि । अनेष्महि ॥

५१-(डु) पच (ष्)=पकाना, पाक

पचति । पचते * पचेत् । पचेत * पचतु । पचताम् * अपचत् । अपचत * पपाच। पेचतुः इत्यादि॥पेचे । पेचाते इत्यादि*पच्यात् । पक्षीष्ट*पक्ता॥ पक्ता * पक्ष्यति । पक्ष्यते * अपक्ष्यत् । अपक्ष्यत * अपाक्षीत् । अपक्त ॥

५२-भज=भजन, सेवन

लिट्-बभाज भेजतुः भेजुः इत्यादि ॥ भेजे । भेजाते इत्यादि *शेष रूप पच के तुल्य जानो ॥

५३-यज=देवपूजा, सङ्गति करना और दान

लिट्-इयाज । ईजतुः । ईजुः ॥ इयजिथ, इयष्ठ । ईजथुः । ईज ॥ इयाज, इयज । ईजिव । ईजिम ॥ ईजे । ईजाते इत्यादि * आशीर्लिङ्-इज्यात् । यक्षीष्ट * लुट्-यष्टा * लुङ्-अयष्ट * शेष पच के तुल्य हैं ॥

५४-वह=पहुंचाना, ढोना, वहना

लिट्-उवाह । ऊहतुः । ऊहुः ॥ उवहिथ, उवोढ । ऊहथुः । ऊह ॥ उवाह, उवह । ऊहिव । ऊहिम * ऊहे । ऊहाते इत्यादि * आशीर्लिङ्-उह्यात् । वक्षीष्ट ॥ लुट्-वोढा । वोढारौ इत्यादि *लुङ्-अवाक्षीत् । अवोढाम् । अवाक्षुः ॥ अवाक्षीः । अवोढम् । अवोढ ॥ अवाक्षम् । अवाक्ष्व । अवाक्ष्म ॥ अवोढ। अवक्षाताम् । अवक्षत ॥ अवोढाः । अवक्षाथाम् । अवोढ्वम् ॥ अवक्षि । अवक्ष्वहि । अवक्ष्महि * शेष पच के तुल्य हैं ॥

धनिनं भजन्ते दरिद्राः । भरते स्वकुटुम्बं जनः । धरति लोकं धर्मः । पाकं पचति सूदः । ईश्वरं भज । देवान् यजस्व । भारं वहति गर्दभः । प्रायः इसी प्रकार धातुपाठ में लिखे भ्वादिगणस्थ अन्य धातु भी जानो ॥

इतिउभयपदप्रकरम् । भ्वादिगणश्च समाप्तः ॥

अथ तिङन्ते अदादिगणप्रकरणम्

तत्र परस्मैपादिनः

५५-अद=भक्षण, खाना

अत्ति । अत्तः । अदन्ति ॥ अत्सि । अत्थः । अत्थ ॥ अद्मि । अद्वः । अद्मः ॥ अद्यात् अद्याताम् । अद्युः ॥ अद्याः । अद्यातम् । अद्यात ॥ अद्याम् । अद्याव ।

अद्याम * अत्तु, अत्तात् । अत्ताम् । अदन्तु ॥ अद्धि, अत्तात् । अत्तम् । अत्त ॥ अदानि । अदाव । अदाम * आदत् । आत्ताम् । आदन् ॥ आदः । आत्तम् । आत्त ॥ आदम् । आद्व । आद्म * लिट्-आद । आदतुः । आदुः ॥ आदिथ आदथुः । आद ॥ आद । आदिव । आदिम * अथवा—जघास । जक्षतुः । जक्षुः ॥ जघसिथ । जक्षथुः । जक्ष ॥ जघास, जघस । जक्षिव । जक्षिम * आशीर्लिङ्-अद्यात् । अद्यास्ताम् इत्यादि ॥ लुट्-अत्ता । अत्तारौ इत्यादि * लृट्—अत्स्यति * लृङ्-आत्स्यत् * लुङ्-अघसत् । अघसताम् । अघसन् ॥ अघसः । अघसतम् । अघसत ॥ अघसम् । अघसाव । अघसाम ॥

५६—हन्=हिंसा, मारना, वध करना और गति

हन्ति हतः घ्नन्ति । हंसि हथः हथ । हन्मि हन्वः हन्मः * हन्यात् । हन्याताम् इत्यादि * हन्तु, हतात् । हताम् । घ्नन्तु ॥ जहि, हतात् । हतम् । हत ॥ हनानि । हनाव । हनाम * अहन् अहताम् अघ्नन् । अहन् अहतम् अहत । अहनम् अहन्व अहन्म * जघान जघ्नतुः जघ्नुः । जघनिथ, जघन्थ । जघ्नथुः । जघ्न । जघान, जघन । जघ्निव । जघ्निम * वध्यात् इत्यादि * हन्ता * हनिष्यति * अहनिष्यत् * अवधीत् इत्यादि ॥

५७—यु=मिलाना और पृथक् करना

यौति युतः युवन्ति । यौषि युथः युथ । यौमि युवः युमः * युयात् इत्यादि * यौतु, युतात् । युताम् । युवन्तु ॥ युहि, युतात् । युतम् । युत ॥ यवानि । यवाव । यवाम * अयौत् अयुताम् अयुवन् । अयौः अयुतम् अयुत । अयवम् अयुव अयुम * युयाव युयुवतुः युयुवुः । युयविथ युयुवथुः युयुव । युयाव, युयव युयुविव युयुविम * यूयात् इत्यादि * यविता इत्यादि * यविष्यति इत्यादि * अयविष्यत् इत्यादि * अयावीत् इत्यादि ॥

५८—या=यान, जाना, पहुंचना, पाना

याति यातः इत्यादि * यायात् * यातु * अयात् । अयाताम् । अयुः, अयाम् । इत्यादि * ययौ ययतुः ययुः ॥ ययिथ, ययाथ ययथुः यय ॥ ययौ ययिव ययिम * यायात् यायास्ताम् * याता । * यास्यति * अयास्यत् * अयासीत् इत्यादि ॥

५९—वा=गति, गन्धन, बू करना ॥ ६०—भा=चमकना, प्रकाश ॥ ६१=स्ना=स्नान, न्हाना ॥ आशीर्लिङ्-स्नायात्,

स्नेयात् ॥ ६२–श्रा=पकाना ॥ श्रायात्, श्रेयात् ॥ ६३–द्रा=बुरी चाल चलना ॥ द्रायात्, देयात् ॥ ६४–प्सा=भक्षण, खाना ॥ प्सायात्, प्सेयात् ॥ ६५–रा=देना ॥ ६६–ला=लेना ॥ ६७–दा (प्)=काटना । ६८–ख्या=कहना, बोलना ॥ ख्यायात्, ख्येयात् । इन धातुओं के शेष रूप भी "५८–या" के तुल्य हैं ॥

अन्नमत्ति । शत्रुं हन्ति । दुग्धं मिष्टं च यौति । ग्रामं याति । वायुर्वाति । सूर्यो भाति । ब्राह्मणः स्नाति । सूपं श्राति पाचकः । द्राति धूर्तः । प्साति मृगं व्याघ्रः । धनं राति, लाति वा । दान्ति धान्यं क्षेत्रे कृषकाः । ख्याति धर्मं गुरुः शिष्याय ॥

६९–विद्=ज्ञान, जानना

लट्–वेत्ति वित्तः विदन्ति । वेत्सि वित्थः वित्थ । वेद्मि विद्वः विद्मः ॥ अथवा–वेद विदतुः विदुः । वेत्थ विदथुः विद । वेद विद्व विद्म * विद्यात् * वेत्तु, वित्तात् । वित्ताम् । विदन्तु ॥ विद्धि, वित्तात् । वित्तम् । वित्त ॥ वेदानि । वेदाव । वेदाम ॥ अथवा–विदाङ्करोतु इत्यादि * अवेत् । अवित्ताम् । अविदुः । अवेः, अवेत् । अवित्तम् । अवित्त ॥ अवेदम् । अविद्व । अविद्म * विदाञ्चकार इत्यादि अथवा–विवेद विविदतुः इत्यादि * विद्यात् विद्यास्ताम् * वेदिता * वेदिष्यति * अवेदिष्यत् * अवेदीत् ॥

७०–अस=होना, सत्ता

अस्ति स्तः सन्ति । असि स्थः स्थ । अस्मि स्वः स्मः * स्यात् स्याताम् इत्यादि * अस्तु, स्तात् । स्ताम् । सन्तु ॥ एधि, स्तात् । स्तम् । स्त ॥ असानि । असाव । असाम * आसीत् आस्ताम् आसन् । आसीः आस्तम् आस्त । आसम् आस्व आस्म * शेष बभूव इत्यादि "भू" धातु के तुल्य जानो ॥

७१–इ (ण्)=गति, चलना, पहुंचना, पाना

एति इतः यन्ति । एषि इथः इथ । एमि इवः इमः * इयात् इत्यादि * एतु इत्यादि * ऐत् ऐताम् आयन् । ऐः ऐतम् ऐत । आयम् ऐव ऐम * इयाय ईयतुः ईयुः । इययिथ, इयेथ ईयथुः ईय । इयाय, इयय ईयिव ईयिम * ईयात् * एता * एष्यति * ऐष्यत् * अगात् अगाताम् अगुः । अगाः अगातम् अगात । अगाम् अगाव अगाम ॥

वेत्ति सर्वमीश्वरः । विदाञ्चकार कृष्णः चतुःषष्टिकलाः । विदाङ्कुर्वन्तु भवन्तः शास्त्रोक्तं धर्मम् । अस्ति धान्यम् । ग्राममेति पान्थः । पद्भ्यामियात् किमपि दूरं नित्यम् । भुवोन्तमियाय ॥

इति परस्मैपदप्रकरणम् । अथात्मनेपदप्रकरणम्

—:*:—

७२–शीङ्=सोना, शयन करना, नींद लेना

शेते शयाते शेरते । शेषे शयाथे शेध्वे । शये शेवहे शेमहे * शयीत शयीयाताम् शयीरन् । शयीथाः शयीयाथाम् शयीध्वम् । शयीय शयीवहि शयीमहि * शेताम् शयाताम् शेरताम् । शेष्व शयाथाम् शेध्वम् । शयै शयावहै शयामहै * अशेत अशयाताम् अशेरत । अशेथाः अशयाथाम् अशेध्वम् । अशयि अशेवहि अशेमहि * शिश्ये शिश्याते शिश्यिरे । शिश्यिषे शिश्याथे शिश्यिध्वे । शिश्ये शिश्यिवहे शिश्यिमहे * शयिषीष्ट * शयिता * शयिष्यते * अशयिष्यत * अशयिष्ट अशयिषाताम् अशयिषत । अशयिष्ठाः अशयिषाथाम् अशयिढ्वम् । अशयिषि अशयिष्वहि अशयिष्महि ॥

७३–इङ्=पढ़ना, अध्ययन

इस से पूर्व "अधि" उपसर्ग नहीं बिछुड़ता किन्तु सदा साथ ही रहता है । यथा-अधीते अधीयाते अधीयते । अधीषे अधीयाथे अधीध्वे । अधीये अधीवहे अधीमहे * अधीयीत अधीयीयाताम् अधीयीरन् । अधीयीथाः अधीयीयाथाम् अधीयीध्वम् । अधीयीय अधीयीवहि अधीयीमहि * अधीताम् अधीयाताम् अधीयताम् । अधीष्व अधीयाथाम् अधीध्वम् । अध्ययै अध्ययावहै अध्ययामहै * अध्यैत अध्यैयाताम् अध्यैयत । अध्यैथाः अध्यैयाथाम् अध्यैध्वम् । अध्यैयि अध्यैवहि अध्यैमहि * अधिजगे अधिजगाते अधिजगिरे । अधिजगिषे अधिजगाथे अधिजगिध्वे । अधिजगे अधिजगिवहे अधिजगिमहे * अध्येषीष्ट अध्येषीयास्ताम् इत्यादि * अध्येता अध्येतारौ * अध्येष्यते अध्येष्येते * अध्यगीष्यत अध्यगीष्येताम् अध्यगीष्यन्त । अध्यगीष्यथाः अध्यगीष्येथाम् अध्यगीष्यध्वम् । अध्यगीष्ये अध्यगीष्यावहि अध्यगीष्यामहि । अथवा—अध्यैष्यत अध्यैष्येताम् अध्यैष्यन्त । अध्यैष्यथाः अध्यैष्येथाम् अध्यैष्यध्वम् । अध्यैष्ये अध्यैष्यावहि अध्यैष्यामहि * अध्यगीष्ट अध्यगीषाताम् अध्यगीषत । अध्यगीष्ठाः अध्यगीषाथाम् अध्यगीढ्वम् । अध्य-

गीवि अध्यगीष्वहि अध्यगीष्महि । अथवा–अध्यैष्ट अध्यैषाताम् अध्यैषत । अध्यैष्ठाः अध्यैषाथाम् अध्यैड्ढ्वम् । अध्यैषि अध्यैष्वहि अध्यैष्महि ॥ बालः शेते । छात्रोऽधीते ॥

इत्यात्मनेपदप्रकरणम् ॥ अथोभयपदप्रकरणम् ।

७४–दुह=दुहना, प्रपूरण, भरना ॥

परस्मै–दोग्धि दुग्धः दुहन्ति । धोक्षि दुग्धः दुग्ध । दोह्मि दुह्वः दुह्मः ॥ दुह्यात् दुह्याताम् इत्यादि ॥ दोग्धु, दुग्धात् दुग्धाम् दुहन्तु । दुग्धि, दुग्धात् इत्यादि ॥ अधोक्, ग् अदुग्धाम् अदुहन् । अधोक्, ग् अदुग्धम् अदुग्ध । अदोहम् अदुह्व अदुह्म ॥ दुदोह दुदुहतुः दुदुहुः । दुदोहिथ, दुदोग्ध दुदुहथुः दुदुह । दुदोह दुदुहिव दुदुहिम ॥ दुह्यात् दुह्यास्ताम् इत्यादि ॥ दोग्धा दोग्धारौ ॥ धोक्ष्यति ॥ अधोक्ष्यत् ॥ अधुक्षत् अधुक्षताम् अधुक्षन् । अधुक्षः अधुक्षतम् अधुक्षत । अधुक्षम् अधुक्षाव अधुक्षाम ॥ आत्मने० दुग्धे दुहाते दुहते । धुक्षे दुहाथे धुग्ध्वे । दुहे दुह्वहे दुह्महे ॥ दुहीत दुहीयाताम् दुहीरन् इत्यादि ॥ दुग्धाम् दुहाताम् दुहताम् । धुक्ष्व दुहाथाम् धुग्ध्वम् । दुहै दुहावहै दुहामहै ॥ अदुग्ध अदुहाताम् अदुहत । अदुग्धाः अदुहाथाम् अधुग्ध्वम् । अदुहि अदुह्वहि अदुह्महि ॥ दुदुहे दुदुहाते दुदुहिरे इत्यादि ॥ धुक्षीष्ट धुक्षीयास्ताम् इत्यादि ॥ दोग्धा दोग्धारौ दोग्धारः । दोग्धासे इत्यादि ॥ धोक्ष्यते ॥ अधोक्ष्यत ॥ अदुग्ध, अधुक्षत । अधुक्षाताम् । अधुक्षन्त । अदुग्धाः, अधुक्षथाः । अधुक्षाथाम् अधुग्ध्वम्, अधुक्षध्वम् ॥ अधुक्षि । अदुह्वहि, अधुक्षावहि । अधुक्षामहि ॥

रक्षकः शेते । विद्यार्थिनोऽधीते । गां पयो दोग्धि गोपालः=ग्वाल गौ से दूध दुहता है । दुह धातु के दो कर्म होते हैं । जैसे १ गौ, २ दूध इत्यादि ॥

७५–दिह=उपचय, सञ्चय, जुड़ना, लीपना ॥

देग्धि । दिग्धे ॥ दिह्यात् । दिहीत ॥ देग्धु । दिग्धाम् ॥ आगे दुह धातु के तुल्य जानो ॥

७६–लिह=आस्वादन, चाटना ॥

लेढि लीढः लिहन्ति ॥ लेक्षि लीढः लीढ । लेह्मि लिह्वः लिह्मः ॥ लीढे लिहाते लिहते । लिक्षे लिहाथे लीढ्वे । लिहे लिह्वहे लिह्महे ॥ लिह्यात् । लिहीत ॥ लेढु, लीढात् लीढाम् लिहन्तु । लीढि लीढात् लीढम् लीढ । लेहानि लेहाव लेहाम ॥ लीढाम् लिहाताम् लिहताम् । लिक्ष्व लिहाथाम् लीढ्वम् । लेहै लेहावहै लेहामहै ॥ अलेट् अलीढाम् अलिहन् । अलेट् अलीढम्

अलीढ । अलेहम् अलिह्व अलिह्म ॥ अलीढ अलिहाताम् अलिहत । अलीढाः अलिहाथाम् अलीढ्वम् । अलिहि अलिह्वहि अलिह्महि * लिलेह लिलिहतुः लिलिहुः । लिलेहिथ लिलिहथुः लिलिह । लिलेह लिलिहिव लिलिहिम ॥ लिलिहे लिलिहाते लिलिहिरे । लिलिहिषे लिलिहाथे लिलिहिढ्वे । लिलिहे लिलिहिवहे लिलिहिमहे * लिह्यात् । लिक्षीष्ट * लेढा लेढारौ लेढारः । लेढासि * लेक्ष्यति । लेक्ष्यते * अलेक्ष्यत् । अलेक्ष्यत * अलिक्षत् । अलीढ, अलिक्षत । अलिक्षाताम् । अलिक्षन्त । अलीढाः, अलिक्षथाः । अलिक्षाथाम् अलीढ्वम्, अलिक्षध्वम् । अलिक्षि । अलिह्वहि, अलिक्षावहि । अलिक्षामहि ॥

युवा शरीरं देग्धि । भ्रमरो रसं लेढि इत्यादि ॥

७७—ब्रूञ्=बोलना, कहना

ब्रवीति, आह । ब्रूतः, आहतुः । ब्रुवन्ति, आहुः ॥ ब्रवीषि, आत्थ । ब्रूथः आहथुः । ब्रूथ ॥ ब्रवीमि । ब्रूवः । ब्रूमः ॥ ब्रूते ब्रुवाते ब्रुवते । ब्रूषे ब्रुवाथे ब्रूध्वे । ब्रुवे ब्रूवहे ब्रूमहे * ब्रूयात् ब्रूयाताम् । ब्रुवीत ब्रुवीयाताम् * ब्रवीतु, ब्रूतात् । ब्रूताम् । ब्रुवन्तु ॥ ब्रूहि, ब्रूतात् । ब्रूतम् । ब्रूत ॥ ब्रवाणि ब्रवाव । ब्रवाम ॥ ब्रूताम् ब्रुवाताम् ब्रुवताम् । ब्रूष्व ब्रुवाथाम् ब्रूध्वम् ॥ ब्रवै ब्रवावहै ब्रवामहै * अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रुवन् । अब्रवीः अब्रूतम् अब्रूत । अब्रवम् अब्रूव अब्रूम ॥ अब्रूत अब्रुवाताम् अब्रुवत । अब्रूथाः अब्रुवाथाम् अब्रूध्वम् ॥ अब्रुवि अब्रूवहि अब्रूमहि * उवाच ऊचतुः ऊचुः । उवचिथ, उवक्थ ऊचथुः ऊच । उवाच, उवच उचिव ऊचिम ॥ ऊचे ऊचाते ऊचिरे इत्यादि * उच्यात् । वक्षीष्ट * वक्ता । वक्ता * वक्ष्यति । वक्ष्यते * अवक्ष्यत् । अवक्ष्यत * अवोचत् अवोचताम् इत्यादि ॥ अवोचत अवोचेताम् इत्यादि ॥

७८—ऊर्णुञ्=आच्छादन, ढकना, ओढ़ना

ऊर्णोति, ऊर्णौति । ऊर्णुतः । ऊर्णुवन्ति ॥ ऊर्णोषि, ऊर्णौषि । ऊर्णुथः । ऊर्णुथ ॥ ऊर्णोमि, ऊर्णौमि । ऊर्णुवः । ऊर्णुमः ॥ ऊर्णुते ऊर्णुवाते ऊर्णुवते । ऊर्णुषे इत्यादि * ऊर्णुयात् । ऊर्णुवीत * ऊर्णोतु, ऊर्णौतु, ऊर्णुतात् । ऊर्णुताम् । ऊर्णुवन्तु ॥ ऊर्णुहि, ऊर्णुतात् । ऊर्णुतम् ऊर्णुत ॥ ऊर्णवानि । ऊर्णवाव । ऊर्णवाम ॥ ऊर्णुताम् ऊर्णुवाताम् ऊर्णुवताम् । ऊर्णुष्व इत्यादि * और्णोत् और्णुताम् और्णुवन् । और्णोः और्णुतम् और्णुत । और्णवम् और्णुव और्णुम । और्णुत और्णुवाताम् और्णुवत । और्णुथाः इत्यादि * ऊर्णुनाव

ऊर्णुनुवतुः ऊर्णुनुवुः । ऊर्णुनविथ, ऊर्णुनुविथ । ऊर्णुनुवथुः । ऊर्णुनुव ॥ ऊर्णुनाव, ऊर्णुनव । ऊर्णुनुविव, ऊर्णुनविव ।· ऊर्णुनुविम, ऊर्णुनविम ॥ ऊर्णुनुवे ऊर्णुनुवाते ऊर्णुनुविरे ॥ ऊर्णुनुविषे, ऊर्णुनविषे । ऊर्णुनुवाथे । ऊर्णुनुविध्वे, ऊर्णुनविध्व ॥ ऊर्णुनुवे । ऊर्णुनुविवहे, ऊर्णुनविवहे । ऊर्णुनुविमहे, ऊर्णुनविमहे * ऊर्णूयात् ॥ ऊर्णविषीष्ट, ऊर्णुविषीष्ट * ऊर्णविता २, ऊर्णुविता २ * ऊर्णविष्यति, ऊर्णुविष्यति ॥ ऊर्णविष्यते, ऊर्णुविष्यते * और्णविष्यत्, और्णुविष्यत् । और्णविष्यत, और्णुविष्यत * और्णवीत्, और्णावीत्, और्णुवीत् ॥ और्णविष्ट अर्णुविष्ट इत्यादि ॥

गुरुहितं वचनं ब्रूते ब्रवीति वा । ऊर्णोति वस्त्रेण देहम् । ववाच वचनं सत्यम् । अवोचद्धृदयङ्गमम् इत्यादि ॥

इत्यदादिगणप्रकरणम् ॥

अथ तिङन्ते जुहोत्यादिगणप्रकरणम्

तत्र परस्मैपदिनः

७९–हु=दान और खाना वा हवन करना

जुहोति जुहुतः जुह्वति ॥ जुहोषि जुहुथः जुहुथ । जुहोमि जुहुवः जुहुमः * जुहुयात् * जुहोतु, जुहुतात् । जुहुताम् । जुह्वतु ॥ जुहुधि, जुहुतात् । जुहुतम् । जुहुत ॥ जुहवानि जुहवाव जुहवाम * अजुहोत् अजुहुताम् अजुहवुः । अजुहोः अजुहुतम् अजुहुत ॥ अजुहवम् अजुहुव अजुहुम * जुहवाञ्चकार जुहवाञ्चक्रतुः इत्यादि ॥ अथवा–जुहाव । जुहुवतुः । जुहुवुः ॥ जुहोथ जुहुवथुः । जुहुव ॥ जुहाव, जुहव । जुहुव । जुहुम * हूयात् * होता * होष्यति * अहोष्यत् * अहौषीत् अहौष्टाम् अहौषुः । अहौषीः अहौष्टम् अहौष्ट । अहौषम् अहौष्व अहौष्म ॥

८०–(ञि) भी=डरना

बिभेति । बिभीतः, बिभितः । बिभ्यति ॥ बिभेषि । बिभीथः, बिभिथः । बिभीथ, बिभिथ ॥ बिभेमि । बिभीवः, बिभिवः । बिभीमः, बिभिमः * बिभीयात् बिभियात् इत्यादि * बिभेतु, बिभीतात् , बिभितात् । बिभीताम्, बिभिताम् । बिभ्यतु ॥ बिभीहि, बिभिहि । बिभीतात्, बिभितात् । बिभीतम्, बिभितम् । बिभीत, बिभित ॥ बिभयानि बिभयाव बिभयाम * अबि-

भेव । अबिभीताम् , अबिभयाम् । अबिभयुः ॥ अबिभेः । अबिभीतम्, अबिभितम् । अबिभीत, अबिभित ॥ अबिभयम् । अबिभीव, अबिभिव । अबिभीम, अबिभिम * बिभयाञ्चकार वा बिभाय बिभ्यतुः बिभ्युः ॥ बिभेथ । बिभ्यथुः । बिभ्य ॥ बिभाय, बिभय । बिभ्यिव । बिभ्यिम । भीयात् भीयास्ताम् इत्यादि * भेता * भेष्यति * अभेष्यत् * अभैषीत् इत्यादि ॥

८१–ह्री=लज्जा करना शर्म करना

जिह्रेति । जिह्रीतः । जिह्रियति ॥ जिह्रेषि इत्यादि * जिह्रीयात्, * जिह्रेतु * अजिह्रेत् * जिह्रयाञ्चकार इत्यादि । वा जिह्राय । जिह्रियतुः इत्यादि * ह्रीयात् * ह्रेता * ह्रेष्यति * अह्रेष्यत् * अह्रैषीत् ॥

८२–पृ=पालन और पूरण=पूरा करना, भरना

पिपर्त्ति पिपूर्त्तः पिपुरति ॥ पिपर्षि पिपूर्थः पिपूर्थ ॥ पिपर्मि पिपूर्वः पिपूर्मः * पिपूर्यात् * पिपर्त्तु, पिपूर्त्तात् । पिपूर्त्ताम् । पिपुरतु ॥ पिपूर्धि, पिपूर्त्तात् । पिपूर्त्तम् । पिपूर्त्त ॥ पिपराणि । पिपराव । पिपराम * अपिपः अपिपूर्त्ताम् अपिपरुः । अपिपः अपिपूर्त्तम् अपिपूर्त्त । अपिपरम् अपिपूर्व अपिपूर्म * पपार । पप्रतुः, पपरतुः । पप्रुः पपरुः । पपरिथ । पप्रथुः, पपरथुः । पप्र, पपर ॥ पपार, पपर । पप्रिव पपरिव । पप्रिम, पपरिम * पूर्यात् * परिता, परीता । परितारौ, परीतारौ * परिष्यति, परीष्यति * अपरिष्यत्, अपरीष्यत् * अपारीत् अपारिष्टाम् अपारिषुः ॥ अपारीः अपारिष्टम् अपारिष्ट ॥ अपारिषम् अपारिष्व अपारिष्म ॥

८३–(ओ) हा (क्)=त्याग, छोड़ना

जहाति । जहितः, जहीतः । जहति ॥ जहासि । जहिथः, जहीथः इत्यादि जह्यात् । जहातु । जहितात्, जहीतात् । जहिताम्, जहीताम् । जहतु ॥ जहाहि, जहिहि, जहीहि । जहितम्, जहीतम् । जहित, जहीत ॥ जहानि । जहाव । जहाम । अजहात् । अजहिताम्, अजहीताम् । अजहुः ॥ अजहाः । अजहितम्, अजहीतम् । अजहित, अजहीत ॥ अजहाम् । अजहिव, अजहीव । अजहिम, अजहीम । जहौ । जहतुः । जहुः ॥ जहिथ, जहाथ । जहथुः । जह ॥ जहौ जहिव जहिम * हेयात् । हाता । हास्यति । अहास्यत् । अहासीत् अहासिष्टाम् अहासिषुः । अहासीः अहासिष्टम् अहासिष्ट । अहासिषम् अहासिष्व अहासिष्म ॥

भाषा बनाओ

ब्राह्मणाय दक्षिणां जुहोति । मिष्टं जुहोति । अग्नौ घृतं जुहोति । दुष्टाद् बिभेति । पापात् जिह्रीहि, जिह्रिहि । शूरः प्रतिज्ञां पिपर्त्ति । पात्रं दुग्धेन पिपूर्धि । सुखं जहाति धनाय कृपणः ॥

इति परस्मैपदिनः

अथात्मनेपदिनः–

८४–मा (ङ्)=मान, मापना वा मानना और बोलना

मिमीते मिमाते मिमते । मिमीषे मिमाथे मिमीध्वे । मिमे मिमीवहे मिमीमहे * मिमीत मिमीयाताम् मिमीरन् । मिमीथाः मिमीयाथाम् मिमीध्वम् । मिमीय मिमीवहि मिमीमहि * मिमीताम् मिमाताम् मिमताम् । मिमीष्व मिमाथाम् मिमीध्वम् । मिमै मिमावहै मिमामहै * अमिमीत अमिमाताम् अमिमत । अमिमीथाः अमिमाथाम् अमिमीध्वम् । अमिमि अमिमीवहि अमिमीमहि * ममे ममाते ममिरे । ममिषे ममाथे ममिध्वे । ममे ममिवहे ममिमहे * मासीष्ट मासीयास्ताम् * माता * मास्यते * अमास्यत * अमास्त अमासाताम् अमासत । अमास्थाः अमासाथाम् अमाध्वम् । अमासि अमास्वहि अमास्महि ॥

८५–(ओ) हा (ङ्)=गति=ज्ञान, गमन, प्राप्ति

जिहीते जिहाते जिहते । जिहीषे इत्यादि * जिहीत जिहीयाताम् * जिहीताम् * अजिहीत * जहे * हासीष्ट * हाता * हास्यते * अहास्यत * अहास्त ॥

इत्यात्मनेपदिनः

अथोभयपदिनः–

८६–(डु) भृ (ञ्)=धारण और पोषण, पालन

परस्मै०–बिभर्त्ति * बिभृयात् * बिभर्त्तु, बिभृतात् । बिभृताम् । बिभ्रतु * अबिभः अबिभृताम् अबिभरुः । अबिभः अबिभृतम् अबिभृत । अबिभरम् अबिभृव अबिभृम * बिभराञ्चकार वा–बभार * भ्रियात् * भर्त्ता * भरिष्यति * अभरिष्यत् अभार्षीत् अभार्ष्टाम् अभार्षुः । अभार्षीः अभार्ष्टम् अभार्ष्ट । अभार्षम् अभार्ष्व अभार्ष्म * आत्मने०–बिभृते बिभ्राते बिभ्रते । बिभृषे

बिभ्राथे बिभृध्वे । बिभ्रे बिभृवहे बिभृमहे * बिभ्रीत बिभ्रीयाताम् * बिभृताम् बिभ्राताम् बिभ्रताम् । बिभृष्व बिभ्राथाम् इत्यादि * अबिभृत अबिभ्राताम् अबिभ्रत । अबिभृथाः अबिभ्राथाम् अबिभृध्वम् । अबिभ्रि अबिभृवहि अबिभृमहि * बिभराञ्चक्रे बिभराञ्चक्राते वा-बभ्रे बभ्राते * भृषीष्ट * भर्ता * भरिष्यते * अभरिष्यत * अभृत अभृषाताम् ॥

८७–(डु) दा (ञ्)=दान, देना

ददाति दत्तः ददति । ददासि दत्थः दत्थ । ददामि दद्वः दद्मः ॥ दत्ते ददाते ददते । दत्से ददाथे दद्ध्वे । ददे दद्वहे दद्महे * दद्यात दद्याताम् दद्युः । दद्याः दद्यातम् इत्यादि ॥ ददीत ददीयाताम् * ददातु, दत्तात् । दत्ताम् । ददतु ॥ देहि, दत्तात् । दत्तम् । दत्त ॥ ददानि । ददाव । ददाम * दत्ताम् ददाताम् ददताम् । दत्स्व ददाथाम् दद्ध्वम् । ददै ददावहै ददामहै * अददात् अददाताम् अददुः । अददाः अददातम् अददात । अददाम् अददाव अददाम ॥ अदत्त अददाताम् अददत * ददौ ददतुः ददुः । ददिथ, ददाथ ददथुः दद । ददौ ददिव ददिम ॥ ददे ददाते ददिरे । ददिषे * देयात् देयास्ताम् ॥ दासीष्ट * दाता ॥ दाता * दास्यति ॥ दास्यते * अदास्यत् ॥ अदास्यत * अदात् ॥ अदित अदिषाताम् अदिषत । अदिथाः अदिषाथाम् अदिढ्वम् । अदिषि अदिष्वहि अदिष्महि ॥

८८–(डु) धा (ञ्)=धारण और पोषण, पालना

दधाति धत्तः दधति । दधासि ॥ धत्ते दधाते दधते * दध्यात् ॥ दधीत * दधातु, धत्तात् । धत्ताम् । दधतु ॥ धत्ताम् दधाताम् दधताम् । धत्स्व * अदधात् ॥ अधत्त * दधौ ॥ दधे * धेयात् ॥ धासीष्ट * धाता ॥ धाता * धास्यति ॥ धास्यते * अधास्यत् ॥ अधास्यत * अधात् ॥ अधित ॥

८९–णिजिर्=शुद्ध करना, शौच और पोषण

नेनेक्ति नेनिक्तः नेनिजति । नेनेक्षि नेनिक्थः नेनिक्थ । नेनेज्मि नेनिज्वः नेनिज्मः ॥ नेनिक्ते नेनिजाते नेनिजते । नेनिक्षे नेनिजाते नेनिग्ध्वे । नेनिजे नेनिज्वहे नेनिज्महे * नेनिज्यात् ॥ नेनिजीत * नेनेक्तु, नेनिक्तात् । नेनिक्ताम् । नेनिजतु ॥ नेनिग्धि, नेनिक्तात् । नेनिक्तम् । नेनिक्त ॥ नेनेजानि । नेनेजाव । नेनेजाम ॥ नेनिक्ताम् नेनिजाताम् नेनिजताम् । नेनिक्ष्व नेनिजाथाम् नेनिग्ध्वम् । नेनेजै नेनेजावहै नेनेजामहै * अनेनेक् अनेनिक्ताम् अनेनिजुः । अनेनेक्

अनेनिक्तम् अनेनिक्त । अनेनेजम् अनेनिज्व अनेनिज्म ॥ अनेनिक्त अनेनिजाताम् अनेनिजत । अनेनिक्थाः अनेनिजाथाम् अनेनिग्ध्वम् । अनेनिजि अनेनिज्वहि अनेनिज्महि * निनेज निनिजतुः निनिजुः ॥ निनेजिथ, निनेक्थ निनिजथुः निनिज ॥ निनेज निनिजिव निनिजिम ॥ निनिजे निनिजाते * निज्यात् ॥ निक्षीष्ट * नेक्ता ॥ नेक्ता * नेक्ष्यति ॥ नेक्ष्यते * अनेक्ष्यत् ॥ अनेक्ष्यत * अनिजत् अनिजताम् अनिजन् इत्यादि ॥ अथवा—अनैक्षीत् अनैक्ताम् अनैक्षुः । अनैक्षीः अनैक्तम् अनैक्त । अनैक्षम् अनैक्ष्व अनैक्ष्म ॥ अनिक्त अनिजाताम् अनिजत । अनिक्थाः अनिजाथाम् अनिग्ध्वम् । अनिजि अनिज्वहि अनिज्महि ॥ भाषा बनाओ—

माता पुत्रं मिमीते । विद्यार्थी शास्त्रस्यार्थं जिहीते । बिभर्ति त्रैलोक्यं विष्णुः । बिभृते कुटुम्बं गृही । ददाति दक्षिणां यजमानः पुरोहिताय । दधासि मालां माणवकः । धत्ते पुत्रं माता । नेनेक्ति वासांसि रजकः । नेनिक्ते क्षुधार्त्तान् दयालुः ॥

इति जुहोत्यादिगणप्रकरणम् ॥

—:*:—

अथ तिङन्ते दिवादिगणप्रकरणम् ॥

तत्र परस्मैपदिनः ॥

९०—दिवु=क्रीडा, जीतने की इच्छा, जुआ खेलना, व्यवहार, चमकना, स्तुति, हर्ष, मद, स्वप्न, इच्छा और गति ॥

दीव्यति * दीव्येत् * दीव्यतु * अदीव्यत् * दिदेव दिदिवतुः दिदिवुः इत्यादि * दीव्यात् * देविता * देविष्यति * अदेविष्यत् * अदेवीत् अदेविष्टाम् अदेविषुः । अदेवीः अदेविष्टम् अदेविष्ट इत्यादि ॥

९१—षिवु=सीना, सूचीकर्म, तार पूरना

सीव्यति * सीव्येत् * सीव्यतु * असीव्यत् * सिषेव * सीव्यात् * सेविता * सेविष्यति * असेविष्यत् * असेवीत् ॥

९२—नृती=नाचना, नृत्य करना

नृत्यति * नृत्येत् * नृत्यतु * अनृत्यत् * ननर्त ननृततुः ननृतुः । ननर्तिथ ननृतथुः ननृत । ननर्त ननृतिव ननृतिम * नृत्यात् नृत्यास्ताम् * न-

र्त्तिता * नर्त्तिष्यति, नर्त्स्यति * अनर्त्तिष्यत्, अनर्त्स्यत्, * अनर्तीत् अनर्तिष्टाम् अनर्तिषुः । अनर्तीः इत्यादि ॥

९३—त्रसी=दुःख पाना, डरना

त्रस्यति, त्रसति । त्रस्येत्, त्रसेत् । त्रस्यतु, त्रसतु । अत्रस्यत्, अत्रसत् । तत्रास । तत्रसतुः, त्रेसतुः । तत्रसुः, त्रेसुः ॥ तत्रसिथ, त्रेसिथ । तत्रसथुः, त्रेसथुः । तत्रस, त्रेस । तत्राम, तत्रम । तत्रसिव, त्रेसिव । तत्रसिम, त्रेसिम ॥ त्रस्यात् । त्रसिता । त्रसिष्यति । अत्रसिष्यत् । अत्रासीत्, अत्रसीत् ॥

९४—शो=तनूकरण, बारीक करना, छीलना

श्यति । श्येत् । श्यतु । अश्यत् । शशौ शशतुः शशुः । शशिथ, शशाथ शशथुः शश । शशौ शशिव शशिम ॥ शायात् । शाता । शास्यति । अशास्यत् । अशासीत् अशासिष्टाम् इत्यादि, अथवा-अशात् अशाताम् अशुः । अशाः अशातम् अशात । अशाम् अशाव अशाम ॥

९५—छो=छेदन, बींधना

छ्यति । छ्येत् । छ्यतु । अच्छ्यत् । चच्छौ चच्छतुः । छायात् । छाता । छास्यति । अच्छास्यत् । अच्छात् इत्यादि वा—अच्छासीत् इत्यादि ॥

९६—षो=अन्तकर्म, नाश करना

स्यति । स्येत् । स्यतु । अस्यत् । ससौ ससतुः । सायात् । साता । सास्यति । शेष रूप "शो" के तुल्य हैं ॥

९७—दो=तोड़ना, खण्डित करना

द्यति । द्येत् । द्यतु । अद्यत् । ददौ ददतुः । देयात् देयास्ताम् इत्यादि । शेष रूप "शो" के तुल्य हैं ॥

९८—व्यध=ताड़ना, दुःख देना, बाधना

विध्यति । विध्येत् । विध्यतु । अविध्यत् ॥ विव्याध । विविधतुः । विविधुः ॥ विव्यधिथ, विव्यद्ध । विविधथुः । विविध ॥ विव्याध, विव्यध । विविधिव । विविधिम ॥ विध्यात् । व्यद्धा व्यद्धारौ । व्यत्स्यति । अव्यत्स्यत् । अव्यात्सीत् अव्याद्धाम् अव्यात्सुः । अव्यात्सीः अव्याद्धम् अव्याद्ध । अव्यात्सम् अव्यात्स्व अव्यात्स्म ॥

९९—पुष=पुष्टि, पालन, मज़बूत होना

पुष्यति । पुष्येत् । पुष्यतु । अपुष्यत् । पुपोष पुपुषतुः । पुष्यात् ।

पोष्टा * पोक्ष्यति * अपोक्ष्यत् * अपुषत् अपुषताम् अपुषन् । अपुषः अपुषतम् अपुषत । अपुषम् अपुषाव अपुषाम ॥

१००—शुष=शोषण, सूखना, खुश्क होना

शुष्यति * शुष्येत् * शुष्यतु * अशुष्यत् * शुशोष इत्यादि * शुष्यात् * शोष्टा * शोक्ष्यति * अशोक्ष्यत् * अशुषत् ॥

१०१—णश=अदर्शन, नाश

नश्यति * नश्येत् * नश्यतु * अनश्यत् * ननाश नेशतुः नेशुः । नेशिथ, ननंष्ठ नेशथुः नेश । ननाश, ननश नेशिव नेशिम * नश्यात् * नंष्टा * नङ्क्ष्यति * अनंक्ष्यत् * अनशत् ॥

भाषानुवाद करो

अक्षैर्दीव्यति दुष्टः । सूच्या सीव्यति वस्त्राणि । नृत्यन्ति निर्लज्जाः गणिकाः । अवृष्ट्या त्रस्यति लोकः । तक्षकः काष्ठं श्यति । छ्यति पाशान् दुःखस्य । स्यति सुखानि पापीयान् । द्यन्ति भाण्डानि वानराः । विव्याध शरैरिपून्भटः । पुष्यति बालकः । शुष्यति सरोऽनावृष्ट्या । दिनानि नश्यन्ति वृथा दुरात्मनः ॥

इति परस्मैपदप्रकरणम्

अथात्मनेपदप्रकरणम्—

१०२—षू (ङ्)=प्राणिप्रसव, प्राणी का जनना

लट्—सूयते * लिङ्—सूयेत * लोट्—सूयताम् * लङ्—असूयत * लिट्—सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे । सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविध्वे । सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे * आशीर्लिङ्—सोषीष्ट * लुट्—सोता, सविता * लृट्—सोष्यते, सविष्यते * लृङ्—असोष्यत, असविष्यत * लुङ्—असविष्ट, असोष्ट ॥

१०३—दू (ङ्)=परिताप, दुःखी होना

दूयते दूयेते दूयन्ते । दूयसे दूयेथे दूयध्वे । दूये दूयावहे दूयामहे * दूयेत दूयेयाताम् दूयेरन् । दूयेथाः दूयेयाथाम् दूयेध्वम् । दूयेय दूयेवहि दूयेमहि * दूयताम् दूयेताम् दूयन्ताम् । दूयस्व दूयेथाम् दूयध्वम् । दूयै दूयावहै दूयामहै * अदूयत अदूयेताम् अदूयन्त । अदूयथाः अदूयेथाम् अदूयध्वम् । अदूये अदू-

यावहि अदूयामहि * दुदुवे दुदुवाते इत्यादि * दविषीष्ट दविषीयास्ताम् इत्यादि * दविता दवितारौ दवितारः । दवितासे दवितासाथे दविताध्वे । दविताहे दवितास्वहे दवितास्महे * दविष्यते दविष्येते दविष्यन्ते दविष्यसे इत्यादि * अदविष्यत अदविष्येताम् अदविष्यन्त इत्यादि * अदविष्ट अदविषाताम् अदविषत ॥ अदविष्ठाः । अदविषाथाम् । अदविध्वम् ॥ अदविषि अदविष्वहि । अदविष्महि ॥

१०४–दी (ङ)=क्षय, नाश

दीयते * दीयेत * दीयताम् * अदीयत * दिदीये दिदीयाते दिदीयिरे । दिदीयिषे दिदीयाथे दिदीयिध्वे । दिदीये दिदीयिवहे दिदीयिमहे * दासीष्ट * दाता * दास्यते * अदास्यत * अदास्त अदासाताम् अदासत । अदास्थाः इत्यादि ॥

१०५–डी (ङ्)=उड़ना, आकाशगति

डीयते * डीयेत * डीयताम् * अडीयत * डिड्ये डिड्याते डिड्यिरे । डिड्यिषे इत्यादि * डयिषीष्ट * डयिता * डयिष्यते * अडयिष्यत * अडयिष्ट ॥ इस के पूर्व सदा उद् उपसर्ग रहता है ॥

१०६–पीङ्=पान, पीना

पीयते * पीयेत * पीयताम् * अपीयत * पिप्ये * पेषीष्ट * पेता * पेष्यते * अपेष्यत * अपेष्ट ॥

भाषा बनाओ

सूयते गौर्वत्सम् । दूयेत चित्तं पापेन । दीयतां पापिनः सम्पत् । उद्डीयन्त पक्षिणः । पिप्ये मधु च राक्षसः । सोषीष्ट पुत्रं तव धर्मपत्नी । दवितास्मि न पुण्यकर्मणा । दास्यन्ते पापिसम्पदः । सस्यानि अखादिष्यम् उदडयिष्यन्त पक्षिणः । अपेषातां बालौ दुग्धं यथारुचि ॥

१०७–माङ्=मान, मानना, मापना, नाप

मायते * मायेत * मायताम् * अमायत * ममे * मासीष्ट * माता * मास्यते * अमास्यत * अमास्त ॥

१०८—जनी=प्रादुर्भाव, पैदा होना, प्रकट होना, उत्पत्ति

जायते * जायेत * जायताम् * अजायत * जज्ञे—जज्ञिवहे जज्ञिमहे * जनिषीष्ट * जनिता * जनिष्यते * अजनिष्यत * अजनि, अजनिष्ट। अजनिषाताम्। अजनिषत इत्यादि॥

१०९—दीपी=दीप्ति, चमकना, प्रकाश

दीप्यते * दीप्येत * दीप्यताम् * अदीप्यत * दिदीपे * दीपिषीष्ट * दीपिता * दीपिष्यते * अदीपिष्यत * अदीपि, अदीपिष्ट। अदीपिषाताम्॥

११०—पद=गति=ज्ञान, गमन, प्राप्ति

पद्यते। पद्येत * पद्यताम् * अपद्यत * पेदे पेदाते इत्यादि * पत्सीष्ट * पत्ता * पत्स्यते * अपत्स्यत * अपादि अपत्साताम् अपत्सत इत्यादि॥

१११—विद=सत्ता, विद्यमानता, होना

विद्यते * विद्येत * विद्यताम् * अविद्यत * विविदे * वित्सीष्ट * वेत्ता * वेत्स्यते * अवेत्स्यत * अवित्त अवित्साताम् अवित्सत। अवित्थाः अवित्साथाम् अविद्ध्वम्। अवित्सि अवित्स्वहि अवित्स्महि॥

११२—बुध=अवगमन, समझना, जानना

आशीर्लिङ्—भुत्सीष्ट * लुट्—बोद्धा * लृट्—भोत्स्यते * लृङ्—अभोत्स्यत * लुङ्—अबोधि, अबुद्ध। अभुत्साताम् अभुत्सत। अबुद्धाः अभुत्साथाम् अभुद्ध्वम्। अभुत्सि अभुत्स्वहि अभुत्स्महि। शेष रूप "दीपी" धातु के तुल्य जानो॥

११३—युध=लड़ना, युद्ध करना, संग्राम

युध्यते * युध्येत * युध्यताम् * अयुध्यत * युयुधे * युत्सीष्ट * योद्धा * योत्स्यते * अयोत्स्यत * अयुद्ध॥

११४—सृज=विसर्ग, त्याग, छोड़ना

सृज्यते * सृज्येत * सृज्यताम् * असृज्यत * ससृजे ससृजाते ससृजिरे इत्यादि * सृक्षीष्ट * स्रष्टा * स्रक्ष्यते * अस्रक्ष्यत * असृष्ट असृक्षाताम् इत्यादि॥

भाषानुवाद करो—

पुत्रः पितरं मातरं च मायते (मानता है)। राजानः पृथिवीं मास्यन्ते (मापेंगे)। न कस्यापि गृहे कुपुत्रो जायेत। सूर्यवत् दीप्यतां भवान्। कर्मे-

मपद्यत । ग्रामं पेदे । धनं पत्सीष्ट भवान् विद्यां च । पत्ता भवान् श्वोऽस्य फलं कृतस्य । वेत्स्येऽहमपि अङ्कले । वादं चेदभोत्स्यत वितण्डां माऽकरिष्यत् । अयुत्सत वीराः सङ्करे । स्रुज्यते गां दाता ॥

इति आत्मनेपदिनः ॥

अथोभयपदिनः—

११५—मृष=तितिक्षा, सहना

मृष्यति । मृष्यते * मृष्येत् । मृष्येत * मृष्यतु । मृष्यताम् * अमृष्यत् । अमृष्यत * ममर्ष ममृषतुः ममृषुः । ममर्षिथ ममृषथुः ममृष । ममर्ष ममृषिव ममृषिम ॥ ममृषे ममृषाते इत्यादि * मृष्यात् ॥ मर्षिषीष्ट * मर्षिता मर्षितारौ मर्षितारः । मर्षितासि मर्षितास्थः मर्षितास्थ । मर्षितास्मि मर्षितास्वः मर्षितास्मः ॥ मर्षिता मर्षितारौ मर्षितारः । मर्षितासे मर्षितासाथे मर्षिताध्वे । मर्षिताहे मर्षितास्वहे मर्षितास्महे * मर्षिष्यति । मर्षिष्यते * अमर्षिष्यत् । अमर्षिष्यत * अमर्षीत् । अमर्षिष्ट ॥

११६—नह=बन्धन, बान्धना

नह्यति । नह्यते * नह्येत् । नह्येत * नह्यतु । नह्यताम् * अनह्यत् । अनह्यत * ननाह नेहतुः नेहुः । नेहिथ, ननद्ध नेहथुः नेह । ननाह, ननह नेहिव नेहिम ॥ नेहे नेहाते इत्यादि * नह्यात् । नत्सीष्ट * नद्धा । नद्धा * नत्स्यति । नत्स्यते * अनत्स्यत् । अनत्स्यत * अनात्सीत् अनाद्धाम् अनात्सुः । अनात्सीः अनाद्धम् अनाद्ध । अनात्सम् अनात्स्व अनात्स्म ॥ अनद्ध अनत्साताम् अनत्सत । अनद्धाः अनत्साथाम् अनद्ध्वम् । अनत्सि अनत्स्वहि अनत्स्महि ॥

भाषानुवाद करो—

मृष्यति स्वामी भृत्यानामपराधान् । नह्यते रज्जुः काष्ठानि । मृष्येत् स्तुतिनिन्दे उभे अपि साधुः । पुस्तकं सम्यक् नह्येत् छात्रः । ममृषिरे सीता रामलक्ष्मणा बहुदुःखजातानि वने ॥

इति दिवादयः

—*—

अथ स्वादिगणप्रकरणम्

तत्रोभयपदिनः-

११७-षु (ञ्)=अभिषव, अर्क खींचना

सुनोति सुनुतः सुन्वन्ति। सुनोषि सुनुथः सुनुथ। सुनोमि सुन्वः, सुनुवः सुन्मः, सुनुमः॥ सुनुते सुन्वाते सुन्वते। सुनुषे सुन्वाथे सुनुध्वे। सुन्वे सुनुवहे, सुन्वहे सुनुमहे, सुन्महे॥ सुनुयात् इत्यादि॥ सुन्वीत सुन्वीयाताम् सुन्वीरन्। सुन्वीथाः सुन्वीयाथाम् सुन्वीध्वम्। सुन्वीय सुन्वीवहि सुन्वीमहि॥ सुनोतु, सुनुतात् सुनुताम् सुन्वन्तु। सुनु, सुनुतात् सुनुतम् सुनुत। सुनवानि सुनवाव सुनवाम॥ सुनुताम् सुन्वाताम् सुन्वताम्। सुनुष्व सुन्वाथाम् सुनुध्वम्। सुनवै सुनवावहै सुनवामहै॥ असुनोत् असुनुताम् असुन्वन्। असुनोः असुनुतम् असुनुत। असुनवम् असुन्व, असुनुव असुन्म, असुनुम॥ असुनुत असुन्वाताम् असुन्वत। असुनुथाः असुन्वाथाम् असुनुध्वम्। असुन्वि असुन्वहि, असुनुवहि असुन्महि, असुनुमहि॥ सुषाव सुषुवतुः सुषुवुः। सुषविथ, सुषोथ सुषुवथुः सुषुव। सुषाव, सुषव सुषुविव सुषुविम॥ सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे। सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविध्वे। सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे॥ सूयात्। सोषीष्ट॥ सोता। सोता॥ सोष्यति। सोष्यते॥ असोष्यत्। असोष्यत॥ असावीत् असाविष्टाम् असाविषुः। असावीः असाविष्टम् असाविष्ट। असाविषम् असाविष्व असाविष्म॥ असोष्ट असोषाताम् असोषत। असोष्ठाः असोषाथाम् असोढ्वम्। असोषि असोष्वहि असोष्महि॥

११८-चि (ञ्)=चयन, चुनना

चिनोति चिनुतः इत्यादि। चिनुते चिन्वाते इत्यादि॥ चिनुयात्। चिन्वीत॥ चिनोतु। चिनुताम्॥ अचिनोत्। अचिनुत॥ चिचाय चिच्यतुः चिच्युः। चिचयिथ, चिचेथ चिच्यथुः चिच्य। चिचाय, चिचय चिच्यिव चिच्यिम॥ अथवा-चिकाय चिक्यतुः इत्यादि। चिच्ये चिच्याते वा-चिक्ये चिक्याते इत्यादि॥ चीयात्। चेषीष्ट॥ चेता। चेता॥ चेष्यति। चेष्यते॥ अचेष्यत्। अचेष्यत॥ अचैषीत् अचैष्टाम् अचैषुः। अचैषीः अचैष्टम् अचैष्ट। अचैषम् अचैष्व अचैष्म। अचेष्ट अचेषाताम् अचेषत। अचेष्ठाः अचेषाथाम् अचेढ्वम्। अचेषि अचेष्वहि अचेष्महि॥

११९–स्तृ (ञ्)=आच्छादन, ढकना

स्तृणोति । स्तृणुते ॥ स्तृणुयात् । स्तृण्वीत ॥ स्तृणोतु । स्तृणुताम् ॥ अस्तृणोत् । अस्तृणुत ॥ तस्तार तस्तरतुः तस्तरुः । तस्तरिथ, तस्तर्थ तस्तरथुः तस्तर । तस्तार, तस्तर तस्तरिव तस्तरिम ॥ तस्तरे तस्तराते तस्तरिरे । तस्तरिषे इत्यादि ॥ स्तर्यात् इत्यादि । स्तृषीष्ट इत्यादि वा–स्तरिषीष्ट इत्यादि ॥ स्तर्ता । स्तर्ता ॥ स्तरिष्यति । स्तरिष्यते ॥ अस्तरिष्यत् । अस्तरिष्यत ॥ अस्तार्षीत् अस्तार्ष्टाम् अस्तार्षुः । अस्तार्षीः अस्तार्ष्टम् अस्तार्ष्ट । अस्तार्षम् अस्तार्ष्व अस्तार्ष्म ॥ अस्तरिष्ट अस्तरिषाताम् अस्तरिषत । अस्तरिष्ठाः अस्तरिषाथाम् अस्तरिध्वम् । अस्तरिषि अस्तरिष्वहि अस्तरिष्महि ॥ अथवा–अस्तृत अस्तृषाताम् अस्तृषत । अस्तृथाः अस्तृषाथाम् अस्तृढ्वम् । अस्तृषि अस्तृष्वहि अस्तृष्महि ॥

१२०–धू (ञ्)=कम्पन, कांपना वा कम्पाना

धूनोति । धूनुते ॥ धूनुयात् । धून्वीत ॥ धूनोतु । धूनुताम् ॥ अधूनोत् । अधूनुत ॥ दुधाव दुधुवतुः दुधुवुः । दुधविथ, दुधोथ दुधुवथुः दुधुव दुधाव, दुधव दुधुविव दुधुविम । दुधुवे दुधुवाते इत्यादि ॥ धूयात् । धोषीष्ट इत्यादि वा धविषीष्ट इत्यादि ॥ धोता वा–धविता ॥ धोष्यति, धविष्यति । धोष्यते, धविष्यते ॥ अधोष्यत, अधविष्यत् । अधोष्यत, अधविष्यत ॥ अधौषीत् वा–अधावीत् अधाविष्टाम् अधाविषुः इत्यादि ॥ अधविष्ट, अधोष्ट इत्यादि दो दो रूप जानो ॥

भाषा बनाओ–

अध्वर्युः सोमं सुनोति यज्ञाय । किमर्थं दशमूलानि सुनुषे ? । ज्वरितः पर्पटं सुनुयात् पिबेच्च (पर्पट=पित्तपापड़ा नामक ओषधि का नाम है) चिनुयादिष्टका वेद्याम् । स्तृणुयात्कुशैर्मण्डपम् । धूनोति चम्पकवनानि वायुः । सुषुवे वैद्य ओषधीः । चिकाय भित्तिम्मञ्जर्ती चमूपः । अचैष्म यज्ञे समिधः समन्तात् । स्तृषीष्ठा यशसा दिवम् । इत्यादि ॥

संस्कृत बनाओ–

मैंने तुम्हारे लिये पञ्चमूल का अर्क खींचा है । तुम अपने लिये मकान बनाओ । वृक्ष को हिलाओ फल गिरेंगे । कर्मकार भींत को चिनते हैं । हम सोम का अर्क खींचेंगे, उस से दीर्घजीवी होवेंगे । रक्षक चोर को बांधता है ।

महात्मा लोग सुख और दुःख दोनों को सहते हैं । वे दुःख में अधीर नहीं होते और सुख में प्रमाद नहीं करते । शिष्य गुरु को मानते हैं । दरजी कपड़ा सींता है । पाप अवश्य प्रकट होते हैं, तथा पुण्य भी । विद्यार्थियो ! आपस में मत लड़ो । आलस्य छोड़ो । द्वन्द्व सहो । अर्थ समझो । शिखा बान्धो । गुडूची का अर्क खींचो । पुष्प चुनो और ऐसे ही सद्गुण चुनो । अपगुण त्यागो । देह को ढको । पांव मत हिलाओ । इत्यादि ॥

इति तिङन्ते स्वादिगणप्रकणम्

अथ तिङन्ते तुदादयः ॥ तत्रोभयपदिनः-

१२१-तुद=व्यथन, चुभाना

तुदति । तुदते ॥ तुदेत् । तुदेत ॥ तुदतु । तुदताम् ॥ अतुदत् । अतुदत ॥ तुतोद तुतुदतुः इत्यादि ॥ तुतुदे तुतुदाते इत्यादि ॥ तुद्यात् । तुत्सीष्ट ॥ तोत्ता । तोत्ता ॥ तोत्स्यति । तोत्स्यते ॥ अतोत्स्यत् । अतोत्स्यत ॥ अतौत्सीत् अतौत्ताम् अतौत्सुः । अतौत्सीः इत्यादि ॥ अतुत्त अतुत्साताम् अतुत्सत । अतुत्थाः अतुत्साथाम् अतुद्ध्वम् । अतुत्सि अतुत्स्वहि अतुत्स्महि ॥

१२२-णुद=प्रेरणा करना, उकसाना

नुदति इत्यादि "तुद" के तुल्य जानो ॥

१२३-भ्रस्ज=पकाना, पाक, भूनना

भृज्जति । भृज्जते ॥ भृज्जेत् । भृज्जेत ॥ भृज्जतु । भृज्जताम् । अभृज्जत् । अभृज्जत ॥ बभर्ज बभर्जतुः बभर्जुः । बभर्जिथ, बभर्ष्ठ बभर्जथुः बभर्ज । बभर्ज बभर्जिव बभर्जिम ॥ अथवा-बभ्रज्ज बभ्रज्जतुः बभ्रज्जुः । बभ्रज्जिथ, बभ्रष्ठ बभ्रज्जथुः बभ्रज्ज । बभ्रज्ज बभ्रज्जिव बभ्रज्जिम ॥ बभर्जे बभर्जाते इत्यादि । अथवा-बभ्रज्जे बभ्रज्जाते इत्यादि ॥ भृज्ज्यात् भृज्ज्यास्ताम् इत्यादि ॥ भ्रक्षीष्ट वा-भर्क्षीष्ट इत्यादि ॥ भर्ष्टा वा-भ्रष्टा ॥ भ्रक्ष्यति, भर्क्ष्यति । भ्रक्ष्यते, भर्क्ष्यते ॥ अभ्रक्ष्यत्, अभर्क्ष्यत् ॥ अभ्रक्ष्यत, अभर्क्ष्यत ॥ अभ्राक्षीत्, अभार्क्षीत् । अभ्रष्ट अभ्रक्षाताम् इत्यादि वा-अभर्ष्ट अभर्क्षाताम् अभर्क्षत । अभर्ष्ठाः अभर्क्षाथाम् अभर्ड्ढ्वम् । अभर्क्षि अभर्क्ष्वहि अभर्क्ष्महि ॥

१२४-कृष=विलेखन, खोदना, हलकर्म, जोतना

कर्षति । कृषते ॥ कृषेत् । कृषेत ॥ कृषतु । कृषताम् ॥ अकृषत् । अकृषत ॥ चकर्ष चकृषतुः चकृषुः । चकर्षिथ, चकर्ष्ठ चकृषथुः चकृष । चकर्ष चकृषिव चकृषिम ॥ चकृषे चकृषाते चकृषिरे इत्यादि ॥ कृष्यात् । कृक्षीष्ट ॥ क्रष्टा वा-कर्ष्टा ॥ क्रक्ष्यति वा-कर्क्ष्यति । क्रक्ष्यते, कर्क्ष्यते ॥ अक्रक्ष्यत्, अकर्क्ष्यत् । अक्रक्ष्यत, अकर्क्ष्यत ॥ अक्राक्षीत् अक्राष्टाम् अक्राक्षुः । अक्राक्षीः अक्राष्टम् अक्राष्ट । अक्राक्षम् अक्राक्ष्व अक्राक्ष्म ॥ अथवा-अकार्क्षीत् अकार्ष्टाम् इत्यादि ॥ अकृष्ट अकृक्षाताम् अकृक्षत । अकृष्ठाः अकृक्षाथाम् अकृढ्वम् । अकृक्षि अकृक्ष्वहि अकृक्ष्महि । अथवा-अकृक्षत अकृक्षाताम् अकृक्षन्त । अकृक्षथाः इत्यादि ॥

१२५-मिल=सङ्गम, मिलना

मिलति । मिलते ॥ मिलेत् । मिलेत ॥ मिलतु । मिलताम् ॥ अमिलत् । अमिलत ॥ मिमेल मिमिलतुः । इत्यादि ॥ मिमिले मिमिलाते इत्यादि ॥ मिल्यात् । मेलिषीष्ट ॥ मेलिता । मेलिता ॥ मेलिष्यति । मेलिष्यते ॥ अमेलिष्यत् । अमेलिष्यत ॥ अमेलीत् अमेलिष्टाम् अमेलिषुः । अमेलीः इत्यादि ॥ अमेलिष्ट अमेलिषाताम् अमेलिषत । अमेलिष्ठाः इत्यादि ॥

भाषा बनाओ-

हस्तिपोऽङ्कुशेन हस्तिमस्तकं तुदति । तुदन्ति बाणा मर्मस्थाः । तुतुदे रावणबाहिनीं स रामः । न तुदेत परस्य मर्मगूढम् । तुत्सीष्ट शत्रुहृदयानि नृपः । अश्वं नुदति । चणकं भृज्जति । क्षेत्रं कृषति । मित्रेण मिलति । रामरावणयोर्युद्धे रामोऽतौत्सीद्रिपोर्मर्म । बभ्रज्जे तपसा पापम् । स चकर्ष महीमेताम् । श्वो मेलितास्मि । प्रातर्मेलितास्महे । क्षेत्रं तावत् सम्यक् कृषेत तदनु बीजं वपेत् ॥

संस्कृत बनाओ-

किसी का हृदय मत दुखाओ । संसार को धर्म में प्रेरणा करो । खेत को अच्छे प्रकार खोदो (जोतो) । सब से प्रीति से मिलो । दुष्ट ! तेरा हृदय बाण से बींध दूंगा । यदि गुरु भी पाप में प्रेरणा करे तो मत मानो ॥

१२६-मुच् (लृ) मोचन, छोड़ना

मुञ्चति । मुञ्चते ॥ मुञ्चेत् । मुञ्चेत ॥ मुञ्चतु । मुञ्चताम् ॥ अमुञ्चत् । अमुञ्चत ॥ मुमोच मुमुचतुः । मुमुचे ॥ मुच्यात् । मुक्षीष्ट ॥ मोक्ता । मोक्ता ॥

मोक्ष्यति । मोक्ष्यते ॥ अमोक्ष्यत् । अमोक्ष्यत ॥ अमुचत् अमुचताम् अमुचन् । अमुचः इत्यादि ॥ अमुक्त अमुक्षाताम् अमुक्षत । अमुक्थाः अमुक्षाथाम् अमुग्ध्वम् । अमुक्षि अमुक्ष्वहि अमुक्ष्महि ॥

१२७–लुप् (लृ)=छेदन, काटना

लुम्पति । लुम्पते ॥ लुम्पेत । लुम्पेत ॥ लुम्पतु । लुम्पताम् ॥ अलुम्पत् । अलुम्पत ॥ लुलोप । लुलुपे ॥ लुप्यात् । लुप्सीष्ट ॥ लोप्ता । लोप्ता ॥ लोप्स्यति । लोप्स्यते ॥ अलोप्स्यत् । अलोप्स्यत ॥ अलुपत् ॥ अलुप्त अलुप्साताम् अलुप्सत । अलुप्थाः अलुप्साथाम् अलुब्ध्वम् इत्यादि ॥

१२८–विद्लृ (लृ)=लाभ, लेना, पाना

विन्दति । विन्दते ॥ लिट्–विवेद । विविदे ॥ विद्यात् । वित्सीष्ट ॥ वेत्ता । वेत्ता ॥ वेत्स्यति । वेत्स्यते ॥ लुङ्–अविदत् । अवित्त अवित्साताम् इत्यादि ॥ किन्हीं के मत में–वेदिषीष्ट ॥ वेदिता ॥ वेदिष्यति ॥ अवेदिष्यत् ॥ अवेदीत् । अवेदिष्ट इत्यादि प्रकार से भी प्रयोग होता है ॥

१२९–षिच=क्षरण, बखेरना, टपकाना, चुआना वा सींचना

सिञ्चति इत्यादि ॥ सिषेच ॥ सिच्यात् । सिक्षीष्ट ॥ सेक्ता ॥ सेक्ष्यति इत्यादि ॥ असिचत् । असिक्त असिक्षाताम् इत्यादि ॥

१३०–लिप=उपदेह, लीपना, पोतना, देह बढ़ाना

लिम्पति इत्यादि (१२७) " लुप् " के तुल्य जानो ॥

भाषा बनाओ–

हठं मुञ्च । क्षेत्रं लुम्प । विद्यां विन्द । वृक्षवाटिकां सिञ्चध्वम् । वेदिं लिम्पताम् । मोक्ष्यामि गृहबन्धनात् । मोक्ष्ये निगडबन्धनात् (निगड=जेल) । लुलुपे पुस्तकानि मूषकः । कृतस्य विन्दते फलम् । वारिदोऽयं सेक्ष्यति सकलं भारतं वर्षम्, तदा सुभिक्षं वेत्स्यामहे । तैलेन लिम्पति देहं मल्लः ॥

संस्कृत बनाओ–

हठ छोड़ो । मूर्खता के जाल को छेदो (काटो) । पूर्व कर्मों का फल पाओ । आंगन लीपो (आंगन=अङ्गण=स्थानादि का सहन) खेत सींचो । घृत टपकाओ मत । दूध मत बखेरो । यह अमृत है ॥

इत्युभयपदप्रकरणम् ॥

अथ परस्मैपदिनः-

१३१-कृती=छेदन, कृन्तन, काटना

कृन्तति ॥ कृन्तेत् ॥ कृन्ततु ॥ अकृन्तत् ॥ चकर्त्त चकृततुः चकृतुः । चकर्तिथ चकृतथुः चकृत । चकर्त्त चकृतिव चकृतिम ॥ कृत्यात् ॥ कर्तिता ॥ कर्तिष्यति ॥ अकर्तिष्यत् ॥ अकर्त्तीत् अकर्तिष्टाम् अकर्तिषुः । अकर्त्तीः इत्यादि ॥

१३२-खिद्=दुःख पाना, खेद, कष्ट

खिन्दति इत्यादि ॥ चिखेद चिखिदतुः इत्यादि ॥ खिद्यात् ॥ खेत्ता ॥ खेत्स्यति ॥ अखेत्स्यत् ॥ अखैत्सीत् अखैत्ताम् अखैत्सुः । अखैत्सीः अखैत्तम् अखैत्त । अखैत्सम् अखैत्स्व अखैत्स्म ॥

१३३-पिश=अवयव, टुकड़े करना, पीसना

पिंशति ॥ पिंशेत् ॥ पिंशतु ॥ अपिंशत् ॥ पिपेश ॥ पिश्यात् ॥ पेशिता ॥ पेशिष्यति ॥ अपेशिष्यत् ॥ अपेशीत् ॥

१३४-(ओ) व्रश्चू=छेदन, काटना

वृश्चति ॥ वृश्चेत् ॥ वृश्चतु ॥ अवृश्चत् ॥ वव्रश्च वव्रश्चतुः वव्रश्चुः । वव्रश्चिथ, वव्रष्ठ वव्रश्चथुः वव्रश्च । वव्रश्च वव्रश्चिव वव्रश्चिम ॥ व्रश्च्यात् ॥ व्रश्चिता, व्रष्टा ॥ व्रश्चिष्यति, व्रक्ष्यति ॥ अव्रश्चिष्यत्, अव्रक्ष्यत् ॥ अव्रश्चीत् ॥

१३५-व्यच=व्याजीकरण, बहानेबाज़ी, ठगई

विचति ॥ विचेत् ॥ विचतु ॥ अविचत् ॥ विव्याच विविचतुः विविचुः । विव्यचिथ विविचथुः विविच । विव्याच, विव्यच विविचिव विविचिम ॥ विच्यात् ॥ व्यचिता ॥ व्यचिष्यति ॥ अव्यचिष्यत् ॥ अव्याचीत्, अव्यचीत् ॥

भाषानुवाद करो-

चणकं पिंशति वृद्धा । पापेन खिन्दति लोकः । वृश्चिको मनुष्यं पादे वृश्चति (वृश्चिक=बिच्छू) । विचति खलः पथिकान् । कृन्तति मूलं वृक्षस्य तक्षकः (बढ़ई) इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो-

बुढ़िया गोधूम पीसती थी । पापी दुःख पाते हैं । बिच्छू अङ्गुली में काटता है । धूर्त्त बहकाता था । दुष्ट का शिर काटो । मित्र से स्नेह करो । इत्यादि ॥

१३६-उछि=उञ्छ, शिला चुगना

उञ्छति ॥ उञ्छेत् ॥ उञ्छतु ॥ औञ्छत् ॥ उञ्छाञ्चकार उञ्छाञ्चक्रतुः इत्यादि वा उञ्छामास उञ्छामासतुः वा-उञ्छाम्बभूव उञ्छाम्बभूवतुः इत्यादि॥ उञ्छ्यात् ॥ उञ्छिता ॥ उञ्छिष्यति ॥ औञ्छिष्यत् ॥ औञ्छीत् ॥

१३७=ऋच्छ=गति, मूर्च्छा, मूर्त्तिभाव, अचेतनता

ऋच्छति ॥ ऋच्छेत् ॥ ऋच्छतु ॥ आर्च्छत् ॥ आनर्च्छ आनर्च्छतुः आनर्च्छुः आनर्च्छिथ आनर्च्छथुः आनर्च्छ । आनर्च्छ आनर्च्छिव आनर्च्छिम ॥ ऋच्छ्यात् ॥ ऋच्छिता ॥ ऋच्छिष्यति ॥ आर्च्छिष्यत् ॥ आर्च्छीत् ॥

१३८-उज्झ=त्याग, छोड़ना, उत्सर्ग

उज्झति ॥ उज्झेत् ॥ उज्झतु ॥ औज्झत् ॥ उज्झाञ्चकार, उज्झामास, उज्झाम्बभूव ॥ उज्झ्यात् ॥ उज्झिता ॥ उज्झिष्यति ॥ औज्झिष्यत् ॥ औज्झीत् ॥

१३९-लुभ=लुभाना, मोहित होना

लुभति ॥ लुभेत् ॥ लुभतु ॥ अलुभत् ॥ लुलोभ लुलुभतुः लुलुभुः । लुलोभिथ लुलुभथुः लुलुभ । लुलोभ, लुलुभ लुलुभिव लुलुभिम ॥ लुभ्यात् ॥ लोभिता, लोब्धा ॥ लोभिष्यति, लोप्स्यति ॥ अलोभिष्यत्, अलोप्स्यत् ॥ अलोभीत् ॥

१४० । १४१ तृप, तृम्फ=तृप्ति, तृप्त होना

तृपति ॥ तृपेत् ॥ तृपतु ॥ अतृपत् ॥ ततर्प ततृपतुः ॥ तृप्यात् ॥ तर्पिता ॥ तर्पिष्यति ॥ अतर्पिष्यत् ॥ अतर्पीत् ॥ तृम्फति इत्यादि ॥ ततृम्फ ततृम्फतुः शेष " तृप " के तुल्य हैं ॥

१४२ । १४३-मृड, पृड=सुखी होना, सुखपाना

मृडति ॥ मृडेत् ॥ मृडतु ॥ अमृडत् ॥ ममर्ड ममृडतुः ॥ मृड्यात् ॥ मर्डिता ॥ मर्डिष्यति ॥ अमर्डिष्यत् ॥ अमर्डीत् ॥ इसी प्रकार " पृड " ॥

१४४-शुन=गति-ज्ञान, गमन, प्राप्ति

शुनति ॥ शुनेत् ॥ शुनतु ॥ अशुनत् ॥ शुशोन शुशुनतुः ॥ शुन्यात् ॥ शोनिता ॥ शोनिष्यति ॥ अशोनिष्यत् ॥ अशोनीत् ॥

१४५—इषु=इच्छा, चाहना

इच्छति ॥ इच्छेत् ॥ इच्छतु ॥ ऐच्छत् ॥ इयेष । ईषतुः ॥ इष्यात् ॥ एषिता, एष्टा ॥ एषिष्यति ॥ ऐषिष्यत् ॥ ऐषीत् ॥

भाषानुवाद करो

ऋषय उञ्छन्ति स्म । ग्राममृच्छति पान्थः । ऋच्छति रोगी । जानर्छ शस्त्रपातेन । उज्झति जलम् । लुभति परधनं दृष्ट्वा पापीयान् । तृपन्ति ब्राह्मणाः यजमानगृहे । तृम्फन्ति भिक्षुका उदरपूर्तिमात्रेण । मृडति सत्यपथ्या लोकः । पृडति ज्ञानेन तत्त्ववित् । ग्रामं शुनति । अर्थं शुनेत् । वेदान् शुनतु ब्राह्मणाः । धनमिच्छन्ति लोलुपाः । इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो

कणाद ऋषि शिला चुगता था । उस से ही तृप्त होता था और वैशेषिक दर्शन को बनाता था (समउपादीत्) । राहगीर (पथिक) चीन को जाता है । बाण से मूर्छित होता है । लोभ को त्यागो । विद्या और धर्म को लुभाओ । अपने ही पदार्थों मे तृप्त होओ । जो पराम्न और परधन से तृप्त होते हैं वे पुरुषार्थहीन होते हैं, दुःख पाते हैं, सुखी कभी नहीं होते । वेदार्थ को जानो, इस लोक और परलोक में सुखी होओगे । यश और धर्म को चाहो । इत्यादि ॥

अथ तुदाद्यन्तर्गताः कुटादयः

१४६—कुट=कुटिलपना, कौटिल्य, खोटाई

कुटति ॥ कुटेत् ॥ कुटतु ॥ अकुटत् ॥ चुकोट चुकुटतुः चुकुटुः । चुकुटिथ चुकुटथुः चुकुट । चुकोट, चुकुट चुकुटिव चुकुटिम ॥ कुटयात् ॥ कुटिता ॥ कुटिष्यति ॥ अकुटिष्यत् ॥ अकुटीत् ॥

१४७—पुट—=संश्लेषण, चिपटना, चिपटाना

१४८—स्फुर=विकसन, फटना, खिलना

१४९—स्फुर=संचलन, फुरकना, चलना

१५०—स्फुल ” ” ”

इन सब के रूप " कुट " के तुल्य जानो । परन्तु निर्, नि और वि से आगे इन धातुओं का सकार मूर्धन्य (ष) भी हो जाता है । जैसे—निष्फुलति निस्फुलति । निष्फुरति, निस्फुरति इत्यादि ॥

१५१–णू=स्तुति, प्रशंसा करना

नुवति ॥ नुवेत् ॥ नुवतु ॥ अनुवत् ॥ नुनाव नुनुवतुः नुनुवुः । नुनविथ नुनुवथुः नुनुव । नुनाव, नुनव नुनुविव नुनुविम ॥ नूयात् ॥ नुविता ॥ नुविष्यति ॥ अनुविष्यत् ॥ अनुवीत् ॥

इति कुटादयः

१५२–(टु) मस्जो=शुद्ध करना वा मांजना

मज्जति ॥ मज्जेत् ॥ मज्जतु ॥ अमज्जत् ॥ ममज्ज ममज्जतुः ममज्जुः । ममज्जिथ ममज्जथुः ममज्ज । ममज्ज ममज्जिव ममज्जिम ॥ मज्ज्यात् ॥ मङ्क्ता ॥ मङ्क्ष्यति ॥ अमङ्क्ष्यत् ॥ अमाङ्क्षीत् अमाङ्क्ताम् अमाङ्क्षुः । अमाङ्क्षीः अमाङ्क्तम् अमाङ्क्त । अमाङ्क्षम् अमाङ्क्ष्व अमाङ्क्ष्म ॥

१५३–रुजो=भङ्ग होना, टूटना, ख़राबी

रुजति इत्यादि ॥ रुरोज रुरुजतुः ॥ रुज्यात् ॥ रोक्ता ॥ रोक्ष्यति ॥ अरोक्ष्यत् ॥ अरौक्षीत् अरौक्ताम् अरौक्षुः । अरौक्षीः अरौक्तम् अरौक्त ॥ अरौक्षम् अरौक्ष्व अरौक्ष्म ॥

१५४–भुजो=कौटिल्य, खोटापन, कुटिलता

भुजति इत्यादि " रुज " के तुल्य रूप जानो ॥

भाषानुवाद करो–

कुटन्ति वेश्याः । पुटति घृतं शिरसा तैलं वा । स्फुटन्ति पुष्पाणि वसन्ते । स्फुरति रुधिरं नाडीषु । स्फुलन्ति मण्डूकाः सरस्सु । नुवत परमात्मानं सर्वदा स एकोगुरुः सर्वस्य । उपास्यश्च स एव । निमज्जत प्रातः प्रातर्नित्यं जलाशयेषु । देहो रुजति पीडया । भुजति सर्पः इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो–

मूर्ख कुटिलता करते हैं । कज्जल वस्त्र पर लिपट जाता है । आम बौरते हैं । अङ्ग फुरकते हैं । आंख फुरकती है । धर्मात्मा लोग परमात्मा की स्तुति करते हैं । प्रातःकाल नित्य जलाशय में देह शुद्ध करे । शिर दुखता है । सर्प गण्डलाते हैं । इत्यादि ॥

१५५—विश=प्रवेश, घुसना

विशति ॥ विशेत् ॥ विशतु ॥ अविशत् ॥ विवेश विविशतुः विविशुः । विवेशिथ विविशथुः विविश । विवेश विविशिव विविशिम ॥ विश्यात् ॥ वेष्टा ॥ वेक्ष्यति ॥ अवेक्ष्यत् ॥ अवेक्षीत् ॥

१५६—मृश=आमर्शन, छूना, स्पर्श करना

मृशति इत्यादि ॥ ममर्श ममृशतुः ॥ मृश्यात् ॥ म्रष्टा, मर्ष्टा ॥ म्रक्ष्यति, मर्क्ष्यति ॥ अम्रक्ष्यत्, अमर्क्ष्यत् ॥ अम्राक्षीत्, । अमार्क्षीत् । अम्राष्टाम्, अमार्ष्टाम् । अम्राक्षुः, अमार्क्षुः इत्यादि ॥ अथवा—अमृक्षत् अमृक्षताम् अमृक्षन् । अमृक्षः इत्यादि ॥

१५७—षद्लृ (ऌ) विशरण=बिखरना । गति=ज्ञान, गमन, प्राप्ति । दुःखी होना ॥

सीदति ॥ सीदेत् ॥ सीदतु ॥ असीदत् ॥ ससाद सेदतुः सेदुः । सेदिथ सेदथुः सेद । ससाद, ससद सेदिव सेदिम ॥ सद्यात् ॥ सत्ता ॥ सत्स्यति ॥ असत्स्यत् ॥ असदत् असदताम् ॥

१५८—शद्लृ (ऌ)=शातन, बिखरना, विशीर्ण होना

यह धातु लट्, लिङ्, लोट् और लङ् में आत्मनेपदी है, आगे परस्मैपदी ॥ शीयते शीयेते शीयन्ते । शीयसे ॥ शीयेत शीयेयाताम् ॥ शीयताम् शीयेताम् ॥ शीयन्ताम् ॥ अशीयत अशीयेताम् अशीयन्त । अशीयथाः ॥ शशाद शेदतुः ॥ शद्यात् ॥ शत्ता ॥ शत्स्यति ॥ अशत्स्यत् ॥ अशदत् ॥

१५९—कॄ=विक्षेप, बखेरना

किरति ॥ किरेत् ॥ किरतु ॥ अकिरत् ॥ चकार ॥ चकरतुः चकरुः । चकरिथ चकरथुः चकर । चकार, चकर चकरिव चकरिम । कीर्यात् ॥ करिता, करीता ॥ करिष्यति, करीष्यति ॥ अकरिष्यत्, अकरीष्यत् ॥ अकारीत् अकारिष्टाम् ॥

"उप" उपसर्ग से परे कॄ धातु हो तो छेदन अर्थ में—उपस्किरति ॥ उपस्किरेत् ॥ उपस्किरतु ॥ उपास्किरत् ॥ तथा—उपचस्कार इत्यादि सकार-युक्त प्रयोग होते हैं ॥

"उप" और "प्रति" उपसर्ग से परे भी कॄ धातु के रूप हिंसा अर्थ में—प्रतिस्किरति ॥ प्रतिस्किरेत् ॥ प्रतिस्किरतु ॥ प्रत्यस्किरत् ॥ प्रतिचस्कार इत्यादि प्रकार से ही होते हैं ॥

१६०-गॄ=निगरण, निगलना

गिरति, गिलति * गिरेत, गिलेत * गिरतु, गिलतु * अगिरत, अगिलत * जगार, जगाल । जगरतुः, जगलतुः इत्यादि * गीर्यात्, गिल्यात् * गरिता, गरीता, गलिता, गलीता * गरिष्यति, गरीष्यति, गलिष्यति, गलीष्यति * अगरिष्यत्, अगलिष्यत्, अगरीष्यत्, अगलीष्यत् * अगारीत्, अगालीत् ॥

१६१-प्रच्छ=पूछना, ज्ञीप्सा, जानने की इच्छा

पृच्छति * पृच्छेत् * पृच्छतु * अपृच्छत् * पप्रच्छ पप्रच्छतुः पप्रच्छुः । पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ पप्रच्छथुः * प्रच्छ्यात् * प्रष्टा * प्रक्ष्यति * अप्रक्ष्यत् * अप्राक्षीत् अप्राष्टाम् अप्राक्षुः । अप्राक्षीः ॥

भाषानुवाद करो-

घृतं मृशति तदनु क्षुध्यति । अन्नं मीदति । अन्नं विना सीदति लोकोऽनावृष्टौ । क्षेदुः शिरांसि रणे वीराणाम् । किरति सर्षपम्=सरसों को । उपस्किरति कण्टकं पादम् । उपस्किरति माणवकं व्याघ्रः । प्रतिचस्करुर्नरा बालम् । उरोविदारं (पेट फाड़ कर) प्रतिचस्करे नखैः । [आत्मनेपदप्रयोगोऽपि दृश्यते] गिरति नक्रो बालम् । माणवकं पन्थानं पृच्छति । पृच्छ धातु के दो कर्म होने से द्विकर्मक कहाता है ॥

संस्कृतानुवाद करो-

जल को छुओ । क्षेत्र में बीज बखेरो । चित्त में मत कुढ़ो । दुग्ध मत बखेरो । मित्र को मत मारो । तुम साधु हो । बन्धन काटो । सिंह वन्य पशुओं को मारता है और खाता है, तथा मनुष्य को भी । सर्प मण्डूक को निगलता है । गुरु से धर्म पूछो, इत्यादि ॥

इति परस्मैपदिनः । अथात्मनेपदिनः-

१६२--मृ (ङ्)=प्राणत्याग, मरना

इस धातु के रूप भी प्रथम ४ लकारों में आत्मनेपदस्थ होते हैं, आगे परस्मैपदस्थ । म्रियते * म्रियेत * म्रियताम् * अम्रियत * ममार मम्रतुः मम्रुः । ममर्थ * म्रियात् * मर्ता * मरिष्यति * अमरिष्यत् * लुङ् में भी आत्मनेपद होता है । जैसे-अमृत अमृषाताम् अमृषत । अमृथाः अमृषाथाम् अमृढ्वम् । अमृषि अमृष्वहि अमृष्महि ॥

१६३-पृ (ङ्)=व्यायाम, व्यापार, काम करना

यह धातु विशेष करके व्या (ङ्) पूर्वक रहता है। जैसे-व्याप्रियते * व्याप्रियेत * व्याप्रियताम् * व्याप्रियत * व्यापप्रे व्यापप्राते व्यापप्रिरे * व्यापृषीष्ट * व्यापर्त्ता * व्यापरिष्यते * व्यापरिष्यत * व्यापृत व्यापृषाताम् ॥

१६४—जुषी=प्रीति और सेवा करना

जुषते * जुषेत * जुषताम् * अजुषत * जुजुषे * जोषिषीष्ट * जोषिता जोषिष्यते * अजोषिष्यत * अजोषिष्ट अजोषिषाताम् अजोषिषत। अजोषिष्ठाः अजोषिषाथाम् इत्यादि ॥

१६५-(ओ) विजी=भय और चलना

प्रायः यह धातु "उत" उपसर्गपूर्वक रहता है॥ उद्विजते * उद्विजेत * उद्विजताम् * उदविजत * उद्विविजे * उद्विजिषीष्ट * उद्विजिता * उद्विजिष्यते * उदविजिष्यत * उदविजिष्ट उदविजिषाताम् उदविजिषत। उदविजिष्ठाः उदविजिषाथाम् इत्यादि ॥

भाषानुवाद करो

म्रियन्ते रोगिणः। व्याप्रियते वैश्यः। धर्मं जुषते। भार्यां जुषते। उद्विजते हृदयं दुरात्मनः। इत्यादि ॥

संस्कृत बनाओ

निर्धन अन्न विना मरते हैं। धनी रोगों से मरते हैं। मैं दिन और रात्रि में भी काम करता हूं। तुम सत्य को सेवन करो और मैं भी सेवन करूं। मेरा हृदय पाप से डरता है। इत्यादि ॥

इति तुदादिगणप्रकरणम्

—:※:—

अथ तिङन्ते रुधादिगणप्रकरणम्

तत्रोभयपदिनः—

१६६—रुधिर्=आवरण, छादन, रोकना, ढकना

लट्—रुणद्धि रुन्द्धः रुन्धन्ति। रुणत्सि रुन्द्धः रुन्द्ध। रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः॥ रुन्द्धे रुन्धाते रुन्धते। रुन्त्से रुन्धाथे रुन्द्ध्वे। रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे * लिङ्—रुन्ध्यात्॥ रुन्धीत * लोट्—रुणद्धु, रुन्द्धात् रुन्धाम्

रुन्धन्तु। रुन्धि, रुन्द्धात् रुन्द्धम् रुन्द्ध। रुणधानि रुणधाव रुणधाम॥ रुन्द्धाम् रुन्धाताम् रुन्धताम्। रुन्त्स्व रुन्धाथाम् रुन्द्ध्वम्। रुणधै रुणधावहै रुणधामहै * लङ्–अरुणत् अरुन्द्धाम् अरुन्धन्। अरुणत्, अरुणः अरुन्द्धम् अरुन्द्ध। अरुणधम्। अरुन्ध्व अरुन्ध्म॥ अरुन्द्ध अरुन्धाताम् अरुन्धत। अरुन्द्धाः अरुन्धाथाम् अरुन्द्ध्वम्। अरुन्धि अरुन्ध्वहि अरुन्ध्महि * लिट्–रुरोध रुरुधतुः रुरुधुः। रुरोधिथ, रुरोद्ध रुरुधथुः रुरुध। रुरोध रुरुधिव रुरुधिम॥ रुरुधे रुरुधाते रुरुधिरे इत्यादि * आशीर्लिङ्–रुध्यात्॥ रुत्सीष्ट * लुट्–रोद्धा। रोद्धा * लृट्–रोत्स्यति। रोत्स्यते * लृङ्–अरोत्स्यत्। अरोत्स्यत * लुङ्–अरौत्सीत् अरौद्धाम् अरौत्सुः। अरौत्सीः अरौद्धम् अरौद्ध। अरौत्सम् अरौत्स्व अरौत्स्म॥ अथवा–अरुधत् अरुधताम् अरुधन्। अरुधः इत्यादि॥ अरुद्ध अरुत्साताम् अरुत्सत। इत्यादि॥

१६७–भिदिर्=विदारण, फाड़ना, चीरना

भिनत्ति भिन्तः भिन्दन्ति। भिनत्सि इत्यादि * भिन्ते भिन्दाते भिन्दते। भिन्त्से भिन्दाथे भिन्द्ध्वे। भिन्दे भिन्द्वहे भिन्द्महे * भिन्द्यात्। भिन्दीत * भिनत्तु, भिन्तात् भिन्ताम् भिन्दन्तु। भिन्धि, भिन्तात् भिन्तम् भिन्त। भिनदानि भिनदाव भिनदाम॥ भिन्ताम् भिन्दाताम् भिन्दताम्। भिन्त्स्व भिन्दाथाम् भिन्द्ध्वम्। भिनदै भिनदावहै भिनदामहै * अभिनत् अभिन्ताम् अभिन्दन्। अभिनः, अभिनत् अभिन्तम् अभिन्त। अभिनदम् अभिन्द्व अभिन्द्म * अभिन्त अभिन्दाताम् अभिन्दत इत्यादि * बिभेद बिभिदतुः बिभिदुः। बिभेदिथ बिभिदथुः इत्यादि * बिभिदे बिभिदाते बिभिदिरे। बिभिदिषे इत्यादि * भिद्यात्। भित्सीष्ट * भेत्ता। भेत्ता * भेत्स्यति। भेत्स्यते * अभेत्स्यत्। अभेत्स्यत * अभैत्सीत् अभैत्ताम् अभैत्सुः। अभैत्सीः अथवा–अभिदत् इत्यादि * अभित्त अभित्साताम् इत्यादि॥

१६८–छिदिर्=द्वैधीकरण, छेदन, फोड़ना

छिनत्ति॥ छिन्ते * छिन्द्यात्॥ छिन्दीत * छिनत्तु॥ छिन्ताम् * अच्छिनत्॥ अच्छिन्त * चिच्छेद॥ चिच्छिदे * छिद्यात्॥ छित्सीष्ट * छेत्ता॥ छेत्ता * छेत्स्यति॥ छेत्स्यते * अच्छेत्स्यत्॥ अच्छेत्स्यत * अच्छैत्सीत् अथवा–अच्छिदत्॥ अच्छित्त अच्छित्साताम् इत्यादि॥

१६९–युजिर्=योग, जुड़ना

युनक्ति॥ युङ्क्ते * युञ्ज्यात्॥ युञ्जीत * युनक्तु॥ युङ्क्ताम् इत्यादि॥

१७०–रिचिर्=विरेचन, दस्त आना, खाली करना

रिणक्ति ॥ रिङ्क्ते * रिच्यात् ॥ रिञ्चीत * रिरेच ॥ रिरिचे इत्यादि ॥

१७१–विचिर्=पृथग्भाव, अलग होना

विनक्ति ॥ विङ्क्ते * विच्यात् ॥ विञ्चीत * विनक्तु ॥ विङ्क्ताम् * विवेच ॥ विविचे इत्यादि ॥

१७२–क्षुदिर्=संपेषण, पीसना, चूरा करना

क्षुणत्ति ॥ क्षुन्ते * क्षुन्द्यात् ॥ क्षुन्दीत * क्षुणत्तु ॥ क्षुन्ताम् * चुक्षोद इत्यादि

१७३–उच्छृदिर=दीप्ति और देवन=प्रकाश, चमकना और खेलना

उत् उपसर्गपूर्वक छृद धातु है। उच्छृणत्ति। उच्छृन्ते * उच्छृन्द्यात्। उच्छृन्दीत * उच्छृणत्तु। उच्छृन्ताम् * उदच्छृणत्। उदच्छृन्त * उच्चच्छर्द। उच्चच्छृदे * उच्छृद्यात्। उच्छर्दिषीष्ट * उच्छर्दिता। उच्छर्दिता * उच्छर्दिष्यति वा–उच्छर्त्स्यति * उदच्छर्दिष्यत् वा–उदच्छर्त्स्यत् * उदच्छृदत् वा उदच्छर्दीत् ॥

भाषानुवाद करो–

मार्गं रुरुधिरे दुष्टाः। वाचं रुणद्धि कुशलः। भिनत्ति जलं कमलम्। विभिदे भित्तिं चौरः। छिनत्ति पाशबन्धनम्। युनक्ति चित्तमीश्वरे। रिणक्ति स्थानं गृही। विनक्ति यती गृहात्। क्षुणत्ति मृदम्। उच्छृणत्ति सूर्यः बालो वा। तृणत्ति व्याघ्रः इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो

छिद्र को रोको। मोहजाल को तोड़ो। रज्जु (रस्सी) को काटो। मकान को ख़ाली करो। घर से पृथक् होता है। तड़ाग को खोदता है। तारा चमकती हैं। बालक खेलते हैं। इत्यादि ॥

१७४–(उत्) तृदिर्=हिंसा और अनादर

तृणत्ति। तृन्ते * तृन्द्यात्। तृन्दीत * तृणत्तु। तृन्ताम् * अतृणत्। अतृन्त * ततर्द ॥ ततृदे * तृद्यात् ॥ तर्दिषीष्ट * तर्दिता ॥ तर्दिष्यति * अतर्दिष्यत् * अतृदत, अतर्दीत् ॥ अतर्दिष्ट *

इत्युभयपदिनः

अथ परस्मैपदिनः—

१७५—कृती=वेष्टन, लपेटना

कृणत्ति इत्यादि ॥ चकर्त्त ॥ कृत्यात् ॥ कर्त्तिता ॥ कर्त्तिष्यति ॥ अकर्त्तिष्यत् ॥ अकर्त्तीत् ॥

१७६ । १७७—तृह, हिसि=हिंसा, वध करना

तृणेढि तृण्ढः तृंहन्ति । तृणेक्षि तृण्ढः तृण्ढ । तृणेह्मि तृंह्वः तृंह्मः ॥ तृंह्यात् ॥ तृणेढु, तृण्ढात् तृण्ढाम् तृंहन्तु । तृण्ढि, तृण्ढात् तृण्ढम् तृण्ढ । तृणहानि तृणहाव तृणहाम ॥ अतृणेट् अतृण्ढाम् अतृंहन् । अतृणेट् अतृण्ढम् अतृण्ढ । अतृणहम् अतृंह्व अतृंह्म ॥ ततर्ह ॥ तृह्यात् ॥ तर्हिता ॥ तर्हिष्यति ॥ अतर्हिष्यत् ॥ अतर्हीत् ॥ हिनस्ति ॥ हिंस्यात् ॥ हिनस्तु ॥ अहिनत् ॥ जिहिंस ॥ हिंस्यात् ॥ हिंसिता ॥ हिंसिष्यति ॥ अहिंसिष्यत् ॥ अहिंसीत् ॥

१७८—उन्दी=क्लेदन, भिगोना, गीला करना

उनत्ति उन्तः उन्दन्ति । उनत्सि ॥ उन्द्यात् ॥ उनत्तु ॥ औनत् औन्ताम् औन्दन् । औनः औन्तम् औन्त । औनदम् औन्द्व औन्द्म ॥ उन्दाञ्चकार इत्यादि वा—उन्दामास इत्यादि वा—उन्दाम्बभूव इत्यादि ॥ उद्यात् ॥ उन्दिता ॥ उन्दिष्यति ॥ औन्दिष्यत् ॥ औन्दीत् ॥

१७९—अञ्जू=प्रकट होना, चिकनाना, इच्छा, गति

अनक्ति अङ्क्तः अञ्जन्ति ॥ अञ्ज्यात् ॥ अनक्तु, अङ्क्तात् अङ्क्ताम् अञ्जन्तु । अङ्ग्धि, अङ्क्तात् अङ्क्तम् अङ्क्त । अनजानि ॥ आनक् आङ्क्ताम् आञ्जन् । आनक् आङ्क्तम् आङ्क्त । आनजम् आञ्ज्व आञ्ज्म ॥ आनञ्ज आनञ्जतुः आनञ्जुः । आनञ्जिथ, आनङ्क्थ इत्यादि ॥ अज्यात् ॥ अञ्जिता, अङ्क्ता ॥ अञ्जिष्यति, अङ्क्ष्यति ॥ आञ्जिष्यत्, आङ्क्ष्यत् ॥ आञ्जीत् आञ्जिष्टाम् आञ्जिषुः ॥

१८०—तञ्चू=सङ्कोचन, सकोड़ना

तनक्ति ॥ तञ्च्यात् ॥ तनक्तु ॥ अतनक् ॥ ततञ्च ॥ तच्यात् ॥ तञ्चिता, तङ्क्ता ॥ तञ्चिष्यति, तङ्क्ष्यति ॥ अतञ्चिष्यत्, अतङ्क्ष्यत् ॥ अतञ्चीत्, अताङ्क्षीत् ॥

१८१-(ओ) विजी=भय और कांपना

विनक्ति विङ्क्तः विञ्जन्ति ॥ विञ्ज्यात् ॥ विनक्तु ॥ अविनक् ॥ विवेज विविजतुः विविजुः । विविजिथ इत्यादि ॥ विज्यात् ॥ विजिता ॥ विजिष्यति ॥ अविजिष्यत् ॥ अविजीत अविजिष्टाम् ॥

१८२-शिष् (ऌ)=विशेषण, विशेष, वचना

शिनष्टि शिंष्टः शिंषन्ति ॥ शिंष्यात् ॥ शिनष्टु, शिंष्टात् शिंष्टाम् शिंषन्तु । शिण्ढि, शिंष्टात् शिंष्टम् शिंष्ट । शिनषाणि ॥ अशिनट् अशिंष्टाम् अशिंषन् ॥ शिशेष ॥ शिष्यात् ॥ शेष्टा ॥ शेक्ष्यति ॥ अशेक्ष्यत् ॥ अशिषत् ॥ इसी प्रकारः-

१८३-पिष् (ऌ)=संचूर्णन, पीसना

१८४-भञ्जो=आमर्दन, भङ्ग करना, तोड़ना, फोड़ना

भनक्ति भङ्क्तः भञ्जन्ति । भनग्धि ॥ भञ्ज्यात् ॥ भनक्तु ॥ अभनक् ॥ बभञ्ज । बभञ्जिथ, बभङ्क्थ ॥ भज्यात् ॥ भङ्क्ता ॥ भङ्क्ष्यति ॥ अभङ्क्ष्यत् ॥ अभाङ्क्षीत् अभाङ्क्ताम् अभाङ्क्षुः । अभाङ्क्षीः इत्यादि ॥

भाषानुवाद करो

कृणत्ति पुस्तकं छात्रः । तृणेढि बालं व्याघ्रः । हिनस्ति मृगान् व्याधः । उनत्ति वस्त्राणि । अनक्ति सौन्दर्यम् । अञ्जन्ति पयसा शिरः । अनक्तु विद्याम् । तनक्ति करं लुब्धः । विनक्ति रोगभीत्या लोकः । विञ्जन्ति वातेन वृक्षाः । शिनष्टि शिष्यं गुरुः । पिनष्टि गोधूमान् वराकी (बेचारी) । बभञ्ज रामो धनुर्जनकपुरे शिवस्य । इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो

वस्त्रों को बांधो । शत्रु को मारो । कपड़ा भिगोओ । स्वरूप मत दिखाओ । शिर को तैल से चिकनाओ । धन और कीर्त्ति को चाहो । ग्राम को चलो । रस्सी को सकोड़ो । मत डरो । मत कांपो । अपने को विद्या से विशेष करो । बुढ़िया चने पीसती है । लकड़ी तोड़ो । इत्यादि ॥

इति परस्मैपदिनः

अथात्मनेपदिनः-

१८५-भुज=पालन और अभ्यवहार=भोजन

यह धातु पालन अर्थ में परस्मैपदी है। जैसे—भुनक्ति * भुञ्ज्यात् * भुनक्तु * अभुनक् * बुभोज * भुज्यात् * भोक्ता * भोक्ष्यति * अभोक्ष्यत् * अभौक्षीत् अभौक्ताम् इत्यादि॥ यह पालन अर्थ को छोड़ भोजन अर्थ में वा धातुओं के अनेकार्थ होने से अन्य किसी अर्थ में आत्मनेपदी रहता है। जैसे—भुङ्क्ते * भुञ्जीत * भुङ्क्ताम् * अभुङ्क्त * बुभुजे * भुक्षीष्ट * भोक्ता * भोक्ष्यते * अभोक्ष्यत * अभुक्त अभुक्षाताम् अभुक्षत इत्यादि॥

१८६-(ञि) इन्धी=दीप्ति, चमकना, प्रज्वलित होना

इन्धे * इन्धीत * इन्धाम् * ऐन्ध * इन्धाञ्चक्रे इन्धाञ्चक्राते * इन्धिषीष्ट इन्धिता * इन्धिष्यते * ऐन्धिष्यत * ऐन्धिष्ट॥

१८७-विद=विचारना

विन्ते * विन्दीत * विन्ताम् * अविन्त * विविदे * वित्सीष्ट * वेत्ता * वेत्स्यते * अवेत्स्यत * अवित्त अवित्साताम्॥

भाषानुवाद करो

महीं भुनक्ति भूपालः। ओदनं भुङ्क्ते बालः। इन्धीत वेद्यां समिधः। विन्ते वेदान् श्रोत्रियः इत्यादि॥

संस्कृतानुवाद करो

गृहस्थो! कुटुम्ब को पालो। धर्मार्जित अन्न को खाओ। इन्धन जलता है। सत्याऽसत्य को विचारो इत्यादि॥

इति रुधादिगणप्रकरणम्

अथ तिङन्ते तनादिगणप्रकरणम्

तत्रोभयपदिनः-

१८८-तनु=विस्तार, फैलाना

तनोति तनुतः तन्वन्ति। तनोषि तनुथः तनुथ। तनोमि तन्वः, तनुवः तन्मः, तनुमः॥ तनुते तन्वाते तन्वते। तनुषे तन्वाथे तनुध्वे। तन्वे

तनुवहे, तन्वहे तनुमहे, तन्महे * तनुयात् ॥ तन्वीत तन्वीयाताम् तन्वीरन् । तन्वीथाः * तनोतु, तनुतात् तनुताम् तन्वन्तु । तनु, तनुतात् तनुताम् तनुत । तनवानि तनवाव तनवाम ॥ तनुताम् तन्वाताम् तन्वताम् । तनुष्व * अतनोत् अतनुताम् अतन्वन् । अतनोः अतनुतम् अतनुत । अतनवम् अतन्व, अतनुव अतन्म, अतनुम ॥ अतनुत अतन्वाताम् अतन्वत । अतनुथाः अतन्वाथाम् अतनुध्वम् । अतन्वि अतनुवहि, अतन्वहि अतनुमहि, अतन्महि * ततान तेनतुः तेनुः । तेनिथ तेनथुः तेन । ततान, ततन तेनिव तेनिम ॥ तेने तेनाते * तन्यात् ॥ तनिषीष्ट * तनिता ॥ तनिता * तनिष्यति । तनिष्यते * अतनिष्यत् ॥ अतनिष्यत * अतानीत्, अतनीत् ॥ अतत, अतनिष्ट अतनिषाताम् अतनिषत । अतथाः, अतनिष्ठाः अतनिषाथाम् अतनिध्वम् । अतनिषि अतनिष्वहि अतनिष्महि ॥

१८९—षणु=दान, देना

सनोति । सनुते * सनुयात् । सन्वीत * सनोतु । सनुताम् * असनोत् । असनुत * ससान । सेने * सन्यात्, सायात् । सनिषीष्ट * सनिता । सनिता * सनिष्यति । सनिष्यते * असनिष्यत् । असनिष्यत * असानीत्, असनीत् । असात, असनिष्ट असनिषाताम् असनिषत । असाथाः, असनिष्ठाः असनिषाथाम् इत्यादि ॥

१९०—क्षणु=हिंसा

क्षणोति इत्यादि * लिट्—चक्षाण चक्षणतुः चक्षणुः । चक्षणिथ ॥ चक्षणे चक्षणाते * क्षण्यात् । क्षणिषीष्ट * क्षणिता । क्षणिता * क्षणिष्यति । क्षणिष्यते * अक्षणिष्यत् । अक्षणिष्यत * अक्षणीत् अक्षणिष्टाम् ॥ अक्षत, अक्षणिष्ट इत्यादि ॥

१९१—क्षिणु=हिंसा, मारना

क्षिणोति इत्यादि । किन्ही के मत में क्षेणोति इत्यादि * चिक्षेण चिक्षिणतुः ॥ चिक्षिणे * क्षिण्यात् । क्षेणिषीष्ट * क्षेणिता । क्षेणिता * क्षेणिष्यति । क्षेणिष्यते * अक्षेणिष्यत् । अक्षेणिष्यत * अक्षेणीत् । अक्षित, अक्षेणिष्ट अक्षेणिषाताम् अक्षेणिषत । अक्षिथाः, अक्षेणिष्ठाः इत्यादि ॥

१९२—तृण=अदन, चरना, खाना

तृणोति वा तर्णोति इत्यादि * ततर्ण ततृणतुः ॥ ततृणे * तृण्यात् । तर्णिषीष्ट * तर्णिता । तर्णिता * तर्णिष्यति । तर्णिष्यते * अतर्णिष्यत् । अतर्णिष्यत * अतर्णीत् ॥ अतृत, अतर्णिष्ट । अतृथाः, अतर्णिष्ठाः ॥

१९३–(डु) कृ (ञ्)=करण, करना, बनाना

करोति कुरुतः कुर्वन्ति। करोषि कुरुथः कुरुथ। करोमि कुर्वः कुर्मः॥ कुरुते कुर्वाते कुर्वते। कुरुषे कुर्वाथे कुरुध्वे। कुर्वे कुर्वहे कुर्महे॥ कुर्यात्॥ कुर्वीत॥ करोतु, कुरुतात् कुरुताम् कुर्वन्तु। कुरु, कुरुतात् कुरुतम् कुरुत। करवाणि करवाव करवाम॥ कुरुताम् कुर्वाताम् कुर्वताम्। कुरुष्व कुर्वाथाम् कुरुध्वम्। करवै करवावहै करवामहै॥ अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन्। अकरोः अकुरुतम् अकुरुत। अकरवम् अकुर्व अकुर्म॥ अकुरुत अकुर्वाताम् अकुर्वत। अकुरुथाः अकुर्वाथाम् अकुरुध्वम्। अकुर्वि अकुर्वहि अकुर्महि॥ चकार चक्रतुः चक्रुः। चकर्थ॥ चक्रे चक्राते चक्रिरे॥ क्रियात्। कृषीष्ट॥ कर्ता। कर्ता॥ करिष्यति। करिष्यते॥ अकरिष्यत्। अकरिष्यत॥ अकार्षीत् अकार्ष्टाम् अकार्षुः। अकार्षीः अकार्ष्टम् अकार्ष्ट। अकार्षम् अकार्ष्व अकार्ष्म॥ अकृत अकृषाताम् अकृषत। अकृथाः अकृषाथाम् इत्यादि॥

सम् और परि उपसर्ग से परे "कृ" धातु को सुट् (स) आगम होता है भूषण और समवाय अर्थ में। जैसेः—

सम्+करोति=संस्करोति। परि+करोति=परिष्करोति॥

उप उपसर्ग से परे भी कृ धातु को सुट् आगम होता है प्रतियत्न, वैकृत, वाक्याध्याहार, भूषण और समवाय अर्थों में। जैसेः—प्रतियत्न में=उदकस्योपस्कुरुते=जल को गुणयुक्त करता है=अपगुण दूर करके गुणाधान करता है। वैकृत में—उपस्करोति अन्नम्=अन्न को विकृत करता है। उपस्कृतं ब्रूते=वाक्यों के अध्याहारपूर्वक उच्चारण करता है। उपस्कृता कन्या=भूषिता इत्यर्थः। उपस्कृता ब्राह्मणाः=ब्राह्मण इकट्ठे हैं॥

भाषानुवाद करो

तनोति वस्त्रं तन्तुवायः। सनोति दक्षिणां यजमानः। क्षणोति, क्षिणोति, क्षेणोति वा माणवकं व्याघ्रः। तृणवन्ति वने गावः। कुरुते घटं कुलालः॥

संस्कृतानुवाद करो

कपड़ा बुनो। अन्न दो। दुर्बल को मत मारो। गाय चरती है। इत्यादि॥

इत्युभयपदप्रकरणम्

अथात्मनेपदप्रकरणम्–

१९४–वनु=याचन, मांगना

वनुते इत्यादि १९८ के तुल्य ॥ ववने ववनाते ॥ वनिषीष्ट ॥ वनिता ॥ वनिष्यते ॥ अवनिष्यत ॥ अवत, अवनिष्ट अवनिषाताम् अवनिषत । अवथाः, अवनिष्ठाः इत्यादि ॥

१९५–मनु=अवबोधन, समझना, मानना

मनुते इत्यादि ॥ मेने मेनाते मेनिरे ॥ मनिषीष्ट इत्यादि १९४ के तुल्य है ॥

भाषानुवाद करो

वनुते विद्यार्थी । आत्मानं पण्डितं मनुते । इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो

भिक्षा मत मांगो । अर्थ समझो इत्यादि ॥

इति तनादिगणप्रकरणम्

—※—

अथ तिङन्ते क्र्यादिगणप्रकरणम्

१९६–(डु) क्री (ञ्)=द्रव्यविनिमय, खरीदना

क्रीणाति क्रीणीतः क्रीणन्ति क्रीणासि क्रीणीथः क्रीणीथ । क्रीणामि क्रीणीवः क्रीणीमः ॥ क्रीणीते क्रीणाते क्रीणते । क्रीणीषे क्रीणाथे क्रीणीध्वे । क्रीणे क्रीणीवहे क्रीणीमहे ॥ क्रीणीयात् । क्रीणीत इत्यादि ॥ क्रीणातु, क्रीणीतात् क्रीणीताम् क्रीणन्तु । क्रीणीहि, क्रीणीतात् क्रीणीतम् क्रीणीत । क्रीणानि क्रीणाव क्रीणाम ॥ क्रीणीताम् क्रीणाताम् क्रीणताम् । क्रीणीष्व क्रीणाथाम् क्रीणीध्वम् । क्रीणै क्रीणावहै क्रीणामहै ॥ अक्रीणात् अक्रीणीताम् । अक्रीणन् । अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत । अक्रीणाम् अक्रीणीव अक्रीणीम ॥ अक्रीणीत अक्रीणाताम् अक्रीणत । अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम् । अक्रीणि अक्रीणीवहि अक्रीणीमहि ॥ चिक्राय चिक्रियतुः चिक्रियुः । चिक्रेथ चिक्रियथुः चिक्रिय । चिक्राय, चिक्रय चिक्रियिव चिक्रियिम । चिक्रिये चिक्रियाते चिक्रियिरे । चिक्रियिषे चिक्रियाथे चिक्रियिध्वे । चिक्रिये । चिक्रियिवहे चिक्रियिमहे ॥ क्रीयात् । क्रेषीष्ट ॥ क्रेता । क्रेता ॥ क्रेष्यति । क्रेष्यते ॥ अक्रेष्यत् । अक्रेष्यत ॥ अक्रैषीत् । अक्रेष्ट अक्रेषाताम् इत्यादि ॥

१९७–प्री (ञ्)=तर्पण, तृप्त करना प्रीति और इच्छा

प्रीणाति ॥ प्रीणीते * प्रीणीयात् ॥ प्रीणीत * प्रीणातु ॥ प्रीणीताम् * अप्रीणात् ॥ अप्रीणीत * पिप्राय ॥ पिप्रिये * प्रीयात् इत्यादि " क्री " के तुल्य है ॥ इसी प्रकारः-

१९८–श्री (ञ्)=पाक, पकाना ।

१९९–मी (ञ्)=हिंसा

इस धातु के प्रयोगों में न का ण हो जाता है, जब कि प्रादि उपसर्गस्थ रेफादिनिमित्त से परे हो । जैसे-प्रमीणाति । परिमीणाति इत्यादि ॥ लिट्-ममौ मिम्यतुः मिम्युः । ममिथ, ममाथ मिम्यथुः मिम्य । ममौ मिम्यिव मिम्यिम ॥ मिम्ये मिम्याते ॥ मीयात् । मासीष्ट ॥ माता । माता ॥ मास्यति मास्यते ॥ अमास्यत् । अमास्यत ॥ अमासीत् । अमास्त अमासाताम् ॥

२००–षि (ञ्)=बन्धन, बांधना

सिनाति । सिनीते ॥ सिनीयात् । सिनीत ॥ सिनातु । सिनीताम् ॥ असिनात् । असिनीत ॥ सिषाय सिष्यतुः सिष्युः । सिषेथ ॥ सिष्ये सिष्याते ॥ सीयात् । सेषीष्ट ॥ सेता । सेता ॥ सेष्यति । सेष्यते ॥ असेष्यत् । असेष्यत ॥ असैषीत् असैष्टाम् । असेष्ट असेषाताम् ॥

२०१–स्कु (ञ्)=आप्लवन, कूदना, उछलना

स्कुनाति । स्कुनीते ॥ स्कुनीयात् । स्कुनीत ॥ स्कुनातु । स्कुनीताम् ॥ अस्कुनात् । अस्कुनीत ॥ अथवा-स्कुनोति स्कुनुतः स्कुन्वन्ति इत्यादि स्वादिगण के तुल्य । लिट्-चुस्काव चुस्कुवतुः इत्यादि ॥ स्कूयात् । स्कोषीष्ट ॥ स्कोता इत्यादि ॥

२०२।२०३।२०४।२०५–स्तन्भु, स्तुन्भु, स्कन्भु, स्कुन्भु=रोकना

ये ४ धातु परस्मैपदी सौत्र हैं । जैसेः-स्तभ्नाति स्तभ्नीतः ॥ स्तभ्नीयात् ॥ स्तभ्नातु, स्तभ्नीतात् स्तभ्नीताम् स्तभ्नन्तु । स्तभान, स्तभ्नीतात् स्तभ्नीतम् इत्यादि ॥ अस्तभ्नात् ॥ तस्तम्भ तस्तभतुः तस्तभुः । तस्तम्भिथ तस्तभथुः तस्तभ । तस्तम्भ तस्तम्भिव तस्तभिम ॥ स्तभ्यात् ॥ स्तम्भिता ॥ स्तम्भिष्यति ॥ अस्तम्भिष्यत् ॥ अस्तभत् अस्तभताम् वा-अस्तम्भीत् अस्त-

भिष्टाम् इत्यादि ॥ इसी प्रकार स्तुभ्नाति इत्यादि ॥ तुष्टुम्भ तुष्टुभतुः तुष्टुभुः इत्यादि ॥ तथा-स्कभ्नाति इत्यादि ॥ चस्कम्भ चस्कभतुः इत्यादि ॥ स्कुभ्नाति इत्यादि ॥ चुस्कुम्भ चुस्कुभतुः इत्यादि ॥

२०६–यु (ञ्)=बन्धन, बांधना

युनाति । युनीते ॥ युनीयात् । युनीत युनीयाताम् ॥ युनातु । युनीताम् अयुनात् । अयुनीत ॥ युयाव युयुवतुः युयुवुः । युयोथ, युयविथ युयुवथुः युयुव । युयाव, युयव युयुविव युयुविम । युयुवे युयुवाते इत्यादि ॥ यूयात् । योषीष्ट ॥ योता इत्यादि ॥ अयौषीत् अयौष्टाम् अयौषुः । अयौषीः इत्यादि ॥ अयोष्ट अयोषाताम् ॥

२०७–क्नू (ञ्)=शब्द, बोलना, कूं २ करना

क्नूनाति इत्यादि ॥ चुक्नाव चुक्नुवतुः चुक्नुवुः । चुक्नविथ ॥ चुक्नुवे चुक्नुवाते ॥ क्नूयात् । क्नविषीष्ट ॥ क्नविता इत्यादि ॥ अक्नावीत् अक्नाविष्टाम् ॥ अक्नविष्ट ॥

२०८–दॄ (ञ्)=हिंसा

दृणाति इत्यादि ॥ ददार ददरतुः । ददरे ददराते ॥ दीर्यात् । दरिषीष्ट ॥ दरिता, दरीता इत्यादि ॥ अदारीत् । अदरिष्ट ॥

२०९–द्रू (ञ्)=हिंसा

द्रूणाति इत्यादि ॥ दुद्राव । दुद्रुवतुः ॥ दुद्रुवे ॥ द्रूयात् । द्रविषीष्ट ॥ द्रविता इत्यादि ॥ अद्रावीत्, अद्रवीत् । अद्रविष्ट ॥

२१०–पू (ञ्)=पवन, शोधन, शुद्ध करना

पुनाति इत्यादि ॥ पुपाव पुपुवतुः । पुपुवे ॥ पूयात् । पविषीष्ट ॥ पविता इत्यादि ॥

२११–स्तॄ (ञ्) =आच्छादन, ढकना

स्तृणाति इत्यादि ॥ तस्तार तस्तरतुः । तस्तरे ॥ स्तीर्यात् । स्तीर्षीष्ट ॥ स्तरिता, स्तरीता इत्यादि ॥ अस्तारीत् । अस्तरिष्ट अस्तरिषाताम् इत्यादि वा-अस्तीर्ष्ट अस्तीर्षाताम् अस्तीर्षत इत्यादि ॥

२१२–कॄ (ञ्)=हिंसा

कृणाति इत्यादि ॥ चकार चकरतुः । चकरे ॥ आगे " दॄ " २०८ के तुल्य है ॥ इसी प्रकारः—

२१३–वृ (ञ्)=वरण, स्वीकार

वृणाति इत्यादि ॥ ववार ववरतुः इत्यादि । ववरे ववराते ॥ वूर्यात् वरिषीष्ट, वूर्षीष्ट ॥ वरिता, वरीता । वरिता, वरीता ॥ वरिष्यति, वरीष्यति इत्यादि ॥ लुङ्–अवारीत् अवारिष्टाम् अवारिषुः । अवरिष्ट अवरिषाताम् वा–अवरीष्ट अवरीषाताम् वा–अवूर्ष्ट अवूर्षाताम् इत्यादि ॥

२१४–धू (ञ्)=कम्पन, कांपना, हिलना

धुनाति । धुनीते ॥ धुनीयात् । धुनीत ॥ धुनातु । धुनीताम् ॥ अधुनात् । अधुनीत ॥ दुधाव दुधुवतुः । दुधुवे ॥ धूयात् । धविषीष्ट, धोषीष्ट ॥ धविता, धोता ॥ धविष्यति, धोष्यति ॥ अधविष्यत, अधोष्यत् ॥ अधावीत् वा–अधावीत् अधाविष्टाम् । अधविष्ट, अधोष्ट ॥

२१५–ग्रह=उपादान, लेना, ग्रहण करना, पकड़ना

गृह्णाति । गृह्णीते ॥ गृह्णीयात् । गृह्णीत ॥ गृह्णातु, गृह्णीतात् गृह्णीताम् । गृह्णन्तु । गृहाण, गृह्णीतात् गृह्णीतम् इत्यादि ॥ अगृह्णात् । अगृह्णीत ॥ जग्राह जगृहतुः । जगृहे जगृहाते ॥ गृह्यात् । ग्रहीषीष्ट ॥ ग्रहीता । ग्रहीता ॥ ग्रहीष्यति । ग्रहीष्यते ॥ अग्रहीष्यत् । अग्रहीष्यत ॥ अग्रहीत् अग्रहीष्टाम् ॥ अग्रहीष्ट अग्रहीषाताम् अग्रहीषत । अग्रहीष्ठाः । इत्यादि ॥

भाषानुवाद करो

अन्नं क्रीणाति । फलानि विक्रीणीते । पितरौ प्रीणीतो बालम् । ओदनं श्रीणाति । मीनाति बको मीनान् । मिनाति रक्षकश्चौरम् । स्कुनोति स्कुनाति वा मण्डूकस्तडागे । स्तभ्नाति खड्गम् । स्तुभ्नाति शत्रुहस्तं धीरः । स्कभ्नाति हस्तिनमङ्कुशेन । स्कुभ्नाति गां दण्डेन । युनाति पशून् । क्नन्ति श्वशावकाः (कुतिया के पिल्ले) । दृणाति सिंहोऽजम् । दूणाति व्याघ्रो गाम् पुनाति यज्ञधूमो गृहाणि सताम् । स्तृणन्ति यज्ञे कुशान् ऋत्विजः ॥ कृणन्ति परान् शूराः संग्रामे । वृणाति कन्या युवानं पतिम् । धुनाति वृक्षान् वायुस्तीव्रः । गृह्णाति दक्षिणामाचार्यः । इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो

गोधूम खरीदो । सरसों बेचो । आचार्य को प्रसन्न करो । सूप (दाल) और भात पकाओ । मछली मत मारो । अन्य अदुष्ट प्राणियों को भी मत

मारो। दुष्टों को मारो। भोजनार्थ अन्न बांधो। गर्व से मत उछलो। खड्ग-प्रहार को रोको। शत्रु को हटाओ। घोड़े को थांभो। कूं कूं क्यों करते हो? शत्रु के वक्षःस्थल को फाड़ो। जल और वायु तथा गृह को शुद्ध करो। जलपात्र और घृतपात्र को ढको। शिर ढको। विना अपराध किसी को मत मारो। आचार्य का वरण करो। पांव मत हिलाओ। मज़बूत पकड़ो। इत्यादि॥

इत्युभयपदप्रकरणम्॥ अथ परस्मैपदप्रकरणम्-

२१६-कुष=निष्कर्ष, निकालना, दबाना, निचोड़ना

कुष्णाति इत्यादि॥ लोट्-मध्यमपुरुषैकवचन-कुषाण॥ लिट् चुकोष चुकुषतुः॥ कुष्यात्॥ कोषिता॥ कोषिष्यति॥ अकोषिष्यत्॥ अकोषीत्॥

२१७-अश=भोजन, खाना

अश्नाति इत्यादि॥ लोट्-मध्यमैकवचन-अशान॥ लिट्-आश आशतुः॥ अश्यात्॥ अशिता॥ अशिष्यति॥ आशिष्यत्॥ आशीत्॥

२१८-मुष=स्तेय, चुराना

मुष्णाति इत्यादि॥ लोट्-मध्यमैकवचन=मुषाण॥ मुमोष॥ मुष्यात्॥ मोषिता इत्यादि॥

इति परस्मैपदप्रकरणम्॥ अथात्मनेपदप्रकरणम्-

२१९-वृ (ङ्)=संभक्ति, सेवा करना

वृणीते॥ वृणीत॥ वृणीताम्॥ अवृणीत॥ वव्रे वव्राते॥ वरिषीष्ट॥ वरिता, वरीता॥ वरिष्यते, वरीष्यते॥ अवरिष्यत, अवरीष्यत॥ अवरिष्ट, अवरीष्ट, अवृत। अवृषाताम् इत्यादि॥

भाषानुवाद करो

कुष्णाति वस्त्रम् तिलान्वा। अश्नन्ति ब्राह्मणाः पायसम्। मुष्णन्ति तस्कराः परधनम्। वृणीते पतिं वधूः। इत्यादि॥

संस्कृतानुवाद करो

धोती निचोड़ो। सरसों से तेल निकालो। अभक्ष्य मत खाओ। किसी की वस्तु मत चुराओ। गुरु को सेवो। इत्यादि॥

इति क्र्यादिगणप्रकरणम्॥ ९॥

अथ तिङन्ते चुरादिगणप्रकरणम्

२२०—चुर=स्तेय, चुराना

चोरयति । चोरयते * चोरयेत् । चोरयेत * चोरयतु । चोरयताम् * अचोरयत् । अचोरयत * चोरयाञ्चकार चोरयाञ्चक्रतुः, चोरयामास चोरयामासतुः, चोरयाम्बभूव चोरयाम्बभूवतुः इत्यादि * चोर्यात् । चोरयिषीष्ट * चोरयिता । चोरयिता * चोरयिष्यति । चोरयिष्यते * अचोरयिष्यत् । अचोरयिष्यत * अचूचुरत् । अचूचुरत ॥

२२१—कथ=बोलना, कहना, वाक्यप्रबन्ध

कथयति इत्यादि * आशीर्लिङ्-कथ्यात् * लुङ्-अचकथत् ॥ अचकथत शेषरूप " चुर " के तुल्य हैं ॥

२२२—गण=सङ्ख्या करना, गिनना

गणयति इत्यादि " कथ " के तुल्य है परन्तु लुङ् में अजीगणत् वा-अजगणत् । अजीगणत, अजगणत । इत्यादि दो २ रूप होते हैं ॥

भाषानुवाद करो—

पापः परधनं चोरयति । सत्यं कथयति धर्मात्मा । पराऽपराधान् न गणयन्ति साधवः । इत्यादि ॥

संस्कृतानुवाद करो—

किसी के वस्त्रादि मत चुराओ । सत्य कहो । रुपये गिनो । इत्यादि ॥

इति तिङन्ते चुरादिगणप्रकरणम्

दश गणाः समाप्ताः

अथ तिङन्ते ण्यन्तप्रक्रिया

कर्त्ता से कोई क्रिया कराना अर्थात् कर्त्ता को प्रेरणा करके कोई क्रिया कराना ण्यन्त का अर्थ है । जैसे—"घटो भवति" से "घटं भावयति"=घड़े को

हुवाता अर्थात् बनाता है। "अश्वो घासं खादति" से "अश्वं घासं खादयति"= घोड़े को घास खिलाता है। इत्यादि ॥

इस णयन्त अवस्था में पूर्वावस्था का कर्त्ता प्रायः कर्म बन जाता है ॥

१—भू=होना ॥

"भवति" इत्यादि भ्वादिगण में कह आये हैं। यहां परस्मैपद में-भावयति भावयतः इत्यादि * भावयेत् भावयेताम् इत्यादि * भावयतु, भावयतात् इत्यादि * अभावयत् इत्यादि * भावयाञ्चकार, भावयामास, भावयाम्बभूव इत्यादि * भाव्यात् * भावयिता * भावयिष्यति * अभावयिष्यत् * अबीभवत् अबीभवताम् अबीभवन्। अबीभवः इत्यादि॥ आत्मनेपद में भावयते * भावयेत * भावयताम् * अभावयत * भावयाञ्चक्रे * भावयिषीष्ट भावयिता * भावयिष्यते * अभावयिष्यत * अबीभवत अबीभवेताम् इत्यादि ॥

२—स्था=ठहरना ॥

तिष्ठति इत्यादि कह आये हैं। यहां-स्थापयति * स्थापयेत् इत्यादि भावयति आदि के तुल्य हैं। लुङ्-अतिष्ठिपत् ॥ अतिष्ठिपत इत्यादि ॥

३=घट=चेष्टा, बनाना

घटते इत्यादि भ्वादिगण में। यहां घटयति इत्यादि। लुङ्-अजीघटत् अजीघटत इत्यादि ॥

४—ज्ञप=ज्ञान, जानना ॥

चुरादिगणस्थ है। यहां-ज्ञपयति इत्यादि ॥ इसी प्रकार-आतयति * आतितत् ॥ आदयति * आदिदत् ॥ ह्वाययति * अजीहवत् ॥ देवयति * अदीदिवत् ॥ सावयति * असूषवत् ॥ तोदयति * अतूतुदत् ॥ रोधयति * अरूरुधत् ॥ तानयति * अतीतनत् ॥ क्राययति * अचिक्रियत् ॥ चोरयति * अचूचुरत् ॥ इत्यादि सब गणों से सब धातुओं के रूप समझने चाहियें ॥

स्मरण रहे कि इस पुस्तक में उस २ गण के सब धातु नहीं लिखे, किन्तु धातु पाठ के बहुत से ऐसे धातु भी हैं जो इस पुस्तक में नहीं लिखे, परन्तु अपने अपने गण के मुख्य धातु के प्रायशः तुल्य हैं और जिन २ में कुछ विशेष है वह व्याकरण की इस से अगली बड़ी पुस्तकों के पढ़ने से समझ में आवेगा, परन्तु लघुकौमुदी में जितने धातु दिये हैं प्रायः वे सब हमने भी यहां लिख दिये हैं ॥

उदाहरणानि-घटं भावयति=घड़े को बनाता है। साधुं गृहे स्थापयति=साधु को घर में ठहराता है। घटयति कम्बलम्=कम्बल को बनाता है। अर्थं ज्ञपयति=अर्थ को जतलाता है। मिष्टमादयति=मिठाई खिलाता है। दापयति दक्षिणाम्=दक्षिणा दिलाता है। देवयति बालकान्=बालकों को खेलाता है। सोमं सावयति=सोम का अर्क खिंचवाता है। तोदयति रथी सारथिना-ऽश्वान्=रथी, सारथि से घोड़ों को व्यथित कराता है। रोधयति भृत्यैः पथिकान्=नौकरों से पथिकों को रुकवाता है। यज्ञार्थमासनानि तानयति=यज्ञार्थ आसन बिछवाता है। सर्षपं क्राययति=सरसों ख़रीदवाता है। चोरयति खलः परधनम्=दुष्ट पराये धन को चुरवाता है इत्यादि॥

इति ण्यन्तप्रक्रिया

अथ तिङन्ते सन्नन्तप्रक्रिया

जब धातु के अर्थ में इच्छार्थ पाया जावे तब सन्नन्त का प्रयोग होता है। जैसे भवति से-बुभूषति=होना चाहता है इत्यादि॥

१-पठ=पढ़ना॥

पिपठिषति * पिपठिषेत * पिपठिषतु * अपिपठिषत् * पिपठिषाञ्चकार * पिपठिष्यात् * पिपठिषिता * पिपठिषिष्यति * अपिपठिषिष्यत् * अपिपठिषीत् इत्यादि॥

२-अद (घस्लृ)=भक्षण। जिघत्सति इत्यादि॥

३-कृ (ञ्) करना॥

चिकीर्षति * चिकीर्षेत * चिकीर्षतु * अचिकीर्षत * चिकीर्षाञ्चकार इत्यादि॥

४-भू=होना॥

बुभूषति * बुभूषेत् * बुभूषतु * अबुभूषत् * बुभूषाञ्चकार * बुभूष्यात् इत्यादि। इसी प्रकार-जुहूषति। दिदेविषति। सुसूषति। तुतुत्सति। सन्तत्सति। तितांसति, तितंसति वा तितनिषति। चिक्रीषति। चुचारयिषति इत्यादि जानो॥

उदाहरणानि-पिपठिषति वेदान् श्रोत्रियः=श्रोत्रिय (वेदपाठी) वेदों को पढ़ना चाहता है। चिकीर्षति गृहं गृही=गृहस्थ घर को बनाना चाहता

है । छात्रः पण्डितो बुभूषति=विद्यार्थी पण्डित होना चाहता है । जिघत्सति मिष्टं ब्राह्मणः=ब्राह्मण मिठाई खाना चाहता है । पान्थो ग्रामं जिगमिषति=पथिक ग्राम को जाना चाहता है । जुहूर्षति दक्षिणां यजमानः=यजमान दक्षिणा को देना चाहता है । जुहूर्षति हव्यमग्निः=अग्नि हव्य को खाना (फूंकना) चाहता है । बाला दुद्यूषन्ति, दिदेविषन्ति वा=बालक खेलना चाहते हैं । अहं गुडूचीं सुषूषामि=मैं गिलोय का अर्क खींचना चाहता हूं । तुतुत्सति खलः साधून्=दुष्ट सत्पुरुषों को दुःख देना चाहता है । रुरुत्सति शत्रुं वीरः=शूर वीर शत्रु को रोकना चाहता है । तितांसति, तितंसति वा तितनिषति जालं वञ्चकः=ठग जाल को फैलाना चाहता है । व्यापारी चिक्रीषति गोधूमराशिम्=व्यापारी गोधूम की ढेरी को खरीदना चाहता है । चुचोरयिषति चौरः परधनानि=चोर पराये धनों को चुराना चाहता है । इत्यादि ॥ प्रायः इसी प्रकार के अन्य धातुओं के रूप जानो ॥

इति सन्नन्तप्रक्रिया

अथ तिङन्ते यङन्तप्रक्रिया

जो धातु एक स्वर वाले और व्यञ्जनादि हैं उन के अर्थ में जब अतिशयता वा वारंवार का अर्थ रहता है तब यङन्त प्रयोग होता है । जैसेः—बोभूयते=बहुतायत से होता है वा वारंवार होता है । इत्यादि ॥

बोभूयते * बोभूयेत * बोभूयताम् * अबोभूयत * बोभूयाञ्चक्रे * बोभूयिषीष्ट * बोभूयिता * बोभूयिष्यते * अबोभूयिष्यत * अबोभूयिष्ट * अबोभूयिषाताम् इत्यादि ॥

जिन धातुओं का "गति" अर्थ है उन का यङन्त प्रयोग कुटिलता अर्थ में होता है । क्रियासमभिहार (एक दूसरे का काम करना) में नहीं । जैसेः—

वाव्रज्यते * वाव्रज्येत * वाव्रज्यताम् * अवाव्रज्यत * वाव्रजाञ्चक्रे * वाव्रजिषीष्ट * वाव्रजिता * वाव्रजिष्यते * अवाव्रजिष्यत * अवाव्रजिष्ट ॥

वरीवृत्यते * वरीवृत्येत * वरीवृत्यताम् * अवरीवृत्यत * वरीवृताञ्चक्रे वरीवृतिषीष्ट * वरीवृतिता * वरीवृतिष्यते * अवरीवृतिष्यत * अवरीवृतिष्ट ॥

नरीनृत्यते * नरीनृत्येत * नरीनृत्यताम् * अनरीनृत्यत * नरीनृताञ्चक्रे * नरीनर्तिषीष्ट * नरीनर्तिता । इत्यादि ॥

जरीगृह्यते इत्यादि ॥ जरीगृहाञ्चक्रे ॥ जरीगृहिषीष्ट ॥ जरीगृहिता इत्यादि ॥ इसी प्रकार:-

जङ्घन्यते । जोहूयते । देदीव्यते । सोषूयते । तोतुद्यते । रोरुध्यते । सन्मन्यते । चेक्रीयते । चोचूर्यते इत्यादि जानो ॥

उदाहरणानि वर्षासु बोभूयते मेघः=वर्षा में मेघ वारंवार वा बहुतायत से हुआ करता है। वाव्रज्यतेऽश्वः=घोड़ा तिरछा चला करता है। वरीवृत्यतेऽन्नम्-अन्न बहुतायत से वर्त्तमान है। नरीनृत्यते गणिका=रण्डी वार २ नाचती है। अजरीगृहिष्ट चौरं रक्षकः=वारंवार पकड़ा चोर को चौकीदार ने। जङ्घन्यते पक्षिणो वधिकः=वधिक पक्षियों को बहुतायत से मारता है। जोहूयते दानं दाता=दाता बहुतायत से दान देता है। जोहूयते घृतमग्निः=अग्नि घृत को बहुतायत से जलाता है। अक्षैर्देदीव्यन्ते खलाः=दुष्ट बहुतायत से पाशों से खेलते हैं। सोषूयते ऋत्विक् सोमम्=ऋत्विज् (यज्ञकर्त्ता) सोम का अधिकता से अर्क खींचता है। तोतुद्यतेऽश्वान् सारथिः=कोचमैन घोड़ों को बहुत वा वारंवार बींधता है=चाबुक मारता है। दस्यवो मार्गं रोरुध्यन्ते=डाकू रास्ता बहुत रोकते हैं। चेक्रीयन्ते वणिजोऽन्नम्=बनिये नाज बहुत खरीदते हैं। चोचूर्यन्तेऽमावस्यायां चौराः=चोर अमावस में बहुत चुराते हैं इत्यादि ॥

इति यङन्तप्रक्रिया

अथ तिङन्ते यङ्लुक्प्रक्रिया

यङन्त के ही अर्थ में दूसरे प्रकार के प्रयोग यङ्लुक् के भी होते हैं ॥

भू=होना

बोभवीति, बोभोति बोभूतः बोभुवति । बोभवीषि, बोभोषि बोभूथः बोभूथ । बोभवीमि, बोभोमि बोभूवः बोभूमः ॥ बोभूयात् बोभूयाताम् बोभूयुः इत्यादि ॥ बोभवीतु, बोभोतु, बोभूतात् बोभूताम् बोभुवतु । बोभूहि, बोभूतात् बोभूतम् बोभूत । बोभवानि ॥ अबोभवीत्, अबोभोत् अबोभूताम् अबोभवुः । अबोभवीः, अबोभोः, अबोभूतम् अबोभूत । अबोभवम् अबोभूव अबोभूम ॥ बोभवाञ्चकार, बोभवामास, बोभवाम्बभूव ॥ बोभूयात् बोभूयास्ताम् ॥ बोभविता ॥ बोभविष्यति ॥ अबोभविष्यत् ॥ अबोभवीत्, अबोभोत् अबोभूताम् अबोभूवुः । अबोभवीः, अबोभोः इत्यादि ॥

इसी प्रकार-जङ्गनीति, जङ्गन्ति । जोहवीति, जोहोति । देदेवीति । सोषवीति, सोषोति । तोतोदीति, तोतोत्ति । रोरोधीति, रोरोद्धि । तन्तनीति, तन्तन्ति । चेक्रयीति, चेक्रेति । चोचोरीति इत्यादि जानो ॥

उदाहरण यङन्त के तुल्य हैं ॥

इति यङ्लुक्प्रक्रिया

अथ तिङन्ते नामधातुप्रक्रिया

नामधातु उसे कहते हैं जो प्रथम प्रातिपदिक (संज्ञा) हो और फिर विशेष क्रियार्थ के योग में धातु के समान तिङन्त प्रयुक्त होवे ॥

१-जिन शब्दों का वर्णन प्रथमा द्वितीयादि विभक्तियों सहित तृतीय पुस्तक में कर आये हैं, वे और उन के सदृश अन्य प्रातिपदिक जो सुबन्त दशा में थे, जब कि अपने लिये इच्छा क्रिया के कर्म हों तब उन के इस प्रकार रूप होते हैं । जैसे-"अपने लिये पुत्र की इच्छा करना" यहां इच्छा का कर्म पुत्र है तो पुत्र शब्द से क्यच् प्रत्यय लगाकर-

पुत्रीयति पुत्रीयतः इत्यादि ॥ पुत्रीयेत् पुत्रीयेताम् ॥ पुत्रीयतु ॥ अपुत्रीयत् ॥ पुत्रीयाञ्चकार, पुत्रीयामास, पुत्रीयाम्बभूव ॥ पुत्रीय्यात् ॥ पुत्रीयिता ॥ पुत्रीयिष्यति ॥ अपुत्रीयिष्यत् ॥ अपुत्रीयीत् अपुत्रीयिष्टाम् इत्यादि ॥ राजीयति ॥ राजीयेत् ॥ राजीयतु ॥ अराजीयत् ॥ राजीयाञ्चकार इत्यादि ॥ वाच्यति ॥ वाच्येत् ॥ वाच्यतु ॥ अवाच्यत् ॥ वाच्याञ्चकार ॥ वाच्यात्, वाच्यात् ॥ वाच्यिता, वाचिता इत्यादि ॥

गीर्यति ॥ पूर्यति ॥ दिव्यति ॥ गीर्यिता, गीरिता ॥ पूर्यिता, पूरिता ॥ दिव्यिता, दिविता इत्यादि ॥

समिध्यति ॥ समिध्येत् इत्यादि ॥ समिध्यिता, समिधिता ॥ समिध्यिष्यति, समिधिष्यति इत्यादि ॥

२-पूर्वोक्त अर्थ में काम्यच् प्रत्यय भी लगाते हैं । जैसे-पुत्रकाम्यति ॥ राजकाम्यति ॥ वाक्काम्यति ॥ गीःकाम्यति ॥ पूःकाम्यति ॥ समित्काम्यति ॥

पुत्रीयति मे पत्नी=मेरी पत्नी अपने लिये पुत्र चाहती है । राजीयन्ति प्रजाः=प्रजायें अपने लिये राजा चाहती हैं । वाच्यति मूकः=गूंगा अपने लिये (वाच्) वाणी चाहता है । गीर्यति माणवकः-बालक अपने लिये (गिर)

वाणी चाहता है। पूर्यन्ति कृषकाः=किसान लोग अपने लिये (पुर्) नगरी चाहते हैं। मुमुक्षुर्न दिव्यति=मोक्ष का इच्छुक स्वर्ग (दिव्) नहीं चाहता है॥ समिध्यति अग्निः=अग्नि अपने लिये लकड़ी (समिध्) चाहता है। दशरथः पुत्रकाम्याञ्चकार इयाज चाश्वमेधेन=दशरथ ने अपने लिये पुत्र चाहा था और अश्वमेध से यजन किया था। समित्काम्यन्ति अग्निहोत्रिणः=अग्निहोत्री लोग समिध् चाहते हैं। पूःकाम्यन्ति दरिद्राः=दरिद्र लोग पुरी चाहते हैं। राजकाम्यन्ति सम्पन्नाः=सम्पन्न लोग राजा होना चाहते हैं। बुद्धिं काम्येत छात्रः=विद्यार्थी बुद्धि को चाहे इत्यादि॥

३-आचरण अर्थ में जिस से उपमा दी जावे उस (उपमानवाचक शब्द) कर्म से भी क्यच् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-"विद्यार्थी को पुत्र के समान आचरण करता है" इस अर्थ में पुत्रीयति इत्यादि। दुग्धीयति जलम्=जल को दूध के तुल्य आचरण करता (वर्त्तता) है। पित्रीयति आचार्यम्=आचार्य को पिता के सदृश आचरण करता है॥ अमृतीयति मिष्टम्=मिठाई को अमृत के समान आचरण करता है॥

४-प्रातिपदिकमात्र से आचारार्थ में क्विप् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-कृष्णति॥ कृष्णेत्॥ कृष्णतु इत्यादि॥ स्वति॥ इदामति॥ राजानति॥ पथीनति इत्यादि॥ कृष्णन्ति कृष्णभक्ताः=कृष्णभक्त कृष्ण के तुल्य आचरण करते हैं। रामति रामभक्तः=रामभक्त राम के तुल्य आचरण करता है। स्वन्ति परकीयाः=पराये लोग अपने (स्व) सा आचरण करते हैं। राजानति दस्युः=डांकू राजा के सा आचरण करता है। पथीनति जलम्=पानी मार्ग सा जान पड़ता है। इत्यादि॥

५-"कष्ट के लिये उद्योग करना" अर्थ में कष्ट शब्द से क्यङ् प्रत्यय लगाते हैं। जैसेः-कष्टायते * कष्टायेत * कष्टायताम् * अकष्टायत * कष्टायाञ्चक्रे * कष्टायिषीष्ट * कष्टायिता * कष्टायिष्यते * अकष्टायिष्यत * अकष्टायिष्ट॥ कष्टायते पापी=पापी कष्ट के लिये उद्योग करता है॥

६-शब्द, वैर, कलह, अभ्र, कण्व और मेघ शब्दों से "करने" अर्थ में क्यङ् प्रत्यय लगाते हैं। जैसेः-शब्दायते=शब्द करता है। वैरायते=वैर करता है। कलहायते=कलह करता है। इत्यादि॥

७-करने और कहने अर्थ में कर्मवाचक प्रादिपदिक से णिच् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-घटयति=घड़े को बनाता है वा कहता है। इत्यादि॥

इति नामधातुप्रक्रिया

—:*:—

अथ कण्ड्वादिप्रक्रिया

कण्डू (ञ्) गात्रविघर्षण, खुजलाना

कण्डूयति। कण्डूयते * कण्डूयेत्। कण्डूयेत * कण्डूयतु। कण्डूयताम् * अकण्डूयत्। अकण्डूयत * कण्डूयाञ्चकार। कण्डूयाञ्चक्रे * कण्डूय्यात्। कण्डूयिषीष्ट * कण्डूयिता २ * कण्डूयिष्यति। कण्डूयिष्यते * अकण्डूयिष्यत्। अकण्डूयिष्यत * अकण्डूयीत्। अकण्डूयिष्ट * इत्यादि॥

कण्डूयन्ति पशवो भित्त्या=पशु दीवार से खुजाते हैं इत्यादि॥

मन्तु=अपराध करना

मन्तूयति इत्यादि ५२ धातु, धातुपाठान्तर्गत कण्ड्वादिगण में लिखे हैं उन सब के रूप इसी प्रकार हैं॥

इति कण्ड्वादिप्रक्रिया

—:*:—

अथात्मनेपदप्रक्रिया

क्रिया के अदल बदल (विनिमय) अर्थ में आत्मनेपद होता है॥

व्यतिलुनते कृषकाः=कृषक लोग परस्पर अदला बदली से काटते हैं अर्थात् वह उस का और वह उस का काटता है। व्यतिपाठयन्ते छात्राः=विद्यार्थी परस्पर पढ़ाते हैं॥

गति और हिंसार्थक धातुओं से उक्तार्थ में आत्मनेपद नहीं होता। व्यतिगच्छन्ति पथिकाः=मुसाफ़िर एक दूसरे के मार्ग को अदल बदल कर जाते हैं। यहां आत्मनेपद न हुवा। ऐसे ही=व्यतिघ्नन्ति दुरात्मानः=पापी एक दूसरे का वध करते हैं। इत्यादि॥

नि उपसर्ग से आगे "विश" धातु से आत्मनेपद होता है। निविशते=वह प्रवेश करता है। इत्यादि॥

* परि, वि और अव उपसर्गों से आगे " क्री " धातु से आत्मनेपद होता है। परिक्रीणीते=मोल लेता है। विक्रीणीते=बेचता है। अवक्रीणीते=ख़रीदता है। इत्यादि ॥

* वि और परा उपसर्गों से आगे " जि " धातु से आत्मनेपद होता है। विजयते=जीतता है। पराजयते=हारता है॥

* सम्, अव, प्र और वि उपसर्गों से परे "स्था" धातु से आत्मनेपद होता है। संतिष्ठते=मरता है। अवतिष्ठते=ठहरता है। प्रतिष्ठते=इज्ज़त पाता है॥ वितिष्ठते=विचलता है। उपसर्ग के योग से प्रायः धातु का अर्थ अन्य हो जाता है॥

* छिपाने अर्थ में " ज्ञा " धातु से आत्मनेपद होता है। शतमपजानीते=शत (१००) को छिपाता है॥

* अकर्मक ज्ञा धातु से भी आत्मनेपद होता है। सर्पिषो जानीते=घृत (उपाय) से प्रवृत्त होता है। यहां ज्ञा धातु का कर्म कोई नहीं, इस से अकर्मक है ॥

* तृतीयान्त पद के साथ चर धातु से आत्मनेपद हो, जब कि सम् उपसर्ग पूर्व हो। रथेन सञ्चरते=रथ के साथ चलता है॥

* सम् उपसर्ग से परे दा (ण्) धातु से आत्मनेपद हो, यदि तृतीयान्त पद का योग हो और वह तृतीया विभक्ति, चतुर्थी विभक्ति के अर्थ में हो। दास्या संयच्छते कामी=कामी पुरुष दासी के लिये देता है॥

* सन्नन्त प्रक्रिया में धातु से वही पद होता है जो कि पूर्व (दश गणों में) कह आये हैं। अर्थात् परस्मैपदी धातु से परस्मैपद, आत्मनेपदी से आत्मनेपद। जैसे 'भू' धातु परस्मैपदी है उस से सन्नन्त में भी "बुभूषति" यह परस्मैपद हुवा तथा 'एध' धातु आत्मनेपदी है उस से सन्नन्त में भी "एदिधिषते" यह आत्मनेपद हुवा। नि पूर्वक 'विश' धातु आत्मनेपदी है तो " निविविक्षते" यह सन्नन्त भी आत्मनेपदी रहा॥

* कृञ धातु से आत्मनेपद होता है, गन्धन, अवक्षेपण, सेवन, साहसिक्य प्रतियत्न, प्रकथन और उपयोग अर्थों में। जैसे- गन्धन=चुग़ली करना। उत्कुरुते=चुग़ली करता है। अवक्षेपण=धमकाना। श्येनो वर्त्तिकामुत्कुरुते भर्त्सयतीत्यर्थः। हरिमुपकुरुते सेवत इत्यर्थः। साहसिक्य=बलात्कार=ज़बर्दस्ती। परदारान् प्रकुरुते दुष्टः=परस्त्रियों को बलात्कार करता है दुष्ट। प्रतियत्न=

सुधारना । एधोदकस्योपस्कुरुते=इन्धन पानी को सुधारता है। कथां प्रकुरुते= कथा को कहता है । शतं प्रकुरुते=सौ (धर्मार्थ) लगाता है ॥

इत्यात्मनेपदप्रक्रिया

अथ तिङन्ते परस्मैपदप्रक्रिया–

* अनु और परा उपसर्ग से परे कृञ् धातु से परस्मैपद होता है। अनुकरोति=नक़ल करता है । पराकरोति=दूर करता है ॥

* अभि, प्रति और अति से परे क्षिप धातु से परस्मैपद होता है । अभिक्षिपति । प्रतिक्षिपति । अतिक्षिपति ॥

* प्र से परे "वह" धातु से परस्मैपद होता है । प्रवहति=बहता है ॥

* परि से परे "मृष" धातु से परस्मैपद होता है। परिमृषति=सहता है ॥

* वि, आ (ङ्) उप और परि से परे " रम " धातु से परस्मैपद होता है । विरमति=थमता है । आरमति । परिरमति । उपरमति ॥

इति परस्मैपदप्रक्रिया

अथ तिङन्ते भावकर्मप्रक्रिया

* ति तः आदि प्रत्ययों के साथ भाव और कर्म एकार्थ हों तो धातु से आत्मनेपद होता है ॥

प्रथम दश गणों में जो रूप लिखे हैं, वे कर्तृवाच्य हैं। जैसे–गच्छति देवदत्तः=देवदत्त जाता है । यहां जाता है का एकार्थ देवदत्त से है और देवदत्त गति क्रिया का कर्त्ता=जाने वाला है, इस लिये 'गच्छति' यह रूप कर्तृवाच्य हुवा । इसी प्रकार-छात्रो वेदं पठति=विद्यार्थी वेद को पढ़ता है। यहां पढ़ता है का एकार्थ छात्र से है अर्थात् पढ़ता है, कौन पढ़ता है ? छात्र पढ़ता है और छात्र पठ क्रिया का कर्त्ता=पढ़ने वाला है, इस लिये 'पठति' यह कर्तृवाच्य रूप हुवा, परन्तु जब पठ धातु का कर्मवाच्य रूप बनायेंगे तब "वेदः पठ्यते छात्रेण" ऐसा होगा । अर्थात् " छात्र से वेद पढ़ा जाता है " । पढ़ा जाता है । क्या पढ़ा जाता है । वेद पढ़ा जाता है और वेद पठ क्रिया का कर्म जो पढ़ा जाता है, वह है, इस लिये 'पठ्यते' यह कर्मवाच्य रूप हुवा ॥

क्रिया का करने वाला कर्त्ता, जो काम किया जाय वह कर्म और काम करना व होना आदि भाव कहलाता है ॥

भाव-जैसे "अहं तिष्ठामि=मैं ठहरता हूं" यह कर्तृवाच्य है। अब इस को भाववाच्य बनाना हो तब "मया स्थीयते=मुझ से ठहरा जाता है" यहां ठहरा जाता है। यह क्रिया ही अपना वाच्य है। इत्यादि॥

* प्रायः अकर्मक धातुओं (होना, बैठना, बसना, रहना, ठहरना, खेलना, कूदना, हंसना, हर्ष आदि अर्थ वाले जिन का कर्म नहीं होता) से भाववाच्य रूप बनते हैं और सकर्मक धातुओं (जाना, खाना, शोचना, पढ़ना, मारना, फूंकना आदि अर्थ वाले जिन का कर्म होता है) से कर्मवाच्य रूप होता है। इन्हीं को कर्त्ता में प्रत्यय, भाव में प्रत्यय और कर्म में प्रत्यय है, इस प्रकार कहा करते हैं॥

इस भावकर्मप्रक्रिया में वे रूप लिखे जायंगे जो भाव में प्रत्यय वा कर्म में प्रत्यय लगाकर बनते हैं। जैसेः—

भू-भूयते॥ भूयेत॥ भूयताम्॥ अभूयत॥ बभूवे॥ भाविषीष्ट, भविषीष्ट॥ भाविता, भविता॥ भाविष्यते, भविष्यते॥ अभाविष्यत, अभविष्यत॥ अभावि॥

क्योंकि धातु का अर्थ जो क्रिया वा भाव है उस में द्विवचन और बहुवचन नहीं। इस लिये परिशेष से एकवचन ही होता है और मध्यमपुरुष तथा उत्तम पुरुष भी नहीं होते। इस लिये परिशेष से प्रथमपुरुष ही होता है, अन्य नहीं॥

अनु उपसर्ग पूर्व लगने से भू धातु का अर्थ अनुभव करना हो जाता है, इस लिये "अनुभू" यह सकर्मक रहता है। अनुभूयते अनुभूयेते अनुभूयन्ते। अनुभूयसे इत्यादि॥ अनुभूयेत अनुभूयेयाताम् अनुभूयेरन् इत्यादि॥ अनुभूयताम् अनुभूयेताम् अनुभूयन्ताम् इत्यादि॥ शेष रूप अपने आप समझने चाहियें॥ यहां सकर्मक होने से कर्म में एकत्व, द्वित्व और बहुत्व होते हैं। युष्मद् और अस्मद् भी कर्म (अवस्था में) वाच्य रहते हैं, इस लिये तीनों पुरुष और तीनों वचन होकर सब रूप होते हैं। जैसे-भूयते पण्डितेन=पण्डित से हुआ जाता है। यह भाववाच्य होने से एक ही प्रयोग होता है। और सुखमनुभूयते धनिना=धनी से सुख भोगा जाता है। त्वमनुभूयसे राज्ञा=तू राजा से आज़माया जाता है। अहमनुभूये सभया=मैं सभा से अनुभव किया जाता हूं इत्यादि। ऐसे ही द्विवचन और बहुवचन समझो॥

णिजन्त भू धातु से=भाव्यते॥ भाव्येत॥ भाव्यताम्॥ अभाव्यत॥ भावयाञ्चक्रे, भावयामासे, भावयाम्बभूवे॥ भाविषीष्ट। भाविता॥ भाविष्यते॥ अभाविष्यत॥ अभावि अभावयिषाताम् अभावयिषत। अभावयिष्ठाः अभावयिषाथाम् इत्यादि॥

णाठ्येते घटौ कुलालेन=कुम्हार से दो घड़े बनाये जाते हैं। पाठ्यसे त्वं पण्डितो गुरुणा=गुरु से तू पण्डित बनाया जाता है। पाठ्येऽहं निपुणः शिक्षकेण=शिक्षक से मैं निपुण बनाया जाता हूं। इत्यादि ॥

सन्नन्त भू धातु से-बुभूष्यते ॥ बुभूष्येत ॥ बुभूष्यताम् ॥ अबुभूष्यत ॥ बुभूषाञ्चक्रे ॥ बुभूषिषीष्ट ॥ बुभूषिता ॥ बुभूषिष्यते ॥ अबुभूषिष्यत ॥ अबुभूषि ॥

भाव में प्रत्यय होने से प्रथमपुरुष और एकवचन ही होता है। बुभूष्यते पुरुषेण धनिना=पुरुष से धनी होना चाहा जाता है। इत्यादि ॥

यङन्त भू-बोभूयते ॥ बोभूयेत ॥ बोभूयताम् ॥ अबोभूयत ॥ बोभूयाञ्चक्रे ॥ बोभूयिषीष्ट ॥ बोभूयिता ॥ बोभूयिष्यते ॥ अबोभूयिष्यत ॥ अबोभूयि ॥ तत्र मया, त्वया, तेन वा बोभूयते=वहां मुझ से, तुझ से, वा उस से अत्यन्त हुवा जाता है ॥ इत्यादि ॥

ष्टुञ् (ञ्) धातु=स्तुति करना

स्तूयते स्तूयेते स्तूयन्ते। स्तूयसे इत्यादि ॥ स्तूयेत ॥ स्तूयताम् ॥ अस्तूयत ॥ तुष्टुवे ॥ स्ताविषीष्ट, स्तोषीष्ट ॥ स्ताविता, स्तोता ॥ स्ताविष्यते, स्तोष्यते ॥ अस्ताविष्यत, अस्तोष्यत ॥ अस्तावि। अस्तोषाताम्, अस्ताविषाताम्। अस्ताविषत, अस्तोषत इत्यादि ॥

स्तूयसे त्वं मया=तू मुझ से स्तुत किया जाता है। स्तूयेऽहं संसारेण=मैं संसार से स्तुत किया जाता हूं। स्तूयते मया जगदीश्वरः=परमेश्वर मुझ से स्तुत किया जाता है। इत्यादि ॥

ऋ=गति

अर्यते अर्येते अर्यन्ते इत्यादि ॥ अर्येत ॥ अर्यताम् ॥ आर्यत ॥ आरे ॥ आरिषीष्ट, अर्षीष्ट ॥ आरिता, अर्ता ॥ आरिष्यते, अर्ष्यते ॥ आरिष्यत, आर्ष्यत ॥ आरि। आरिषाताम्, आर्षाताम्। इत्यादि ॥

अर्यते ग्रामो देवदत्तेन=देवदत्त से ग्राम जाया जाता है ॥

स्मृ=स्मरण

स्मर्यते स्मर्येते ॥ स्मर्येत ॥ स्मर्यताम् ॥ अस्मर्यत ॥ सस्मरे ॥ स्मारिषीष्ट, स्मृषीष्ट ॥ स्मारिता, स्मर्ता इत्यादि ॥ स्मर्यते माता पुत्रेण=पुत्र से माता स्मरण की जाती है। इत्यादि ॥

स्रंसु=गिरना, चूना, टपकना

स्रस्यते ॥ स्रस्येत ॥ स्रस्यताम् ॥ अस्रस्यत ॥ सस्रंसे ॥ स्रंसिषीष्ट ॥ स्रंसिता ॥ स्रंसिष्यते ॥ अस्रंसिष्यत ॥ अस्रंसि ॥

स्रस्यते जलेन घृतेन वा-घृत वा जल से टपका जाता है इत्यादि ॥

(टु) णदि=समृद्धि, आनन्द

नन्द्यते ॥ नन्द्येत ॥ नन्द्यताम् ॥ अनन्द्यत ॥ ननन्दे ॥ नन्दिषीष्ट इत्यादि ॥ ब्राह्मणेन नन्द्यते=ब्राह्मण से आनन्दित हुवा जाता है इत्यादि ॥

यज-इज्यते इज्येते इज्यन्ते ॥ इज्येत ॥ इज्यताम् ॥ ऐज्यत ॥ ईजे ईजाते ॥ यक्षीष्ट ॥ यष्टा ॥ यक्ष्यते ॥ अयक्ष्यत ॥ अयाजि ॥ इज्यन्त वाय्वादयो देवाः होमेन=होम से वाय्वादि देव पूजे जाते हैं (सुधारे जाते हैं) इत्यादि ॥

तनु=विस्तार

तायते, तन्यते ॥ तायेत, तन्येत ॥ तायताम्, तन्यताम् ॥ अतायत, अतन्यत ॥ तेने ॥ तनिषीष्ट ॥ तनिता ॥ तनिष्यते ॥ अतनिष्यत ॥ अतानि अतनिषाताम् ॥ तन्यन्ते तन्तवः=तार फैलाये (पूरे) जाते हैं इत्यादि ॥

तप-तप्यते ॥ तप्येत ॥ तप्यताम् ॥ अतप्यत ॥ तेपे ॥ तप्सीष्ट ॥ तप्ता ॥ तप्स्यते ॥ अतप्स्यत ॥ अतप्त, अतापि ॥ अनुताप अर्थ में 'अतप्त' ही होता है । जैसे अन्वतप्त पापेन=पापी ने अनुताप (पछतावा) किया ॥

दा-दीयते दीयेते दीयन्ते ॥ दीयेत ॥ दीयताम् ॥ अदीयत ॥ ददे ॥ दासीष्ट दायिषीष्ट ॥ दायिता, दाता ॥ दायिष्यते ॥ दास्यते ॥ अदायिष्यत, अदास्यत ॥ अदायि । अदायिषाताम्, अदासाताम् । अदायिषत, अदासत । अदायिष्ठाः, अदास्थाः । अदायिषाथाम्, अदासाथाम् । इत्यादि ॥ दीयतेऽन्नं धनिना बुभुक्षितेभ्यः=धनी से भूखों के लिये अन्न दिया जाता है । इत्यादि ॥

भञ्जो-भज्यते ॥ भज्येत ॥ भज्यताम् ॥ अभज्यत ॥ बभञ्जे ॥ भङ्क्षीष्ट ॥ भङ्क्ता ॥ भङ्क्ष्यते ॥ अभङ्क्ष्यत ॥ अभाजि, अभञ्जि । अभङ्क्षाताम् । अभङ्क्षत ॥ अभङ्क्थाः । अभङ्क्षाथाम् इत्यादि ॥ भज्यन्ते वानरैर्वृक्षाः=वानरों से वृक्ष तोड़े जाते हैं । इत्यादि ॥

लभ-लभ्यते ॥ लभ्येत ॥ लभ्यताम् ॥ अलभ्यत ॥ लेभे ॥ लप्सीष्ट ॥ लब्धा ॥ लप्स्यते ॥ अलप्स्यत ॥ अलाभि, अलम्भि । अलप्साताम् । इत्यादि ॥ लभ्यते लक्ष्मीर्व्यापारिणा=व्यापारी से लक्ष्मी पाई जाती है । इत्यादि ॥

इति भावकर्मप्रक्रिया

अथ तिङन्ते कर्मकर्तृप्रक्रिया

जब कर्म के तुल्य क्रियाफल वाला कर्त्ता हो तब कर्त्ता=कर्मवत हो अर्थात् कर्म में प्रत्यय होने पर जैसे कार्य होते हैं वैसे ही यहां भी हों ॥ जैसे कर्त्ता में प्रत्यय की दशा में " फलं पचति " होता है, अब कर्मकर्तृ में " पच्यते फलम् " ऐसा होगा । पच्यते ॥ पच्येत इत्यादि सब रूप " कर्म में प्रत्यय " के सदृश जैसे इस से पूर्व भावकर्मप्रक्रिया में बने, वैसे ही यहां भी जानो ॥ फलं पच्यते=फल आप से ही पकता है । काष्ठं भिद्यते=लकड़ी आप से ही फटती है । इत्यादि ॥

इति कर्मकर्तृप्रक्रिया

—:*:—

अथ तिङन्ते लकारार्थप्रक्रिया

अब लकारार्थप्रक्रिया में दश लकारों के अर्थ का व्याख्यान किया जायगा । यद्यपि दश गण और प्रक्रियाओं में उस २ लकार के रूपों के सामने भाषार्थ प्रायः लिखा गया है, उस से विद्यार्थियों को कुछ २ अर्थ का ज्ञान हो भी गया, तथापि लट् आदि लकारों के व्याख्यापूर्वक विशेष अर्थों के बोधार्थ इस प्रक्रिया में नियम (सूत्र) देते हैं ॥

१–जब कि स्मरणार्थ पद समीप में हो तब धातु से भूतानद्यतन काल में लृट् होता है । जो काल बीत गया वह भूत कहाता है और प्रातःकाल जगने के समय से रात्रि में सोने के समय पर्यन्त जितना काल है वह "अद्यतन" है । अथवा गत रात्रि के अगले दो प्रहर, समस्त दिन और आगामिनी रात्रि के प्रथम के दो प्रहर यह "अद्यतन" है (जिसे भाषा में आज कहते हैं) और अद्यतन (आज) को छोड़ कर जो भूतकाल है वह "अनद्यतन" भूतकाल कहाता है ॥

उदाहरण–स्मरसि वत्स ! मथुरायां वत्स्यामः=याद है प्यारे ! हम मथुरा में वसते थे । यहां "स्मरसि" के समीप में भूत काल में भी "वत्स्यामः" यह लृट् का प्रयोग होता है । इसी प्रकार–बुध्यसे हरिवर्षं गमिष्यामः=याद है ? कि यूरोप को गये थे । चेतयसे कलाः पठिष्यामः=तू स्मरण करता है कि हम कलाओं को पढ़ते थे ? इत्यादि ॥

२–परन्तु "यत्" शब्द के योग में उक्त प्रकार लृट् नहीं होता । जैसे–अभिजानासि यद्वने अभुञ्ज्महि=याद है कि जो वन में भोजन किया था (हमने) । "यत्" शब्द आने से "भोक्ष्यामहे" न हुवा ॥

३-'स्म' के योग में अनद्यतनभूत परोक्ष काल में लट् लकार होता है। जैसे-यजति स्म युधिष्ठिरः=युधिष्ठिर ने यज्ञ किया था॥

४-वर्त्तमान के समीप का जो भूत और भविष्यत् उस में भी विकल्प से वर्त्तमान के सदृश लट् लकार होता है। जैसे-कदाऽऽगतोऽसि=तू कब आया है। यहां आगमन क्रिया यद्यपि भूतकाल की है तथापि बहुत देर न होने से वर्त्तमान के समीप है इसी लिये "असि" यह लट् का प्रयोग हुआ। अयमागच्छामि आगमं वा=यह आया हूं। यहां यद्यपि आगमन हो चुकने से भूतकालस्थ है, तथापि वर्त्तमान के समीप में "आगच्छामि" ऐसा प्रयोग होता है और दूसरे पक्ष में 'आगमम्' यह लुङ् का प्रयोग भी। एष गच्छामि गमिष्यामि वा=यह जाता हूं। यहां जाना क्रिया यद्यपि भविष्यत् में होगी, तथापि वर्त्तमान के समीप होने से गच्छामि, यह लट् का प्रयोग भी होता है॥

५-हेतु हेतुमान् अर्थ में भविष्यत्काल में लिङ् लकार होता है। जैसे-परमात्मानं नमेच्चेत् आनन्दमाप्नुयात्=यदि परमात्मा को नमस्कार करेगा तो आनन्द को प्राप्त होगा। यहां नमस्कार करना हेतु और आनन्द पाना हेतुमान् है। दोनों में 'नमेत्' और 'आप्नुयात्' ये लिङ् लकार के प्रयोग हुवे॥

६ विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, सम्प्रश्न और प्रार्थन अर्थों में लिङ् लकार होता है। विधि=भृत्य आदि अपने से छोटों को आज्ञा देना=प्रेरणा करना। जैसे त्वं ग्रामं गच्छेः=तू ग्राम को जा। निमन्त्रण=किसी आवश्यक कार्य में नियुक्त करना जैसे-मम गृहे भुञ्जीत भवान्=मेरे घर में आप भोजन कीजिये। आमन्त्रण=किसी को ऐसी आज्ञा करना कि जिसे वह चाहे तो करे चाहे न करे। जैसे-इहासीत भवान्=आप यहां बैठिये। अधीष्ट=सत्कारपूर्वक किसी से कुछ निवेदन करना। जैसे-पुत्रमध्यापयेद्भवान्=आप पुत्र को पढ़ाइये। संप्रश्न=पूछना। जैसे-भोः वेदमधीयीय वा तर्कम्? क्यों जी! वेद पढूं वा तर्क? प्रार्थन=प्रार्थना, जैसे-मह्यमन्नं, विद्यां, शिक्षां वा दद्यास=मेरे लिये अन्न, विद्या वा शिक्षा देओ। इसी प्रकार उन्हीं अर्थों में लोट् लकार भी जानो॥

इति लकारार्थप्रक्रिया

समाप्तं चेदं तिङन्तप्रकरणम्

अथ कृदन्ताः

इस प्रकरण में जो प्रत्यय धातु से आगे लगाये जायंगे वे 'कृत्' कहाते हैं। इसी लिये इस प्रकरण को 'कृदन्त' कहते हैं। कृदन्त की प्रातिपदिक संज्ञा होकर सुबन्त शब्द बन जाते हैं॥

इस प्रकरण में यदि एक प्रत्यय का अपवाद दूसरा प्रत्यय कहैं और वह प्रत्यय एक दूसरे से भिन्न स्वरूप का हो, तो वारी २ से दोनों ही प्रत्यय होते हैं, यह नहीं कि एक का अपवाद दूसरा कहने पर प्रथम को बाधा हो जावे परन्तु यह नियम स्त्री प्रत्ययों के लिये नहीं॥

इस से आगे अक और तृन् प्रत्ययपर्यन्त जो प्रत्यय कहेंगे वे 'कृत्य' भी कहाते हैं॥

१-भाव और कर्म अर्थ में धातु से तव्य और अनीय प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे-एधितव्यम्। एधनीयम्। चेतव्यः। चयनीयः। पक्तव्यः। पचनीयः। भेत्तव्यः। भेदनीयः। स्नातव्यम्। स्नानीयम्। दातव्यम्। दानीयम् इत्यादि॥

२-इसी अर्थ में एलिम प्रत्यय भी लगाते हैं। पचेलिमः। भिदेलिमः। इत्यादि॥

३-कृत्य प्रत्यय और ल्युट्(अक प्रत्यय बहुल करके होते हैं। बहुल का लक्षणः—

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति ॥१॥

अर्थ-१-जो कार्य किसी विधि में न कहा हो और हो जावे। २—जो होना चाहिये परन्तु न हो। ३-नित्य कहा हो परन्तु विकल्प से हो। ४-और कहीं इन प्रकारों के अतिरिक्त और भी कुछ व्यवहार होना। यह ४ प्रकार का "बाहुलक" कहाता है। जैसे—दानीयो विप्रः=जिस के लिये दान दिया जाय वह दानीय ब्राह्मण यहां "दा" धातु से "अनीय" प्रत्यय नहीं हो सकता था परन्तु हो गया क्योंकि भाव और कर्म में ही उक्त प्रत्यय का नियम था। ब्राह्मण न तो भाव है, न कर्म, किन्तु सम्प्रदान है (सम्प्रदान उसे कहते हैं जिसे दान दिया जावे) तथापि अनीय प्रत्यय हो गया। स्नान्ति येन तत्-स्नानीयम् जलम्=स्नान करते हैं जिस से वह जल स्नानीय है। यहां भी जल न तो भाव है न कर्म, किन्तु करण है (करण उस साधन को कहते हैं जिस से कोई काम किया जावे) तथापि "स्नानीय" में 'स्ना' धातु से अनीय प्रत्यय होगया॥

४-स्वरान्त धातु से उक्त अर्थ में यत् (य) प्रत्यय होता है। जैसेः—
चि-चेयम्। दा-देयम्। ग्ला-ग्लेयम्। इत्यादि॥

५–जो धातु पवर्गान्त हैं और उन में अन्त से पूर्व अकार अक्षर है, उन धातुओं से उक्त अर्थों में यत् (य) प्रत्यय हो। जैसे शप–शप्यम्। लभ लभ्यम्॥

६–इ स्तु शास् वृ दृ जुष् इन से उक्त अर्थ में क्यप् (य) प्रत्यय होता है। इ–इत्यः। स्तु–स्तुत्यः। शास्–शिष्यः। वृ–वृत्यः। आ (ङ्) दृ–आदृत्यः। जुष् जुष्यः॥

७–मृज् धातु से विकल्प से क्यप् (य) प्रत्यय होता है। जैसे–मृज्यः, मार्ग्यः॥

८–ऋवर्णान्त और व्यञ्जनान्त धातुओं से ण्यत् (य) प्रत्यय होता है। कृ–कार्यम्। हृ–हार्यम्। धृ धार्यम्। मृज्–मार्ग्यः। भुज् भोज्यम्=भक्ष्य। भोग्यम्=पालनीय॥ एधितव्यं धर्मेण=धर्म से बढ़ना चाहिये। एधनीयं वा। चेतव्यो धर्मः=चुनना चाहिये धर्म। चयनीयाः समिधो वेद्याम्=चुननी चाहियें समिधा वेदी में। पक्तव्यः सूपस्त्वया=पकानी चाहिये दाल तुझ को। पक्तव्यम् पायसम्=खीर पकानी चाहिये। पचेलिम ओदनः सुष्ठु=भात भले प्रकार पकाना चाहिये। भेत्तव्यो रिपुमूर्द्धा वीरेण=छिन्न करना चाहिये शत्रु शिर वीर को। भेदनीयं न जलम्=पानी न तोड़ना चाहिये। स्नातव्यं प्रत्यहं प्रातः=प्रातःकाल नित्य स्नान करना। स्नानीयं वा। भिक्षुकेभ्यो भोजनं दातव्यं, दानीयं, देयं वा=भिक्षुकों के लिये भोजन देना। भिदेलिमा भित्तिः=भींत तोड़नी। चेयं धनं धर्माय=धर्म के लिये धन सञ्चय करना। ग्लेयं पापात् धर्मात्मना=धर्मात्मा को पाप से ग्लानि करनी। सभ्येन सभायां निरर्थकं न शप्यम्=सभ्य को सभा में व्यर्थ न बोलना। लभ्यं धनं वाणिज्येन=वाणिज्य से धन प्राप्त करना। इत्यो ग्रामो मया=मुझ को ग्राम जाना। स्तुत्यो गुरुः शिष्येण=शिष्य को गुरु स्तुत करना। शिष्यो गुरुणा छात्रः=गुरु को विद्यार्थी सिखाना चाहिये। वृत्यः पुरुषः कन्यया=वरना चाहिये पुरुष कन्या को। आदृत्याः सर्वे जनाः=आदर किये जावें सब मनुष्य। मृज्यम् पात्रम्=वर्त्तन मांजना चाहिये। कार्यो धर्मः=धर्म करना चाहिये। सभा कार्या=सभा करनी। कार्यं गृहम्=घर करना=बनाना। हार्यं न कस्यापि धनम्=किसी का भी धन नहीं चुराना। धार्यं तेजः=तेज धारना। मार्ग्यः सूपः=दाल साफ़ करनी। भोज्य ओदनः=भात खाना। भोग्या प्रजा=प्रजा पालनी। इत्यादि॥

इति कृत्यप्रक्रिया

९–कर्त्ता अर्थ में धातु से ण्वुल् (अक) और तृच् प्रत्यय होते हैं। जैसे–कृ–यः करोति सः कारकः। तृच्–कर्त्ता। हर्त्ता। भर्त्ता। वक्ता। पक्ता। भोक्ता। गन्ता। पाता। दाता। ग्रहीता। भविता। चेतिता। भक्ता। होता। देविता।

सोता । तोत्ता । तनिता । क्रेता । चोरयिता ॥ हारकः । याचकः । पाचकः। भोजकः । गमकः । दायकः । ग्राहकः । भावकः । चेतकः । लोदकः इत्यादि ॥

१०-पचादि धातुओं से कर्त्ता अर्थ में अच् प्रत्यय होता है । पचादिगण की पहचान स्वरूप से ही करनी होगी तथापि कुछ रूप लिखे जाते हैं-पचः। नदः । नदी । चोरः । चोरी । देवः । देवी । आरभृ आरभरा । श्वन्+पच्= श्वपचा । यङन्त क्री-चेक्रियः । नी-नेन्यः । लू लोलुवः । लुप-लोलुपः । -पू-पोपुवः । मृज-मरीमृजः । चर-चराचरः । चल-चलाचलः । पत-पतापतः । वद् वदावदः । हन् घनाघनः । चरः । पतः । वदः । हनः । रात्रि+चर= रात्रिञ्चरः, रात्रिचरः । इत्यादि ॥

११-ग्रह आदि धातुओं से णिनि (इन्) प्रत्यय होता है। जैसे-ग्राही। स्थायी । मन्त्री । विशयी । विषयी । परि भू-परिभावी, परिभवी । याची। वादी । प्रतिवादी इत्यादि ॥

१२-नदि आदि धातुओं से ल्यु (अन) प्रत्यय होता है । नदि-नन्दनः। लवणः । छेदनः । भेदनः । वचनः । करणः इत्यादि ॥

उदाहरणानि-

घटस्य कर्त्तारं बोधयामि=घड़े के बनाने वाले को समझाता हूं । धनस्य हर्त्तारं दण्डयामि । राज्यस्य भर्त्तारं नमामि । वक्तारो व्याख्यास्यन्ते । पक्तारः पक्ष्यन्ति । भोक्तारो भोक्ष्यन्ते । गन्तारो गमिष्यन्ति । यातारो यास्यन्ति । दातारो दास्यन्ति । ग्रहीतारो ग्रहीष्यन्ति । भवितारो भविष्यन्ति पण्डिताः । चेतितारश्चेतिष्यन्ति । अत्तारोऽत्स्यन्ति । होतारौ होष्यतः । देवितारः क्रीडिष्यन्ति । सोता सोष्यति सोमम् । तोत्ता जनानां न सुखं समेधते । शार्कपच आगतः। वशंवदः किं कथयति । नदे नद्यां वा बहु जलं प्रवहति। वृद्धेयं चोरी वर्त्तते । कल्माषपादोऽयं चोरोऽस्ति । वायुर्देवोऽस्ति । उषा देवी राजते। आरभरा कुलटा, नेयं कुलाङ्गना । श्वपचा चण्डाली, श्वपचः पुमांश्चण्डालः । चेक्रियो रेलीब्राता=रेलीब्रादर (एक प्रसिद्ध व्यापारी का नाम है) अत्यन्त खरीदार है । नेन्यः स हि अन्नस्य=वही अन्न का अतिशय पहुंचाने वाला है। लोलुवः क्षेत्रेषु प्रशस्यते=अधिक काटने वाला क्षेत्रों में प्रशंसा पाता है। लोलुपः साधुषु निन्द्यते । पोपुवः प्रशस्यते । मरीमृजः पात्राणां भृत्योऽयम् । चराचरो दूतोऽयम् । पतापतो निर्बुद्धिः । वदावदः पण्डितोऽयम् । घनाघनः शूरः । रात्रिञ्चरा राक्षसा भवन्ति इत्यादि ॥

१३–भूतकाल में धातु से क्त प्रत्यय लगाया जाता है, कर्म अर्थ में। कृ=करना से, जो किया गया वह कृतः। मृतः। धृतः। दत्तः। जितः। पराजितः। दृष्टः। श्रुतः। ज्ञातः। उक्तः। कथितः। गृहीतः। मारितः। पाठितः। अध्यापितः। अधीतः। गतः इत्यादि॥

१४–भूतकाल में धातु से कर्त्ता अर्थ में क्तवतु प्रत्यय लगाते हैं। जैसे–जिस ने पढ़ लिया वह—अधीतवान्। जिस ने चल लिया वह गतवान्। कृतवान्। अध्यापितवान्। दत्तवान्। हृतवान्। दृष्टवान्। ज्ञातवान्। उक्तवान्। कथितवान्। क्रीतवान्। चोरितवान्। इत्यादि॥

१५–अकर्मक और गति अर्थ वाले धातुओं से कर्त्ता अर्थ में क्त प्रत्यय लगाते हैं। जैसे–गतः। मृतः। भूतः। स्थितः। भीतः। आङ्‌रुह–आरूढः इत्यादि॥

१६–धातु से तुमुन् (तुम्) प्रत्यय लगाते हैं जब कि वह क्रिया किसी दूसरी क्रिया का प्रयोजन हो। जैसे भुज=भोक्तुं गच्छति=खाने को जाता है। यहां भोजन क्रिया प्रयोजन है गमन क्रिया का। इसी प्रकार-स्थातुम्। पठितुम्। अध्येतुम्। मारयितुम्। सेवितुम्। भवितुम्। अत्तुम्। होतुम्। सेवितुम्। सोतुम्। क्रेतुम्। चोरयितुम् इत्यादि शब्द अव्यय बन जाते हैं॥

१७–जब कि दो क्रियाओं में एक पूर्वकाल की और दूसरी उत्तरकाल की क्रिया हो तो पूर्वकाल की क्रिया में वर्त्तमान धातु से क्त्वा प्रत्यय लगाते हैं। जैसे भुज्-क्त्वा=भुक्त्वा पठति=खाकर पढ़ता है। यहां भोजन और पठन दो क्रियाओं में भोजन क्रिया का पूर्वकाल और पठन क्रिया का उत्तर काल है इस लिये "भुज्" धातु से "क्त्वा" प्रत्यय हुवा। इसी प्रकार–कृत्वा। पठित्वा। गत्वा। स्थित्वा इत्यादि॥

१८–पूर्वोक्त अर्थ में क्त्वा के स्थान में ल्यप् (य) रहता है, जब कि नञ् छोड़ कर कोई अन्य पद धातु से मिला हो। जैसे-उत् स्था=उत्थाय। प्र–णम्=प्रणम्य सम्–कृ=संस्कृत्य। उत्–लिख=उल्लिख्य। इत्यादि शब्द भी अव्यय बन जाते हैं॥

इस कृदन्त प्रकरण को यहीं समाप्त करते हैं। हमारी समझ में इस चतुर्थ पुस्तक को पढ़ चुकने पर विद्यार्थी संस्कृत पुस्तक से ही संस्कृत पढ़ने की योग्यता रक्खेंगे, अतः इस कृदन्त प्रकरण को संस्कृत में ही जो व्याकरण हैं उन्हीं के द्वारा पढ़ना उत्तम होगा। यह प्रकरण विस्तृत अवश्य है परन्तु सुगम होने से संस्कृत द्वारा पढ़ना सुलभ है॥ *॥ इति कृदन्ताः॥ *॥

अथ कारकप्रकरणम्

अब प्रथमा द्वितीयादि ७ विभक्तियों के स्थान का वर्णन करेंगे। किस २ स्थान में कौन २ विभक्ति होनी चाहिये, सो २ आगे लिखे अनुसार जानो॥

"कारक" उसे कहते हैं जिस का क्रिया से साक्षात् (डैरेक्ट या सीधा) सम्बन्ध हो। जैसे-कुलालो घटं करोति। यहां कुलाल कर्ता, घट कर्म और करोति क्रिया पद है। करना रूप क्रिया का कुलाल और घट दोनों से साक्षात् सम्बन्ध है। क्योंकि न तो कुलाल के विना करना बन सकता, न कर्म (घट) के विना करना बन सकता है। इसी प्रकार करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण ये ४ मिल कर सब ६ कारक होते हैं। इन सब का अर्थ उस २ कारक के अवसर में करेंगे॥

१-जब किसी प्रातिपदिक का अर्थमात्र वा उस का स्त्री पुरुष नपुंसक इन में से कोई लिङ्गमात्र वा एक, द्वि, बहु; इन में से कोई वचनमात्र ही दिखलाना हो, अन्य कोई कारक न हो तब उस प्रातिपदिक से प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे-घटः। स्त्री। कुलम्। रामलक्ष्मणौ। वनानि इत्यादि। यहां इन शब्दों का अर्थ लिङ्ग और वचनमात्र ही बतलाया गया है किन्तु ये घटादि पदार्थ बनते, बिगड़ते, रक्खे, फेंके, फोड़े, गये, आये आदि किसी क्रियाविशेष से सम्बद्ध नहीं हैं। अर्थात् संस्कृत में जब किसी वस्तु का नाममात्र भी लेना होता है तो विना प्रथमा विभक्ति के प्रयोग नहीं होता॥

२-सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है जैसे हे राम! भो बालकौ! हे शिष्याः! इत्यादि॥

३-कर्त्ता क्रिया के फल को जिस पर अत्यन्त चाहे वह 'कर्म' कहाता है और उस में द्वितीया विभक्ति होती है। परन्तु यदि कर्म में ही प्रत्यय हुआ हो तब तो कर्म में प्रथमा ही होती है। जैसे-वेदं पठति। यहां पढ़ने वाला पठन क्रिया के फल को वेद पर चाहता है कि पठन से वेद पठित होजावे इस लिये वेद कर्म है उस में द्वितीया विभक्ति हुई। ऐसे ही-ग्रामं गच्छति। घृतं स्पृशति। मिष्टं खादति। पायसं जुहोति। अश्वं तुदति। सोमं सुनोति। पुत्रं सूते। वस्त्रं तनोति। कटं करोति। कम्बलं क्रीणाति। धनं चोरयति इत्यादि॥

परन्तु जब कर्म में प्रत्यय होता है तब इन सब कर्मों में प्रथमा होती है। जैसे-वेदःपठ्यते=वेद पढ़ा जाता है। ग्रामो गम्यते। घृतं स्पृश्यते। सूपः खाद्यते। पायसो हूयते। अश्वस्तुद्यते। सोमः सूयते। पुत्रो सूयते मात्रा। तन्तवस्तन्यन्ते। कटः क्रियते। कम्बलः क्रीयते। मुद्राश्चोर्यन्ते इत्यादि॥

४-और अकथित कर्म में भी द्वितीया होती है। अकथितकर्म-जैसे-दुह, याच, पच, दण्ड, रुध, प्रच्छ, चि, ब्रू, शु, जि, मन्थ, मुष, नी, हृ, कृष और वह तथा इन्हीं के समानार्थ वाले अन्य धातुओं के दो कर्म होते हैं, एक कथित दूसरा अकथित अर्थात् एक मुख्य दूसरा गौण। इस सूत्र से गौण कर्म में भी द्वितीया होती है, यह कहा गया है। जैसे गां दुग्धं दोग्धि=गौ से दूध को दुहता है। यहां दूध तो मुख्य कर्म है और गौ गौण कर्म है, उस में भी द्वितीया विभक्ति हुई। ऐसे ही-धनिनं कम्बलं याचते भिक्षुः। तण्डुलानोदनं पचति सूदः। अपराधिनं शतं दण्डयति। गां गोष्ठं रुणद्धि। बालं पन्थानं पृच्छ। वृक्षं फलानि अवचिनु। शिष्यं धर्मं ब्रूहि। पुत्रं धर्मं शाधि। शत्रुं ग्रामं जयति। दुग्धं घृतं मथ्नाति। धूर्त्तो धनिनं शतं मुष्णाति। अजां ग्रामं नयति। इत्यादि॥

५-जिस साधन की सहायता से कर्त्ता अपना काम करे, वह करण कहाता है और काम करने में जो स्वतन्त्र हो वह कर्त्ता कहाता है। कर्त्ता और करण इन दोनों में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे वीरेण असिना शत्रुर्हतः= वीर ने खड्ग से शत्रु मारा। यहां वीर पुरुष मारने के काम में स्वतन्त्र है इस से कर्त्ता है, उस में तृतीया हुई और खड्ग मारने का साधन (करण) है इस से असि (खड्ग) में तृतीया हुई॥

परन्तु यदि कर्त्ता वा करण में प्रत्यय हो तब इन दोनों में भी प्रथमा ही होती है। जैसे वीरो हन्ति। यहां हन् धातु से कर्त्ता में तिङ् प्रत्यय है और वीर कर्त्ता है इस लिये उस में प्रथमा हुई। करण में प्रत्यय का उदाहरण कृदन्त पूर्ण पढ़कर आवेगा॥

६-दाता जिस के लिये दान करे वह सम्प्रदान कहाता है, उस में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-ब्राह्मणाय गां ददाति यजमानः। विद्यार्थिने पुस्तकं विद्यां च ददाति पण्डिताः। शीतार्त्ताय कम्बलोदेयः। बुभुक्षितायान्नं दातव्यम्। पिपासवे जलं दानीयम् इत्यादि॥

७-नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् और वषट् इन के अर्थ से जिस शब्द का योग हो उस से चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे परमात्मने नमः। राज्ञे स्वस्ति। अग्नये, वायवे, वरुणाय, इन्द्राय, प्रजापतये, सूर्याय, चन्द्रमसे वा स्वाहा। पितृभ्यः स्वधा। अलम्=पर्याप्त, काफ़ी-अलं मल्लोऽयमपरमल्लाय। अलमन्नमिदं क्षुधायै। अलं जलं पिपासायै। इन्द्राय वषट्=इन्द्र के लिये पूजा सत्कार इत्यादि॥

८—दो पदार्थों का जब विभाग होता है तो जहां से विभाग हो उसे अपादान कहते हैं। अपादान में पञ्चमी होती है। जैसे वृक्षात् फलानि पतन्ति। यहां वृक्ष और फल का विभाग वृक्ष अवधि से हुआ है, अतः वृक्ष से पञ्चमी हुई। अश्वात् पतति। पर्वतात् गङ्गा अवतरति। ग्रामादागच्छति। गृहादागतः। इत्यादि॥

९—शेष अर्थात् प्रातिपदिकार्थमात्रादि जहां प्रथमा होती है, उस से तथा कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण इन सब कारकों और सम्बोधन से शेष रहा जो "सम्बन्ध" उस में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे—मम वस्त्रम्। यहां मेरा वस्त्र के साथ संबन्ध है। गुरोश्चरणयोः कृपा। यहां गुरु का चरणों से और चरणों का कृपा से सम्बन्ध है। पितुः पुत्रः। देवदत्तस्याश्वः। विष्णुमित्रस्य पुस्तकम्। इत्यादि॥

१०—आधार को अधिकरण कहते हैं उस में सप्तमी विभक्ति होती है। और दूर समीप शब्द और इन्हीं के अर्थ वाले अन्य शब्दों से भी सप्तमी होती है। अधिकरण को कोई लोग ३ प्रकार का मानते हैं १-ऊपर २ विषय में ३-भीतर। जैसे-आसने उपविशति=आसन के ऊपर बैठता है। मोक्षे बुद्धिरस्ति-मोक्षविषय में बुद्धि है। तिलेषु तैलमस्ति। तिलों के भीतर तेल है। गृहे गृहिणी अस्ति। घर के भीतर स्त्री है। दूरे वसामि। समीपे तिष्ठामि। अन्तिके पठामि इत्यादि॥

इति कारकविभक्तयः

—:*:—

अथ उपपदविभक्तयः—

उपपद विभक्ति किसी समीपस्थ पद के कारण से हुआ करती हैं। जैसे—

११—पृथक्, विना और नाना के योग में तृतीया, पञ्चमी वा द्वितीया होती हैं। जैसे-गृहात् पृथक् तिष्ठ। मां पृथक् गच्छ। रामेण पृथक् लक्ष्मणः। पापं विना न दुःखम्। पुण्येन विना न सुखम्। भ्रातुर्विना कः सुखदायकोऽस्ति। इत्यादि॥

१२—हेतु शब्द और उस के योग में षष्ठी होती है। जैसे—भोजनस्य हेतोस्तिष्ठति भिक्षुः। पठनस्य हेतोर्गच्छामि इत्यादि॥

१३—उपरि अधि अधस् प्रति आदि के योग में द्वितीया होती है। जैसे। गृहमुपरि शेते। ग्राममधितिष्ठति। भूमिमधः पातालम्। कं प्रति वदति। मां प्रत्युक्तम्। इत्यादि॥

इत्युपपदविभक्तयः। समाप्तञ्च कारकप्रकरणम्

अथ समासप्रकरणम्

समास छः प्रकार का होता है। यथा अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि, कर्मधारय और द्विगु। इन में से द्विगु और कर्मधारय ये दोनों तत्पुरुष के अन्तर्गत होकर चार समास रहते हैं। उन में प्रथम—

अव्ययीभाव

अव्ययप्रकरण में अव्यय पढ़ आये हैं। विभक्ति, समीप, समृद्धि, व्यृद्धि, अर्थाभाव, अत्यय, असम्प्रति, शब्दप्रादुर्भाव, पश्चात्, यथा, आनुपूर्व्य, यौगपद्य, सादृश्य, सम्पत्ति, साकल्य और अन्तवचन; इन अर्थों वाला कोई अव्यय शब्द किसी सुबन्त के साथ जोड़ा जावे वह अव्ययीभाव समास* कहाता है। जैसे—१ विभक्ति के अर्थ में अधि अव्यय का हरि के साथ समास किया तो अधिहरि=हरि में। अधिहरि आदि अव्ययीभाव समास किये हुवे समस्त शब्द नपुंसक लिङ्ग और प्रथमा के एकवचनान्त ही रहते हैं। अधिस्त्रि=स्त्री में। अधिगृहम्=घर में। समीप—कृष्णस्य समीपे=उपकृष्णम्। उपकुम्भम्। इत्यादि। समृद्धि=धनस्य समृद्धिः=सुधनम्। सुरूपम्। सुलक्ष्म। इत्यादि। व्यृद्धि—यवनानां व्यृद्धिः=दुर्यवनम्। पापानां व्यृद्धिः=दुष्पापम् इत्यादि। अर्थाभाव—मक्षिकाणामभावः=निर्मक्षिकम्। धनस्याभावः=निर्धनम्। निर्जलम्। निर्विघ्नम्। निःशकटम्। निर्मनुजम्। निःपशु। निर्मनुष्यम् इत्यादि। अत्ययो नाशः—हिमस्याऽत्ययः=अतिहिमम्। निद्राया अत्ययः=अतिनिद्रम्। अतिक्षुधम् इत्यादि। असम्प्रति—निद्रा सम्प्रति न युज्यते=अतिनिद्रम् इत्यादि। शब्दप्रादुर्भाव—हरिशब्दस्य प्रादुर्भावः प्रकाशः=इतिहरि इत्यादि। पश्चात्—विष्णोः पश्चात्=अनुविष्णु। अनुशिवम्। यथा—यथा शब्द के ४ अर्थ हैं—योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति और सादृश्य। इन में से योग्यता—रूपस्य योग्यम्=अनुरूपम् इत्यादि। वीप्सा—अर्थमर्थं प्रति=प्रत्यर्थम्=अर्थ अर्थ के प्रति, हर एक अर्थ के प्रति इत्यादि। पदार्थानतिवृत्ति—किसी पदार्थ का उल्लङ्घन न करना। जैसे—शक्तिमनतिक्रम्य=यथाशक्ति=शक्ति के अनुसार वा शक्ति को न उल्लङ्घन करके इत्यादि। सादृश्य—ब्राह्मणस्य सादृश्यम्=यथाब्राह्मणमधीते शूद्रः=शूद्र ब्राह्मण के सदृश पढ़ता है इत्यादि। आनुपूर्व्य—ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण=अनुज्येष्ठम्=ज्येष्ठ (बड़े) के अनुक्रमपूर्वक इत्यादि॥ यौगपद्य=एक साथ जैसे—चक्रेण युगपत्=सचक्रम् भ्राम्यति पिपीलिका=कीड़ी

* अनेक पदों का एक पद बनाना समास कहाता है।

चक्र के साथ घूमती है इत्यादि । सादृश्य सदृशः सख्या=ससखि इत्यादि ॥ सम्पत्ति-क्षत्रियाणां सम्पत्तिः=सक्षत्रियम् इत्यादि । साकल्य- तृणमपरित्यज्य= सतृणम् भुङ्क्ते=तृण न निकाल कर खाता है अर्थात् सकल=सब खाता है । इत्यादि । अन्तवचन-न्यायपर्यन्तम्=सन्यायमधीते=न्याय तक पढ़ता है ॥

अव्ययीभाव समास में अकारान्त शब्द समास हो कर नपुंसकलिङ्ग प्रथमैकवचनान्त रहते हैं परन्तु तृतीया, पञ्चमी और सप्तमी के रूप भिन्न २ होते हैं। जैसे-३ उपकुम्भेन, ५ उपकुम्भात, ७ उपकुम्भे । इसी प्रकार अन्य शब्दों के भी रूप जानो ॥

संख्यावाचक शब्दों का नदीवाचक शब्दों के साथ समास होता है वह अव्ययीभाव समास कहाता है। जैसे पञ्च गङ्गाः=पञ्चगङ्गम्। द्वियमुनम् इत्यादि ॥

जब अव्ययीभाव समास में शरद् आदि शब्दों का अव्यय के साथ समास होता है तब शरद् आदि व्यञ्जनान्त शब्द टच् प्रत्ययान्त होकर अकारान्त बन जाते हैं। जैसे-शरदः समीपम्-उपशरदम्। विपाशं प्रति=प्रतिविपाशम्। विपाश् शब्द शकारान्त से अकारान्त होगया। यह एक नदी का नाम है। इत्यादि ॥

अव्ययीभाव में जरा शब्द को जरस् होजाता है । जरायाः समीपम्= उपजरसम् इत्यादि ॥

अव्ययीभाव में अन्नन्त शब्द भी टच् प्रत्यय होकर अकारान्त बनजाते हैं । राज्ञः समीपम्=उपराजम् । आत्मानमधिकृत्य=अध्यात्मम् इत्यादि ॥

परन्तु जो शब्द नपुंसकलिङ्ग नकारान्त हैं वे अव्ययीभाव में विकल्प से अकारान्त बनते हैं । जैसे चर्मन् शब्द नपुंसकलिङ्ग है उस का उप के साथ समास हुआ तो-चर्मणः समीपम्=उपचर्मम्, उपचर्म इत्यादि ॥

जिन शब्दों के अन्त में वर्गों के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ अक्षर हों, वे शब्द अव्ययीभाव में विकल्प से अकारान्त होजाते हैं। ककुभः समीपम्- उपककुप्, उपककुभम् । समिधः समीपम्=उपसमित्, उपसमिधम् । स्रजः समीपम्=उपस्रक्, उपस्रजम् । त्वचः समीपम्=उपत्वक्, उपत्वचम् इत्यादि ॥

इत्यव्ययीभावः

अथ तत्पुरुषः-

श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न, ये सुबन्त-द्वितीयान्त सुबन्त के साथ मिलाये जाते हैं तो तत्पुरुष समास होता है । परमा-

त्मानं श्रितः=परमात्मश्रितः। राम शब्द के तुल्य ७ विभक्तियां होंगी । ऐसे ही दुःखम् अतीतः=दुःखातीतः। इन्द्रियातीतः । कूपं पतितः=कूपपतितः । ग्रामं गतः=ग्रामगतः । दिशमत्यस्तः=दिगत्यस्तः । ग्रामं प्राप्तः=ग्रामप्राप्तः विपदमापन्नः=विपदापन्नः इत्यादि ॥

किसी ऐसे सुबन्त से तृतीयान्त का समास हो, जो उस तृतीयान्त से ही किया हुआ गुणवाचक हो तौ तत्पुरुष समास होता है। जैसे शङ्कुलया खण्डः=शङ्कुलाखण्डः । शङ्कुला=करोते से ही किया हुवा खण्ड=टुकड़ा जो गुणवाचक है, समास को प्राप्त हुवा । अतः यह तत्पुरुष समास कहाया ॥

तृतीयान्त सुबन्त, अर्थ सुबन्त के साथ समास पावे तौ तत्पुरुष होता है। पठनेन अर्थः=पठनार्थः। धान्यार्थः। भोजनार्थः ॥

कर्त्ता और करणकारक के सुबन्त (जोकि तृतीयान्त होते हैं, देखो कारक) कृदन्त सुबन्त के साथ मिलते हैं तौ तत्पुरुष समास होता है। जैसे-ईश्वरेण रक्षितः=ईश्वररक्षितः। यहां "ईश्वरेण" कर्त्ता है और "रक्षितः" यह उस का कर्म कृदन्त है । नखैर्विदारितः=नखविदारितः। यहां "नखैः" करण है और "विदारितः" कर्म कृदन्त है इत्यादि ॥

चतुर्थी विभक्त्यन्त सुबन्त तदर्थ, अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित सुबन्तों से मिले तौ तत्पुरुष होता है। तदर्थ-यूपाय दारु=यूपदारु । यूप= यज्ञस्तम्भ । द्विजार्थः सूपः। भूतेभ्योबलिः=भूतबलिः। गवे हितम्=गोहितम्। मनुष्येभ्यः सुखम्=मनुष्यसुखम् । गुरवे रक्षितम्=गुरुरक्षितम् इत्यादि ॥

पञ्चम्यन्त सुबन्त-भय सुबन्त से मिले तौ तत्पुरुष होता है । चोरात् भयम्=चोरभयम् इत्यादि ॥

पञ्चम्यन्त स्तोक, अन्तिक, दूर और दूरार्थवाचक तथा कृच्छ्र सुबन्त— क्तप्रत्ययान्त सुबन्त के साथ मिलें तौ तत्पुरुष होता है और पञ्चमी विभक्ति एक पद होने पर भी बीच में बनी रहती है। जैसे-स्तोकात् आगतः=स्तोका- दागतः। अन्तिकादागतः। अभ्यासादागतः। दूरादागतः। कृच्छ्रान्मुक्तः इत्यादि ॥

षष्ठ्यन्त सुबन्त किसी सुबन्त से मिले तौ तत्पुरुष होता है । राज्ञः मन्त्री=राजमन्त्री। इत्यादि ॥

पूर्व अपर अधर उत्तर ये सुबन्त जब कि अवयववाचक हों और अवयवी के साथ मिलें तौ तत्पुरुष समास होता है। यदि अवयव अवयवी में जुड़ा हो (एक ही अधिकरण हो) जैसे-पूर्वं कायस्य=पूर्वकायः। यहां पर काय अवयवी और पूर्व उस का अवयव है और दोनों अर्थात् काय (अवयवी) और पूर्व

(अवयव) इकट्ठे हैं । ऐसे ही अपरकायः । अधरकायः । उत्तरकायः इत्यादि । यदि एकाधिकरण न कहते तो, पूर्वः छात्राणाम् । यहां भी समास हो जाता ॥

अर्ध सुबन्त (आधे का वाचक) सुबन्त से नपुंसक लिङ्ग में मिले तो तत्पुरुष होता है । अर्धं पिप्पल्याः=अर्धपिप्पली इत्यादि ॥

सप्तम्यन्त सुबन्त शौण्डादि सुबन्तों से मिले तो तत्पुरुष होता है । अक्षेषु शौण्डः=अक्षशौण्डः । द्यूते निपुणः=द्यूतनिपुणः इत्यादि ॥

दिशा और संख्या के वाचक सुबन्त, समानाधिकरण सुबन्त से मिलें और मिलकर कोई संज्ञा बने तो तत्पुरुष समास होता है । पूर्वः इषुकामशमी=पूर्वेषुकामशमी=पूर्वला इषुकामशमी (ग्राम विशेष) । सप्त ऋषयः=सप्तर्षयः इत्यादि । जहां संज्ञा नहीं वहां समास नहीं होता । जैसे—पञ्च ब्राह्मणाः । उत्तराः वृक्षाः इत्यादि ॥

तद्धितार्थ का विषय हो, उत्तर पद परे हो वा समाहार वाच्य हो तो दिशा और संख्या के वाचक शब्द समास को प्राप्त हों और वह तत्पुरुष समास हो । तद्धित का अर्थ स्पष्ट करके तद्धितप्रकरण में जाना जायगा, तथापि भाव (होने) आदि अर्थों में जो प्रातिपदिकों से आगे प्रत्यय लगाये जाते हैं, वे तद्धित कहाते हैं । तद्धितार्थ—पूर्वस्यां शालायां भवः=पौर्वशालः । पञ्च गावो धनं यस्य=पञ्चगवधनः ॥

समानाधिकरणों का जो तत्पुरुष वह कर्मधारय समास कहाता है । एक ही अर्थ को जो शब्द कहें वे समानाधिकरण कहाते हैं । जैसे—रक्ता लता=रक्तलता । वृद्धः पुरुषः=वृद्धपुरुषः इत्यादि ॥

जिस तत्पुरुष में पूर्व पद संख्यावाचक हो वह "द्विगु" कहाता है । द्वौ गावौ समाहृतौ=द्विगवम् । पञ्चगवम् इत्यादि ॥

उपमानवाचक सुबन्त, सामान्य सुबन्तों से मिले तो कर्मधारय समास होता है । घन इव श्यामः=घनश्यामः इत्यादि ॥

शाकपार्थिवादि शब्दों में मध्यम पद का लोप हो जाता है । शाकप्रियः पार्थिवः=शाकपार्थिवः । देवप्रियः ब्राह्मणः=देवब्राह्मणः इत्यादि ॥

न (ञ्) का सुबन्त के साथ समास हो । न ब्राह्मणः=अब्राह्मणः । न शुभम्=अशुभम् । न अश्वः=अनश्वः । न उत्तमः=अनुत्तमः इत्यादि ॥

कु आदि भी, सुबन्तों के साथ नित्य समस्त होते हैं । कु पुरुषः=कापुरुषः, कुपुरुषः । सु पुरुषः=सुपुरुषः । दुः पुरुषः=दुष्पुरुषः । प्र मादः—प्रमादः । ऊरी कृत्य=ऊरीकृत्य इत्यादि ॥

अति आदि शब्द, द्वितीयान्त सुबन्तों के साथ समास को प्राप्त होते हैं क्रान्तादि अर्थों में। अतिक्रान्तो मालाम्=अतिमालः इत्यादि॥

अवादि उपसर्ग, तृतीयान्त सुबन्तों के साथ समास को प्राप्त हों क्रुष्टादि अर्थों में। अवक्रुष्टः कोकिलया=अवकोकिलः। कोयल से बुलाया गया। इत्यादि॥

परि आदि उपसर्ग, चतुर्थ्यन्त सुबन्तों से समास को प्राप्त हों, ग्लानादि अर्थों में। अध्ययनाय परिग्लानः=पर्यध्ययनः॥

निर् आदि उपसर्ग क्रान्तादि अर्थों में पञ्चम्यन्त सुबन्त के साथ समास को प्राप्त हों। मथुरायाः निष्क्रान्तः=निर्मथुरः॥

कृदन्त के साथ उन के उपपदों का समास होता है। जैसे-कुम्भं करोति=कुम्भकारः। भारं वहति=भारवाट्॥

जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद संख्यावाचक और अव्यय हों, तथा उत्तरपद अङ्गुलि हो तो समासान्त अ (च्) प्रत्यय लगाते हैं। द्वे अङ्गुली प्रमाणमस्य=द्व्यङ्गुलम्। निर्गतमङ्गुलिभ्यः=निरङ्गुलम् इत्यादि॥

जब अहन् शब्द का रात्रि के साथ द्वन्द्व समास हो (जिसे आगे कहेंगे) तथा सर्व, एकदेशवाचक, संख्यात और पुण्य शब्दों से आगे रात्रि शब्द का समास हो तब समासान्त अच् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-अहश्च रात्रिश्च=अहोरात्रः। सर्वा रात्रिः=सर्वरात्रः। पूर्वं रात्रेः=पूर्वरात्रः। यहां पूर्व शब्द रात्रि के एक देश का वाचक है। संख्याताः रात्रयः=संख्यातरात्राः। पुण्यरात्रः॥

जिस रात्रि के पूर्व संख्यावाचक शब्द हो वह नपुंसक लिङ्ग होता है। जैसे-द्वे रात्री=द्विरात्रम्। तिस्रः रात्रयः=त्रिरात्रम्। पञ्चरात्रम् इत्यादि॥

राजन्, अहन् और सखि शब्द जिन से आगे हों उन का तत्पुरुष टच् (अ) प्रत्ययान्त होता है। राज्ञां परमः=परमराजः। महान् राजा=महाराजः। देवदत्तस्य सखा=देवदत्तसखः। अहस्सु द्वादशः=द्वादशाहः इत्यादि॥

अथ बहुव्रीहिः—

अन्य पद का अर्थ जिस में पाया जाय वह बहुव्रीहि समास अनेक सुबन्तों के साथ होता है। जैसे-कण्ठे कालो यस्य सः=कण्ठेकालः। त्वचि सारो यस्य सः=त्वचिसारः। प्राप्तम् उदकं यं सः=प्राप्तोदकः। ऊढो रथो येन सः=ऊढरथो वृषभः। उद्धृतम् ओदनं यस्याः सा=उद्धृतौदना स्थाली। पीतम् अम्बरं यस्य सः=पीताम्बरः। वीराः पुरुषा यस्मिन् सः=वीरपुरुषकः। प्रपतितानि पर्णानि यस्य सः=प्रपर्णः। न पुत्रो यस्य सः=अपुत्रः। चित्राः गावो यस्य

सः=चित्रगुः । रूपवती भार्या यस्य सः=रूपवद्भार्यः । वामोरूः भार्या यस्य सः=वामोरूभार्यः । कल्याणी पञ्चमी यासां ताः=कल्याणीपञ्चमाः । स्त्री प्रमाणी यस्य सः=स्त्रीप्रमाणः । कल्याणी प्रिया यस्य सः=कल्याणीप्रियः । दीर्घे सक्थिनी यस्य सः=दीर्घसक्थः । कमले इव अक्षिणी यस्य सः=कमलाक्षः । जलजाक्षः । स्वक्षः । दुरक्षः । द्व्यक्षः । चतुरक्षः । दीर्घे सक्थिनी यस्य तत्= दीर्घसक्थि । यह प्रयोग जड़ पदार्थों की वाच्यता में होता है । स्थूले अक्षिणी यस्यां सा=स्थूलाक्षा यष्टिः । द्वौ मूर्द्धानौ यस्य सः=द्विमूर्द्धः । त्रिमूर्द्धः । अन्तः लोमानि यस्य सः=अन्तर्लोमः । बहिर्लोमः । व्याघ्रस्य पादौ इव पादौ यस्य सः=व्याघ्रपात् । द्वौ पादौ यस्य सः=द्विपात् । चतुष्पात् । सु (शोभनौ) पादौ यस्य सः=सुपात् । उत् (उच्चैः) काकुद् यस्य सः=उत्काकुत् । विकाकुत् । पूर्णकाकुत्, पूर्णकाकुदः । सु (शोभनं) हृदयं यस्य सः=सुहृद् । दुर्हृद् । व्यूढम् उरो यस्य सः=व्यूढोरस्कः । विशालोरस्कः । स्थूलोरस्कः । दृढोरस्कः । प्रियं सर्पिः यस्य सः=प्रियसर्पिष्कः । युक्तः योगः येन सः=युक्तयोगः । महत् यशो यस्य सः=महायशस्कः, महायशाः इत्यादि ॥

—:*:—

अथ द्वन्द्वः

च के अर्थ में सुबन्तों का सुबन्तों के साथ द्वन्द्व समास होता है । जैसे—वटश्च पिप्पलश्च=वटपिप्पलौ । धर्मश्च अर्थश्च=धर्मार्थौ । अर्थधर्मौ । हरिश्च हरश्च=हरिहरौ । ईशविष्णू । इन्द्राबृहस्पती । इन्द्रावरुणौ । इन्द्राग्नी । सूर्याचन्द्रमसौ । शिवकेशवौ । मातापितरौ । पितरौ । पाणी च पादौ च=पाणिपादम् । मार्दङ्गिकपाणविकम् । रथिकाश्वारोहम् । वाक् च त्वक् च=वाक्त्वचम् । त्वक्स्रजम् । शमीदृषदम् । छत्रोपानहम् । प्रावृट्शरदौ इत्यादि ॥

इति समासप्रकरणम्

—*—

अथ तद्धितप्रकरणम्

१ अश्वपत्यादि प्रातिपदिकों से अपत्यादि अर्थों में अण् आदि प्रत्यय होते हैं । जैसे—अश्वपतेः अपत्यम्=आश्वपतम् । गणपतेः अपत्यम्=गाणपतम् । दितेः अपत्यम्=दैत्यः । अदितेः अपत्यम्=आदित्यः । प्रजापतेः अपत्यम्=प्राजापत्यः । देवस्यापत्यम्=दैव्यम्, दैवम् । बहिः भवम्=बाह्यम्, बाहीकम् । गोः अप-

त्यम्=गव्यम् । उरसस्यापत्यम्=औरसः । स्त्रिया अपत्यम्=स्त्रै
त्यम्=पौंस्नः । उपगोः अपत्यम्=औपगवः ॥

अपत्य नाम संतान का है, परन्तु पुत्र पुत्री तक अपत्य कहाते हैं, के पश्चात् पौत्रप्रपौत्रादि जो सन्तान हैं, उन को गोत्र कहते हैं । उपगोः गोत्रम्=औपगवः । गर्गस्य गोत्रम्=गार्ग्यः गार्ग्यौ गर्गाः । गार्ग्यम् गार्ग्यौ गर्गान् इत्यादि । बहुवचन में प्रत्यय नहीं रहता परन्तु उस का अर्थ रहता है । वत्सस्यापत्यम् गोत्रम् वा=वात्स्यः इत्यादि ॥

जो सन्तान पूर्वज के जीवन काल में सम्भव हो वह युवापत्य कहाती है । गर्गस्य युवापत्यं गार्ग्यायणः । दक्षस्य युवापत्यम्=दाक्षायणः । दक्षस्यापत्यम्–दाक्षिः । बहोरपत्यम्=बाहवः । उडुलोम्नः अपत्यम्–औडुलोमिः । विदस्य गोत्रम्=वैदः । पुत्रस्यापत्यम्=पौत्रः । दुहितुः अपत्यम्=दौहित्रः । शिवस्यापत्यम्=शैवः । गङ्गायाः अपत्यम्=गाङ्गः । वसिष्ठ–वासिष्ठः । वैश्वामित्रः । श्वफल्क–श्वाफल्कः । वसुदेव–वासुदेवः । नकुल–नाकुलः । सहदेव–साहदेवः । द्वयोः मात्रोः अपत्यम्=द्वैमातुरः । षष्–मातृ–षाण्मातुरः । सम्–मातृ–सांमातुरः । भद्र मातृ–भाद्रमातुरः । विनता–वैनतेयः । कन्या–कानीनः । राज्ञः जातिः=राजन्यः । श्वशुर–श्वाशुर्यः । क्षत्र–क्षत्रियः । रेवती=रैवतिकः । पञ्चाल–पाञ्चालः । पञ्चलानां राजा–पाञ्चालः । पूरोः राजा अपत्यं वा=पौरवः । पाण्डोः राजा=पाण्ड्यः । कुरोः राजा=कौरव्यः । निषधस्य राजा=नैषध्यः । स्त्रीलिङ्गों को छोड़ कर बहुवचन में राजा अर्थ में हुवे प्रत्यय का लोप कर शब्द का पूर्वस्वरूप ही रह जाता है । जैसे पाञ्चालः पाञ्चालौ पञ्चालाः कौरव्यः कौरव्यौ कुरवः । नैषध्यः नैषध्यौ निषधाः इत्यादि ॥

कम्बोज शब्द से सर्वत्र ही राजार्थक प्रत्यय नहीं रहता परन्तु उस अर्थ रहता है । कम्बोजस्य राजा=कम्बोजः कम्बोजौ कम्बोजाः । इत्या

जिन २ शब्दों से ऊपर जो २ प्रत्यय कहे हैं वे २ प्रत्यय अपत्य (सन्त अर्थ के अतिरिक्त भव आदि अन्य अर्थों में भी जानने चाहियें । जैसे–म माथुरः । यह रूप, मथुरायां भवः=माथुरः=मथुरा में जो होवे वह माथ मथुराया आगतः=माथुरः=मथुरा से जो आया वह माथुर । मथुरायां जा माथुरः=मथुरा में जो जन्मा वह माथुर । इसी प्रकार अन्य प्रातिपदि यथासम्भव अन्य अर्थों में प्रत्यय की कल्पना करनी चाहिये ॥

में प्रातिपदिक से त वा त्व प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-ब्राह्मणस्य ब्राह्मणता, ब्राह्मणत्वम्=ब्राह्मणपना। दरिद्रस्य भावः=दरिद्रता, त्वम्=दरिद्रपना। गुरोर्भावः=गुरुता, गुरुत्वम्=गुरुपना। इसी प्रकार भुता, प्रभुत्वम्। दीनता, दीनत्वम्। लघुता, लघुत्वम्। पशुता, पशुत्वम्। चतुरता, चतुरत्वम्। दुष्टता, दुष्टत्वम्। धीरता, धीरत्वम् इत्यादि॥

"वह जिस का वा जिस में वा जिस के पास है" ऐसे अर्थ में किन्हीं प्रातिपादिकों से वतु, किन्हीं से मतु और इन् प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे धन जिस के पास है वह-धनवान्। धनिन्=धनी। गुणवान्। गुणी। ज्ञानवान्। ज्ञानी। अग्निमान्। बुद्धिमान्। रूपवान्। शीलवान्। श्रीमान्। लक्ष्मीवान्। धीमान्। दण्डी। चक्री। हली इत्यादि॥

इसी अर्थ में असन्तों तथा माया, मेधा और स्रज् प्रातिपदिकों से विन् प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-असन्त-यशस्-यशस्वी। तेजस्वी। मनस्वी। तपस्वी। मायावी। मेधावी। स्रग्वी इत्यादि॥

अतिशयार्थ में प्रातिपदिक से आगे तर वा तम प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-अतिशयितः स्थूलः=स्थूलतरः। स्थूलतमः=अतिस्थूल। ऐसे ही-दृढतरः। दृढतमः। चतुरतरः। चतुरतमः। मूर्खतरः। मूर्खतमः। श्रेष्ठतरः। श्रेष्ठतमः। इत्यादि॥

"जिस से जो बना है" इस अर्थ में मय प्रत्यय लगाते हैं। मृत् से जो ना है वह-मृण्मयः। सुवर्ण से जो बना है वह सुवर्णमयः। लोहमयः। तमयः। जलमयः। शोकमयः। बुद्धिमयः। धनमयः। तेजोमयः। माया-। छलमयः इत्यादि॥

प्रकार अर्थ में धा और था प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-एकधा=एकप्रकार। । त्रिधा। चतुर्धा। पञ्चधा। षोढा। सप्तधा। अष्टधा। नवधा। ॥ अन्यथा=अन्य प्रकार। सर्वथा। इतरथा। उभयथा। यथा तथा ; । ये शब्द अव्यय हो जाते हैं॥

ल्य अर्थ में वत् प्रत्यय लगाते हैं यदि क्रिया में तुल्यता हो। जैसे-के तुल्य क्रिया=ब्राह्मणवत्। क्षत्रियवत्। मूर्खवत्। पण्डितवत्। पुत्रवत्। त्। गुरुवत्। मातृवत्। पितृवत्। चन्द्रवत्। सूर्यवत्। दुर्बलवत्। त्। दुष्टवत्। सुहृद्वत्। मित्रवत् इत्यादि॥

द्धित प्रकरण भी कृदन्त के समान बड़ा प्रकरण है और सुगम है, इस

लिये इस को भी विशेष न लिख कर यहीं समाप्त करते हैं।
बने हुवे व्याकरणपुस्तकों द्वारा स्वयं पढ़ लेना कठिन नहीं है॥

इति तद्धितप्रकरणम्

—:※:—

अथ स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम्

१—जब किसी अकारान्त शब्द को स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं तो उस के आगे आ प्रत्यय लगाते हैं। जैसे-सर्व-सर्वा। गङ्ग-गङ्गा। देवत-देवता इत्यादि॥

२-पचत् आदि कई एक शब्दों के स्त्रीलिङ्ग बनाने में ई (प्रत्यय) लगाया जाता है। जैसेः—पचत-पचती। भवत्-भवती। इत्यादि॥

३-और भी कई प्रकार के अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने में ई (प्रत्यय) लगाया जाता है। जैसेः—कुरुचर-कुरुचरी। नद—नदी। देव-देवी। सौपर्णेय—सौपर्णेयी। ऊरुद्वयस्-ऊरुद्वयसी। ऊरुदघ्न-ऊरुदघ्नी। ऊरुमात्र—ऊरुमात्री। पञ्चतय—पञ्चतयी। आक्षिक-आक्षिकी। प्रास्थिक-प्रास्थिकी। लावणिक-लावणिकी। यादृश-यादृशी। गत्वर—गत्वरी। इत्वर—इत्वरी इत्यादि॥

४—कई शब्दों का यकार लुप्त हो जाता है, जब कि ई (प्रत्यय) परे हो। जैसे—गार्ग्य-गार्गी॥

५—जब दो पदों के समास में पूर्वपद संख्यावाचक हो ऐसे तत्पुरुष में भी ई (प्रत्यय) लगाते हैं। जैसेः-त्रिलोक-त्रिलोकी इत्यादि॥

६ वर्ण (रंग) वाचक शब्द के अन्त्यवर्ण से पूर्व वर्ण त हो तो 'त' को 'न' कर देते हैं और ई (प्रत्यय) लगाते हैं तथा कभी ई नहीं लगाते त त को न भी नहीं करते। जैसेः-एत-एनी, एता। हरित-हरिणी, हरित रोहित-रोहिणी, रोहिता इत्यादि॥

७-गुणवाचक उकारान्त शब्दों से भी स्त्रीलिङ्ग बनाने में विकल्प ई लगाते हैं। जैसेः-मृदु-मृद्वी, मृदुः। पटु-पट्वी, पटुः॥

८-बहु आदि शब्दों से भी उक्त कार्य होता है। जैसेः—बहु—बह्वी, बहु

९-रात्रि आदि से भी विकल्प से ई लगाते हैं। जैसेः-रात्रिः, रात्री

१०-पुरुषवाचक को उसी की स्त्री बनाने में ई प्रत्यय लगाते हैं। जैसे ब्राह्मण-ब्राह्मणी। गोप-गोपी इत्यादि॥

. शब्द अन्त में हो तब ई नहीं किन्तु का लगाते हैं। जैसेः-
...लक-गोपालिका। अश्वपालिका (देखो १२) इत्यादि॥

१२-जिन शब्दों में तद्धितादि प्रत्यय का ककार हो और फिर स्त्रीलिङ्ग बनाये जावें तो क से पूर्व अ को इ कर देते हैं। जैसेः-कारक-कारिका पाचक-पाचिका। पाठिका। गोपालिका इत्यादि॥

१३-सूर्य और अगस्त्य के य का लोप करके स्त्रीलिङ्ग में ई लगाते हैं। जैसेः-सूर्य-सूरी। अगस्त्य-अगस्ती॥

१४-इन्द्रादि कई शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने में आनी (प्रत्यय) लगाते हैं। जैसेः-इन्द्र-इन्द्राणी। वरुण-वरुणानी। भव-भवानी। रुद्र-रुद्राणी। शर्व-शर्वाणी। मृड-मृडानी। हिम-हिमानी *। अरण्य-अरण्यानी *। ‡यव-यवानी। यवन-यवनानी§। मातुल-मातुलानी। आचार्य-आचार्याणी॥

१५-मातुल और उपाध्याय से मातुली और उपाध्यायी भी होते हैं॥

१६-आचार्य से आचार्या भी बोलते हैं॥

१७-अर्य से अर्याणी वा अर्या॥

१८-क्षत्रिय से क्षत्रियाणी वा क्षत्रिया॥

१९-चन्द्रमुख से चन्द्रमुखी। चन्द्रमुखा। सुशिख से सुशिखा। कल्याणक्रोड से कल्याणक्रोडा। सुजघन से सुजघना इत्यादि॥

२०-शूर्पणख से शूर्पणखा। गौरमुख से गौरमुखा। ताम्रमुख से ताम्रमुखी॥

२१-तट से तटी। वृषल से वृषली। बह्वृच् से बह्वृची। मुण्ड से मुण्डा। ...लक से बालिका॥

२२-गवय से गवयी। हय से हयी। मत्स्य से मत्सी। मनुष्य से ...षी इत्यादि॥

२३-पङ्गु से पङ्गूः। कुरु से कुरूः। श्वशुर से श्वश्रूः। करभोरु से करभोरूः। ...रूः। वामोरूः। लक्षणोरूः॥

२४-नृ और नर से नारी। इत्यादि॥

२५-युवन् से युवतिः॥ ये संक्षेप से स्त्रीप्रत्यय हैं॥

...ति तुलसीराम-शर्म-विरचितं चतुर्थं पुस्तकम् समाप्तम्

* इन का स्त्री नहीं, किन्तु बहुतायत अर्थ है। ‡ इस का दुष्ट अर्थ है। यवानी=बुरे जौ। § इस का स्त्री नहीं किन्तु लिखना अर्थ है। यवनानी=यवनों का लेख॥